RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2021
Despatch Date - 02 April 2020

अंक – 9 (मासिक) वर्ष – 15 अप्रैल 2020 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

महिला शक्ति राष्ट्र भक्ति

शीघ्र प्रकाशित
वैवाहिक डायरेक्टी
श्री माहेश्वरी मेलापक 2019

Visit us @ www.srimaheshwaritimes.com

देखें प्रति मंगलवार
SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

RR KĀBEL
MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME
SUPEREX FR
FIREX LSOH
UNILAY HR FR
FLAMEX FR-LSH
DO THE
AKALMAND
THING!
RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP
R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • F : +91 - 22 - 2491 2586 • E : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • F : +91 - 265 - 2321 894 • E : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका
श्री माहेश्वरी टाईम्स
RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-10 अप्रैल, 2020 वर्ष-15

प्रेरणास्त्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)
श्री रामकुमार टावरी (नईदिल्ली)

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

अतिथि सम्पादक
सुमिता मूंदड़ा, मालेगांव (महाराष्ट्र)

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
सॉंवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

- श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- PNB A/c. No. : 0459002100043471
  IFSC- PUNB0045900
- ICICI A/c. No. : 030005001198
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

विनम्र अनुरोध

वर्तमान में सम्पूर्ण देश ही नहीं बल्कि विश्व कोरोना की महामारी से जूझ रहा है। इससे बचाव के लिये सभी लॉकडाऊन का पालन करते हुऐ घर की चारदीवारी में रहने के लिये विवश हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स हमेशा ही समय पर आपको प्राप्त होती रही है, लेकिन इस बार 'अप्रेल अंक - महिला विशेषांक' इन परिस्थितिजन्य समस्याओं के कारण देर से प्रकाशित हो पाया, इसके लिये हमें खेद है। परिस्थितिवश व पाठकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इसका प्रकाशन प्रिंटेड रूप की बजाय 'ई- मैग्जिन' के रूप में ही हो रहा है। आगामी मई अंक का प्रकाशन भी 'ई - मैग्जिन के रूप में ही हो सकेगा। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार अपने सम्मानीय पाठकों से इसमें होने वाली असुविधा के लिये क्षमा प्रार्थी है। साथ ही विनम्र अनुरोध है कि आप वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सहयोग प्रदान करेंगे।

विचार क्रान्ति

महाभारत में स्त्रीधर्म

महाभारत के अनुशासन पर्व में एक बहुत ही रोचक उमा-महेश्वर संवाद है। इसकी खूबी यह कि पाँच मुख्य सहित 17 उप अध्यायों में देवी पार्वती के प्रश्न और भगवान शिव के उत्तर हैं, मगर अंतिम छँटे मुख्य अध्याय में प्रश्न शिवजी का है और उत्तर पार्वतीजी दे रही है। अद्भुत है कि प्रारंभिक अध्याय से लेकर कोई 22 अध्यायों तक वर्णाश्रम, शुभाशुभ कर्म, योनि, लोक, आहार, दान से लेकर राजधर्म, मोक्षधर्म, योगधर्म तक भगवान अपनी पत्नी की जिज्ञासाओं के सुंदर समाधान सुना देते हैं, मगर स्त्रीधर्म की बात आते ही वक्ता से जिज्ञासु श्रोता बन जाते हैं।

शिवजी कहते हैं, 'हे देवी! नारी की कही गई बातों को ही नारी समाज अधिक महत्व देता है। स्त्रियाँ पुरुषों की कही बातों को अधिक महत्व नहीं देती। स्त्रियाँ ही स्त्रियों की परम गति है। संसार में भूतल पर यह बात सदा से प्रचलित है। अतः स्त्रीधर्म क्या है, यह तुम्हीं मुझे समझाओ।'

मात्र 61 श्लोकों वाले इस अंतिम अध्याय के इस प्रसंग की दो बड़ी सीख हैं। पहली जब सर्वसमर्थ और सर्वज्ञानी शिवजी 'स्त्रीधर्म' पर प्रश्न करते हैं तब देवी मुस्कुरा कर कहती है 'प्रभवन् योएनहंवादी स वै पुरुष उच्यते।' अर्थात जो समर्थ होकर भी अहंकार शून्य हो, वही पुरुष कहलाता है। हे महादेव! आप भी ऐसे ही हैं, अतः सब जानते हुए भी मुझसे 'प्रश्न' कर रहे हैं। आशय है स्त्री को मान दे रहे हैं। अतः पहली सीख स्त्री को मान देने वाला ही 'समर्थ पुरुष' है।

दूसरी सीख, जब शिवजी ने प्रश्न किया तब देवी ने तत्काल 'ज्ञान' वर्षा शुरू नहीं की। वे बोली, 'हे देव! मैं पवित्र नदियों से स्त्रीधर्म के बारे में कुछ सलाह करके ही कुछ कहूँगी। इसलिए कि पृथ्वी या स्वर्ग पर मैं कभी ऐसा कोई विज्ञान नहीं देखती जो अकेले ही, बगैर दूसरों के सहयोग से स्वयं सिद्ध हुआ हो। इसलिए नदियों से सलाह उचित है। सीख यह कि अनेक लोगों से सलाह के बाद किया गया कार्य ही सफल होता है।

तब कथा के अनुसार पार्वतीजी ने गङ्गा, व्यास, झेलम, शतलज, यमुना, नर्मदा, कावेरी आदि नदियों से स्त्रीधर्म के बारे में पूछा। इस पर नदियां धन्य हो उठी। सभी की ओर से गङ्गा ने कहा, 'हे देवी! आप सभी धर्मों का मर्म जानती है। यह तो आपकी कृपा है, जो हमें मान देने के लिए हमसे पूछ रही है। अब कृपया स्वयं ही स्त्रीधर्म का उपदेश देकर सभी को कृतार्थ कीजिए।

और तब कुल 26 श्लोकों में देवी ने स्त्रीधर्म का मर्म शिवजी तथा उपस्थित नदियों, ऋषियों व भूतों आदि के समक्ष कह सुनाया। बोली, 'जो पतिव्रता होकर सास-ससुर की सेवा करती तथा अपने माता-पिता के प्रति भी सदा भक्ति भाव रखती हो, वहीं स्त्री तपस्या धन से सम्पन्न मानी गई है। जो पति को प्रतिदिन मर्यादा का बोध कराने वाली और काम की थकावट से खिन्न पति को पुत्र के समान सांत्वना देने वाली हो, वही स्त्रीधर्म के पालन का फल पाती है। और अंत में कहा-

पतिप्रसादः स्वर्गो वा तुल्यो नार्या न वा भवेत्।
अहं स्वर्गं न हीच्छेयं त्वय्यप्रीते महेश्वरे॥

अर्थात एक ओर पति की प्रसन्नता और दूसरी ओर स्वर्ग-ये दोनों नारी की दृष्टि में समान हो सकते हैं या नहीं, इसमें संदेह है। मगर मेरे प्राणनाथ महेश्वर! मैं तो आपको अप्रसन्न रखकर स्वर्ग को नहीं चाहती।'

• डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

सृष्टि की पालनहार है नारी

भारतीय संस्कृति में नारी को मातृ रूप में पूज्य माना गया है, क्योंकि उसमें विशेष रूप से सृष्टि की उत्पत्तिकर्त्ता के साथ सृष्टि के पालन की भी विशिष्ट क्षमता विद्यमान है। नारी ही माँ के रूप में सृष्टि की भावी - पीढ़ी को जन्म देती है, तो वही उसकी वर्तमान पीढ़ी की एक पालनहार के रूप में देखभाल भी करती है। जब कोई विशिष्ट संकट आता है तो नारी साहस का वह अद्वितीय प्रतिमान भी रखती है, जो किसी पुरूष के लिये भी सम्भव नहीं होता। विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन करने में वह कभी पीछे नहीं रहती। नारी की इन्हीं विशिष्ट भूमिकाओं के दर्शन ही हमारी 'नव दुर्गा' के स्वरूप में होते हैं। विश्व को नारी का यह विशिष्ट रूप भारतीय संस्कृति ने ही दिखाया है।

वर्तमान दौर में सम्पूर्ण विश्व 'कोरोना महामारी, कोविड-19' से जूझ रहा है। यह महामारी कितनी भयानक और जानलेवा है, इससे शायद ही अब कोई अपरिचित रहा होगा। यह ऐसी महामारी है, जिसका अभी तक न तो कोई निर्धारित उपचार है और न ही इससे बचाव का कोई टीका। इससे संक्रमित रोगी के संपर्क में जो भी आ जाता है, वह स्वयं संक्रमित हुऐ बिना नहीं रहता। यही कारण है कि इससे संक्रमित होने वालों में वे लोग भी शामिल हैं, जो चिकित्सा सेवा से सम्बद्ध हैं। इस महामारी के दौर ने फिर सिद्ध कर दिखाया है कि भारत में नारी को क्यों पूजा जाता है। कारण है इस विकट स्थिति में भी नारी का मानवता की सेवा के प्रति समर्पण। वैसे तो पुरूष भी इस संकट के दौर में अपना योगदान देने में पीछे नहीं हैं। फिर भी यदि महिला चिकित्सकों व नर्सों के समर्पण को देखा जाऐ, तो कहीं न कहीं उनकी पालनहार वाली ऐसी छवि अवश्य दृष्टिगोचर होती है, जिसके सामने हर कोई नतमस्तक हो ही जाता है।

हम अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं कि हमें भी 'महिला विशेषांक' के रूप में ऐसे ही दौर में समाज की नारी शक्ति को प्रतिष्ठित करने का सुअवसर मिला है। कोरोना महामारी के इस विकट दौर में इस विशेषांक का प्रकाशन वास्तव में एक अत्यंत बड़ी चुनौती था, लेकिन हमने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए इसमें ऐसी कई नारी शक्ति के प्रेरक व्यक्तित्व की जानकारी देने की कोशिश की है, जो भावी पीढ़ी के लिये मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। वैसे तो माहेश्वरी नारी शक्ति ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से हर क्षेत्र में अपनी सफलता के ध्वज फहराये हैं, लेकिन फिर भी उसकी नारी सम्मत 'पालनहार' वाली छवि कभी धूमिल नहीं हुई। बल्कि वह जिस क्षेत्र में भी रही उसमें अपनी क्षमताओं से मानवता की सेवा करने में भी पीछे नहीं रही। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार इन सभी नारी शक्ति व उनके योगदानों को प्रणाम करता है।

कोरोना से इस महायुद्ध की शुरूआत हमने चेत्र नवरात्रि से की थी और अब हम भगवान श्री परशुराम जन्मदिवस अक्षय तृतीया को अपने - अपने घर पर रहकर मनाने के साथ इस महामारी के पराभव का संकल्प लेते हैं। इस महामारी के दौर में लॉकडाऊन के कारण हम ही नहीं बल्कि पूरा देश अपने घर की चारदीवारी में कैद है। अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि ऐसे विशिष्ट दौर में अ. भा. माहेश्वरी महिला संगठन ही नहीं बल्कि समाज के कई संगठन देश व मानवता की सेवा में अपने - अपने स्तर पर योगदान देने में आगे आऐ हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार उन सभी की सेवाओं को नमन करता है। अंत में नवसंवत की शुभकामनाऐं देते हुए यह अंक आपको समर्पित है। इसमें समसामयिक जानकारी देने के साथ ही ऐसे कई आलेखों को भी समाहित करने का प्रयास किया गया है, जो आपके लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकें। अतः यह अंक आपको कैसा लगा, यह बताना भी न भूलें।

जय महेश!

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

एक प्रतिष्ठित लेखिका व कवयित्री के रूप में अपनी पहचान रखने वाली मालेगांव निवासी श्रीमती सुमिता मूंधड़ा का जन्म 21 अक्टूबर 1976 को श्रीमती सरोज व श्री श्यामसुंदर लड्ढा (सुजानगढ़-कलकत्ता) के यहां हुआ। कॉमर्स में ग्रेजुएट की शिक्षा पूरी होते-होते ही इनका विवाह श्री राजकुमार मूंधड़ा, सुपुत्र श्रीकांता-रमेशचंद्र मूंधड़ा (सुजानगढ़-मालेगांव) के साथ हो गया। बचपन से ही गद्य और पद्य लेखन का शौक रहा। लायंस क्लब द्वारा वूमन ऑफ द ईयर (2018), मालेगांव माहेश्वरी समाज द्वारा साहित्य-रत्न सम्मान (2018), नाशिक जिल्हास्तरिय तुलसीदास सम्मान (2019), इंटरनेशनल माहेश्वरी कपल क्लब ऑफ इंडिया द्वारा माहेश्वरी वूमन ऑफ वर्थ (2019) सम्मान मिला है। इनका लेखन स्थानीय, जिला स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न लेखन-काव्य प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत हुआ है। विभिन्न साहित्यिक मंचो द्वारा अब तक 70 से अधिक बार सम्मान-पत्र से सम्मानित हुई है। पहली बार 1992 में कक्षा दसवीं में अपने विद्यालय की पत्रिका का सम्पादन कार्य किया। पिछले तीन वर्षों से लायंस क्लब के त्रैमासिक समाचार-पत्रकों का संपादन एवं 2020 में लायंस की रीजन पत्रिका का संपादन किया है। 2017 से श्री माहेश्वरी टाइम्स पत्रिका में मत-सम्मत स्तम्भ प्रभारी के रुप में सतत सेवा दे रही हैं। 2018 में महेश-नवमीं पर इनकी पहली एकल काव्य पुस्तक 'मेरी कलम से-मेरी कवितायें' का प्रकाशन एवं विमोचन हुआ, इसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रोत्साहन पत्र प्राप्त हुआ। इसका समाज में निःशुल्क वितरण किया गया। अब तक कुल 10 साझा काव्य-संग्रह पुस्तकों में कविताएँ-रचनाएँ प्रकाशित हुई है। फेसबुक पर मेरी कलम से- "मेरी कविताएँ, सुविचार संग्रह, मुझे शिकायत है, बस यूँ ही" व्यक्तिगत समूह का संचालन कर रही है। महालक्ष्मी माहेश्वरी महिला मंडल, माहेश्वरी बहू मंडल, नाशिक जिल्हा माहेश्वरी महिला मंडल, लायंस क्लब ऑफ मालेगांव साऊथ की सक्रिय सदस्य है । 2019 में लायंस क्लब ऑफ मालेगांव साऊथ की पहली महिला सचिव थी एवं वर्तमान में लायंस पत्रिका के संपादक पद पर है। नासिक जिला माहेश्वर महिला संगठन द्वारा जिला स्तरीय साहित्य एवं सामाजिक चिंतन मनन समिति के पद पर है।

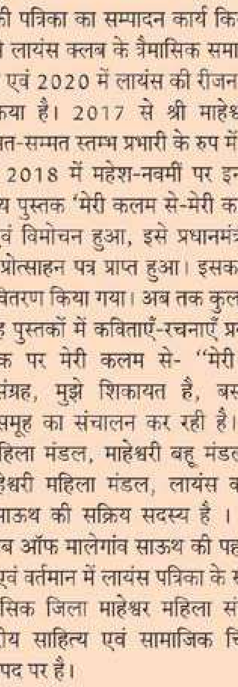

कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका

वर्तमान समय में नारी की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति सशक्त हुई है, पर फिर भी उसकी घरेलू जिम्मेदारियां जस की तस बनी हुई है। एक अविवाहित कामकाजी महिला पर घर-परिवार की जिम्मेदारियां का बोझ अधिकांशतः नगण्य ही होता है। वह घर-परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्त अपने कार्यक्षेत्र पर अपना पूरा ध्यान और समय दे सकती है। पर विवाह के पश्चात एक कामकाजी विवाहित महिला को घर-परिवार को प्राथमिकता देनी आवश्यक हो जाती है। इस प्रकार दोहरी जिम्मेदारी निभाते हुए उसकी स्थिति घर और कार्यालय के मध्य गेहूं के घुन की तरह हो जाती है। एक कामकाजी महिला घर और कार्यालय के मध्य सामंजस्य स्थापित करने की यथासंभव कोशिश करती रहती है। घरेलू महिलाओं की अपेक्षा कामकाजी महिलाओं पर तनाव और परेशानियों का बोझ अधिक होता है, जिसके चलते उनको विभिन्न बीमारियों का भी सामना करना पड़ता है। जहां परिवार के अन्य लोग घर और बच्चों की जिम्मेदारी बांट लेते हैं वहां कामकाजी महिला का स्वास्थ्य बेहतर और जीवन खुशहाल रहता है।

घर और कार्यालय में उससे कहीं पर तिल सी चूक हुई नहीं कि टोकने-डांटने-फटकारने वाले पीछे नहीं रहते हैं। चाहे कितनी भी पढ़ी-लिखी उच्च पद पर कार्यरत महिला हो; पुरुष प्रधान समाज आज भी अपना वर्चस्व दिखाने से बाज नहीं आता है। पुरुष लाख कोशिश करे पर कभी भी घर और कार्यक्षेत्र दोनों को कुशलतापूर्वक नहीं चला सकते हैं। केवल नारी में ही यह गुण है कि वो घर-परिवार को प्राथमिकता देते हुए अपने कार्यक्षेत्र में भी अपनी कुशल कार्यक्षमता की छाप छोड़ती है। हां यह सच है कि दोहरी भूमिका निभाने वाली नारी का अपना जीवन भागमभाग में ही व्यतीत होता है। समयाभाव के कारण परिवार और गृहस्थी के सुखों से भी उसे समझौता करना पड़ता है। चाहकर भी समयाभाव के कारण वह सामाजिक भी नहीं हो पाती है। यही कारण है कि कभी-कभार उसे परिवार-समाज के व्यंगों को भी झेलना पड़ता है।

सुदृढ़ आर्थिक स्थिति होने पर भी कुछ नारियां अपनी अलग पहचान और अस्तित्व बनाने के लिए दोहरे जीवन को स्वेच्छा से स्वीकार करती है तो कुछ नारियां महज अपने कामकाजी शौक के लिये दोहरी जिंदगी अपनाती है । पर आज के महंगाई के दौर में कुछ नारियां ऐसी भी है जिन्हें आर्थिक मजबूरी में दो नावों की सवारी करनी पड़ती है। वजह चाहे कुछ भी हो पर उनकी अपनी जिंदगी विश्रामरहित और मशीनी बन जाती है। गहराई से देखें तो नारी सशक्तिकरण और नारी स्वावलंबन को मजबूती भी तो नारी की इस दोहरी भूमिका के कारण ही मिली है। नारी के इस दोहरे जिम्मेदारी भरे किरदार के कारण उनकी सोच और समझदारी के साथ-साथ उनकी निर्णय क्षमता में भी गहरी परिपक्वता दिखाई देती है। यही कारण है कि एक कामकाजी नारी एक समय में एक से अधिक समस्यायें सुलझाने के काबिल है, जिसका पुरुषों में शत-प्रतिशत अभाव होता है। तभी तो पुरुषों के समक्ष एक साथ उलझने आये तो वह उन उलझनों में उलझ कर झुंझला जाता है जबकि महिलाएं हर समस्या को आसानी से सुलझा लेती हैं। आज शिक्षित-स्वाभिमानी नारी का स्वप्न मात्र सुखी घर-परिवार और बच्चे ही नहीं हैं। आज की नारी अपनी गृहस्थी को प्राथमिकता देते हुए अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए दृढनिश्चय के साथ कठिन से कठिन किरदार भी जीवनपर्यंत निभाने के लिए तत्पर होती है और अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुंच कर आत्मिक संतुष्टि पाती है।

नारी ने कभी भी अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता नहीं दी है। घर-परिवार के लिए सदैव ही अपने अरमानों के साथ समझौता किया है। नारी को देने वाला सबसे बहुमूल्य उपहार है उसका सम्मान। मैं सम्पूर्ण समाज से अपील करती हूँ कि यदि हमारा पुरुष प्रधान समाज अपनी माँ-पत्नी-बहू-बेटियों की घर-परिवार की जिम्मेदारियों को बांट कर कुछ हल्का कर दे तो यह नारी के लिये उसके जीवन का सबसे बड़ा उपहार होगा। तभी यह कहावत भी सही मायने में चरितार्थ होगी कि स्त्री और पुरुष जीवनरथ के दो पूरक पहिये हैं।

सौ. सुमिता राजकुमार मूंधड़ा, मालेगांव, नासिक
अतिथि संपादक
7798955888

श्री नवासन माताजी

श्री नवासन माताजी माहेश्वरी समाज की नुवाल और खुवाल खाँप की देवी है।

श्री नवासन माताजी का मंदिर राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में गंगापुर के समीप रायपुर ग्राम में स्थित है। मंदिर तो अधिक पुराना नहीं है लेकिन प्रतिमा प्राचीन बताई जाती है। इस मंदिर में माताजी की प्रतिमा को स्थापित किया गया है। माहेश्वरी समाज के साथ ही स्थानिय निवासी भी मातजी के प्रति विशेष श्रद्धा रखते है और नवरात्रि में यहाँ विशेष आयोजन होता है।

पूजा विधि

यहाँ माताजी के पूजन में चुनरी, कुंकु, चाँवल, नारियल, काजल, मोली व मेहन्दी चढ़ाई जाती है। माताजी को विशेष रूप से लापसी का भोग लगाया जाता है।

कैसे पहुँचें

भीलवाड़ा से सड़क मार्ग से रायपुर ग्राम तक पहुँचा जा सकता है। यह गाँव गंगापुर के समीप है और भीलवाड़ा से ४० कि.मी. दूर स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिये रायपुर गाँव तक बस सुविधा उपलब्ध है।

कहाँ ठहरें

ठहरने के लिये गंगापुर में धर्मशाला, लॉज आदि उपलब्ध है। उत्तम श्रेणी की होटल भीलवाड़ा में उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

श्री माणकलाल जगदीशचन्द्र नुवाल
बड़े मंदिर के पास
ग्राम व पोस्ट-रायपुर, जिला भीलवाड़ा
फोन- 01481-230058

गुजरात महिला संगठन के चुनाव सम्पन्न

बड़ौदा। गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन के अष्टम सत्र की कार्यकारिणी की अष्टम बैठक एवं सत्रांत समारोह अर्पण-2020 वाघोडिया (जिला बड़ौदा) में गत 6 मार्च को संपन्न हुए। राष्ट्रीय महिला संगठन की मध्यांचल उपाध्यक्षा मंगल मर्दा एवं राष्ट्रीय समिति प्रभारी उर्मिला कलंत्री ने दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में पर्यवेक्षक-मंगल मर्दा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं चुनाव अधिकारी-वरिष्ठ सदस्या कांता नवाल (आणंद) की देखरेख में गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन के 'नवम सत्र' के लिए सर्वसम्मती से पदाधिकारियों का चयन किया गया। इसमें अध्यक्षा उमा काबरा-बड़ौदा, सचिव-मंजूश्री काबरा-वापी, निवर्तमान अध्यक्षा एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य-उमा जाजू-सूरत, कोषाध्यक्षा-कांता मोदानी-अहमदाबाद, संगठन मंत्री-कौशल्या लड्ढा-बड़ौदा, उपाध्यक्षा-निर्मला हुरकट-जामनगर, सुशीला माहेश्वरी-अहमदाबाद, चंदा सोनी-सूरत व चंद्रप्रभा मूंदड़ा-वापी, सहसचिव-प्रतिभा होलानी-राजकोट, सुधा काबरा-अहमदाबाद, सरस्वती मालू-सूरत व नीता लाहोटी-सिलवासा चुनी गई। प्रचार प्रसार मंत्री-शशि देवपुरा-बड़ौदा व सांस्कृतिक मंत्री-भारती कासट, सूरत निर्वाचित हुई।

फूलों की होली का भी आयोजन

बैठक में आयी सदस्याओं के लिए खास "फूलों की होली" का आयोजन रखा गया। मंदिर के पवित्र प्रांगण में सदस्याओं ने फूलों से खूब जमकर होली खेली। नाच, गाना, भजन के साथ एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की बधाई एवं शुभकामनाएँ दी गई। भक्तिभाव के साथ मंदिर के दर्शन, साथ में ठंडाई व अल्पाहार का आनंद लेकर "फाग उत्सव" मनाया गया। सत्रांत समारोह सम्पन्न करने में आरआर कॉबेल के स्टॉफ की पूरी टीम के सहयोग की सभी ने सराहना की।

मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान

बीकानेर। श्रीकृष्ण माहेश्वरी मण्डल के तत्वाधान में स्थानीय टाउन हॉल में 35वाँ सेठ गिरधरदास जगमोहनदास मूंधड़ा जिलास्तरीय माहेश्वरी मेधावी छात्र-छात्राओं के पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मण्डल के अध्यक्ष नारायण बिहाणी ने बताया कि मुख्य अतिथि जयदीप बिहाणी (अध्यक्ष सेठ गिरधारीलाल बिहाणी शिक्षा ट्रस्ट, श्रीगंगानगर), स्वागताध्यक्ष शशिमोहन मूंधड़ा (समाजसेवी उद्योगपति), कार्यक्रम अध्यक्ष नोखा निवासी श्रीनिवास झंवर, मुख्यवक्ता पी.बी.एम. हॉस्पीटल के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनन्त राठी व प्रमुख समाजसेवी मूंधड़ा परिवार के सदस्य हरिमोहन मूंधड़ा थे। सम्मान समारोह में बीकानेर जिले के 180 प्रतिभावान मेधावी छात्र-छात्राओं को मोमेन्टो देकर पुरूस्कृत व सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में मण्डल अध्यक्ष नारायण बिहाणी ने आभार व्यक्त किया। मण्डल के उपाध्यक्ष किसन चाण्डक व शिक्षामंत्री मनोज बिहाणी के अनुसार कार्यक्रम में मगनलाल चाण्डक, मनमोहन लोहिया, जगदीश कोठारी, घनश्याम कल्याणी, नवरतन द्वारकाणी, आनन्द पेड़िवाल, कालू राठी, आदि कई सदस्य भी उपस्थित थे।

मैसूर जिला माहेश्वरी की बैठक सम्पन्न

बेंगलुरु। मैसूरु जिला माहेश्वरी सभा की समिति की बैठक गत 28 फरवरी को माहेश्वरी भवन बंगलोर में सम्पन्न हुई। अध्यक्ष देवकी नंदन डागा ने सभा को उद्बोधन किया। उपाध्यक्ष ललित मोहन राठी ने अपने उद्बोधन में जिले के प्रत्येक व्यक्ति को समाज से जोड़ने का आह्वान किया। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा द्वारा नागपुर से संचालित माहेश्वरी पत्रिका के बोर्ड में मनोनयन होने पर देवेंद्र कुमार सोनी का स्वागत किया गया। बैठक में अजय राठी (सचिव), मुकेश चितलांगिया (कोषाध्यक्ष), विजय कचोलिया (सह-सचिव), कार्यकारिणी सदस्य अशोक राठी, प्रकाश मल व राजेश माहेश्वरी राजीव सांवरिया आदि उपस्थित थे।

अपनो पर भरोसा करें,
लेकिन सावधानी के साथ क्योंकि
कभी-कभी खुद के दाँत भी
खुद की जीभ काट देते हैं।

मेधावी छात्र-छात्राओं का हुआ सम्मान

श्रीगंगानगर। श्रीकृष्ण माहेश्वरी मण्डल के तत्वाधान में स्थानीय टाउन हॉल में 35वें सेठ गिरधरदास जगमोहनदास मूंधड़ा जिलास्तरीय माहेश्वरी मेधावी छात्र-छात्राओं के पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मण्डल अध्यक्ष नारायण बिहाणी ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयदीप बिहाणी (अध्यक्ष सेठ गिरधारीलाल बिहाणी शिक्षा ट्रस्ट, श्रीगंगानगर), स्वागताध्यक्ष शशिमोहन मूंधड़ा (समाजसेवी उद्योगपति), कार्यक्रम अध्यक्ष नोखा निवासी श्रीनिवास झंवर, मुख्यवक्ता पी.बी.एम. हॉस्पीटल के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनन्त राठी व प्रमुख समाजसेवी मूंधड़ा परिवार के सदस्य हरिमोहन मूंधड़ा थे। सम्मान समारोह में बीकानेर जिले के 180 प्रतिभावान मेधावी छात्र-छात्राओं को मोमेन्टो देकर पुरस्कृत व सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नोखा निवासी श्रीनिवास झंवर ने की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से मगनलाल चाण्डक, मनमोहन लोहिया, जगदीश कोठारी, घनश्याम कल्याणी, नवरतन द्वारकाणी, आनन्द पेड़िवाल, कालू राठी, मनमोहन कल्याणी, भवानी राठी, राजेन्द्र राठी (श्रीगंगानगर), पुरुषोत्तम तापड़िया (नोखा), सुमन मूंधड़ा (नापासर), विभा बिहाणी, निशा झंवर, कान्ता मूंधड़ा, लता दम्माणी, किसन दम्माणी, उमेश राठी (नोखा), मुरलीधर झंवर (नोखा) आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

निधि को ग्लोबल अवार्ड

वाराणसी। स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठन की वर्तमान अध्यक्ष अंजू बियानी की सुपुत्री निधि बियानी ने शिक्षा क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त की। इसके लिए उन्हें गत दिसंबर माह में ग्लोबल एडुकेशन अवार्ड-2019 से सम्मानित किया गया। निधि का हाल ही में इंदौर में विवाह हुआ है।

सुनकर जमाने की बाते तू
अपनी अदा मत बदल
यकीन रख अपने खुदा पर
यू बार बार खुदा मत बदल

बागला दम्पत्ति हुए सम्मानित

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गत 25 फरवरी को गोरधन बागला एवं जमनादेवी बागला को उनके विवाह की 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित एक समारोह में शाल/चुन्नी ओढ़ाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। जिला मंत्री सविता राठी ने बताया कि इस अवसर पर जिला महिला संगठन की अध्यक्ष उमा सोमानी, संरक्षक उमा परवाल एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत

निजामाबाद। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के उपलक्ष में जे.पी. नड्डा का स्वागत समाजसेवी पुरुषोत्तम सोमानी ने किया। श्री सोमानी ने डॉ राजीव कुमार उपाध्यक्ष नीति आयोग से नई दिल्ली में मुलाकात भी की व कैंसर की तरह सभी दवाइयों पर 30 प्रतिशत ट्रेड मार्जिन क्याप लगाने से सभी दवाइयां 90 प्रतिशत तक सस्ती हो जाएगी, यह सुझाव दिया। तुरंत उन्होंने इस बात को मान कैबिनेट नोट बनाकर अप्रुवल के लिए भेजने के लिए कहा।

मूंदड़ा अध्यक्ष एवं परवाल महामंत्री

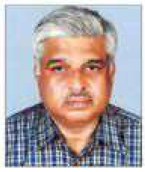

जयपुर। बैंक ऑफ राजस्थान रिटायर्ड स्टॉफ सोसायटी की गत 23 फरवरी 2020 को उदयपुर में 12वीं वार्षिक साधारण सभा सम्पन्न हुई। इसमें हुए त्रैवार्षिक चुनावों में योगेंद्र मूंदड़ा (कोटा) अध्यक्ष एवं राधेश्याम परवाल (जयपुर) महामंत्री निर्वाचित हुए।

बस इतना समझने में उम्र बीत गई कि
बेगुनाह होना भी एक गुनाह है

माहेश्वरी भवन का हुआ लोकार्पण

बूंदी। जैतसागर रोड़ स्थित श्री माहेश्वरी भवन परिसर में नवनिर्मित भवन का लोकार्पण, भामाशाह सम्मान व स्नेह मिलन समारोह मुख्य अतिथि सुभाषचंद बहेड़िया सांसद भीलवाड़ा हिंडोली की उपस्थिति में आयोजित हुआ। अध्यक्षता राजकुमार काल्या राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा.माहेश्वरी युवा संगठन ने की। विशिष्ट अतिथि आशा माहेश्वरी राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन राजेशकृष्ण बिरला उप सभापति अ.भा. माहेश्वरी महासभा व समाजसेवी हरिप्रसाद तापड़िया थे। श्री माहेश्वरी पंचायत संस्थान के अध्यक्ष जगदीश जैथलिया ने स्वागत भाषण में अपने 6 वर्ष के कार्यकाल में हुए कार्यों की जानकारी दी। समारोह में भवन निर्माण में सहयोग के लिए दुर्गाशंकर मंत्री, अशोक लढ़ा, विष्णु चितलांग्या, महावीर रामप्रसाद मूंदड़ा, पुरुषोत्तम जैथलिया, द्वारका बिरला, पुरुषोत्तम नुवाल आदि भामाशाहों का शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह देकर अतिथियों ने सम्मान किया। इस अवसर पर सांसद सुभाष बहेड़िया, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने नवनिर्मित भवन की पट्टिका का अनावरण किया। अतिथियों का साफाबांध व माला पहनाकर स्मृति चिन्ह देकर अध्यक्ष जगदीश जैथलिया, सचिव विजेंद्र माहेश्वरी ने स्वागत किया। समारोह में नवनिर्वाचित सरपंच राधेश्याम गुप्ता व राखी झंवर का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मनीष मंत्री व आशुतोष बिड़ला ने किया।

मुक्तिधाम को शवपेटी भेंट

नागदा। मोहता परिवार अपने परिवार के अग्रज बड़े भ्राता गोविन्दजी से प्रेरणा लेकर नगर या आस पास के क्षेत्र में समय-समय पर सेवा के पुनीत कार्य करता आ रहा है। इसी कड़ी में नागदा में मुक्ति धाम हेतु रेफ्रिजरेशन मरक्यूरी (शव-पेटी) देकर अपनी सेवा गति में एक और चार चाँद लगाने का कार्य किया गया।

जैन समाज के जुलूस का स्वागत

राजगढ़। आज राजगढ़ जिले के तले नगर में माहेश्वरी समाज द्वारा जैन समाज के भव्य जुलूस का स्वागत किया गया। इसे सभी गांव वासियों ने बहुत सराहा।

हमारी हस्ती को जमाना क्या पहचानेगा साहेब...
हजारो मशहूर हो गए हमें बदनाम करते-करते...

युवा संगठन के चुनाव संपन्न

चंद्रपुर। महेश भवन, तुकुम में चंद्रपुर जिला माहेश्वरी युवा संगठन की चुनावी सभा संपन्न हुई इसमे उपस्थित सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर आश्विन ओमप्रकाश सारडा एवं सचिव के पद पर पियूष संदीप माहेश्वरी का चयन किया गया। इस चुनावी सभा में सी ए दामोदर सारडा, डॉ सुशील मुंधडा, शिव सारडा,भरत बजाज, राजेश काकानी, पंकज सारडा, अनूप गाँधी, नितिन जाजू, नितेश चांडक, हरीश सोमानी, आनंद मुंधडा, किसान बजाज, रुपेश राठी, ऋषिकांत जाखोटिया, आशीष मुंधडा एवं चंद्रपुर जिला माहेश्वरी युवा संगठन के सभी कार्यकारणी सदस्य उपस्थित थे। इस माह नागपुर में संपन्न हुई विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन की चुनावी सभा में चंद्रपुर के दीपक कैलाश सोमानी को विदर्भ स्तरीय खेल मंत्री के पद पर नियुक्त किया गया।

छोड़ के शालीनता
बदतमीजियां करने लगे।
ऐ राजनीति तेरी खातिर
हम दोस्तों से लड़ने लगे।

महिला मंडल की बैठक संपन्न

उरई। मध्य उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन के नए सत्र की प्रथम कार्यकारिणी बैठक 'अभिनन्दन' एवं पदग्रहण समारोह उरई महिला मंडल द्वारा मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय प्रभारी प्रेमा झंवर की उपस्थिति में आयोजित हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री के सानिध्य में निवर्तमान अध्यक्ष सुजाता राठी एवं सचिव विनीता खटोड़ ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रीती तोषनीवाल एवं सचिव सीमा झंवर और उनकी पूरी टीम को पद ग्रहण करवाया। राष्ट्रीय महामंत्री ने 3-4-5 अप्रैल को चित्रकूट में आयोजित होने वाली कार्यसमिति बैठक की चर्चा की।

मंत्री बने युवा संगठन के सांस्कृतिक मंत्री

दुर्ग। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने निवर्तमान छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन अध्यक्ष राजेश मंत्री का मनोनयन अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के सांस्कृतिक मंत्री के रूप में किया है। छत्तीसगढ़ माहेश्वरी समाज की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या का आभार व्यक्त करते हुए श्री मंत्री का अभिनंदन किया गया।

43 महिलाओं का निःशुल्क लेन्स प्रत्यारोपण

जयपुर। माहेश्वरी महिला मंडल, किशनगढ़ रेनवाल (जिला रायपुर) द्वारा शंकरा आई हास्पिटल एवं जिला अंधता निवारण समिति, जयपुर के आर्थिक सहयोग से आयोजित निःशुल्क मोतियाबिंद जांच शिविर में 217 महिलाओं की जाँच करवाई गई। इसमें से 43 महिलाओं का शंकरा आई हास्पिटल, जयपुर में गत 5 फरवरी 2020 को निःशुल्क ऑपरेशन कर लेंस प्रत्यारोपण किया गया। महिला मंडल की अध्यक्ष विजयलक्ष्मी लड्ढा एवं जिला महिला संगठन की उपाध्यक्ष रेणु जखोटिया (रेनवाल) का इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा। जिला मंत्री सविता राठी ने बताया कि जिला महिला संगठन अध्यक्ष उमा सोमानी, संरक्षक उमा परवाल, उपाध्यक्ष रजनी पेड़िवाल, संयुक्त मंत्री अनिता मूंदड़ा तथा क्षेत्रीय संगठनों से पिकू सोमानी, मीना बिन्नानी, इंदिरा अजमेरा आदि कई सदस्याऐं मरीजों से मिलने हॉस्पिटल में भी आयीं।

उनकी तासीर बेहद कड़वी होती है...
जिनकी गुफ़्तगू शक्कर सी मिठी होती है...

वार्षिक उत्सव एवं होली का रंगारंग कार्यक्रम

वरंगल। राजस्थानी महिला मंडल का वार्षिक उत्सव व होली का रंगारंग कार्यक्रम प्रगतिशील मारवाड़ी माहेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट भवन रंगमपेट में अध्यक्ष बीना किशन बोहरा की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। सांकृतिक मंत्री श्रीमती माधुरी डोडिया ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को पेश किया। प्रमुख गायिका वैष्णवी लाहोटी ने होली के भजन प्रस्तुत किये। तंबोला के कार्यक्रम में विजेताओं को समाज की विशिष्ट सदस्य महिलाओं द्वारा पुरस्कार दिलवाये गये। बच्चों की राधाकृष्ण की झांकी इस कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण रही। सदस्यो ने आपस में फूलों की होली खेली।

झंवर फिर बने बैंक संस्थापक अध्यक्ष

नासिक। वरिष्ठ समाजसेवी व श्री महेश को ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड नासिक के संस्थापक अध्यक्ष अशोक झंवर का पुनः इसी पद पर चयन किया गया। उपाध्यक्ष विष्णुकांत मंत्री, मानद कार्य संचालक बालकिशन धुत, जनसंपर्क संचालक सतीश मंत्री, संचालक रामनारायण कलंत्री चुने गये। संचालक मंडल का भी चयन हुआ।

पनपालिया बने समाज अध्यक्ष

यवतमाल। स्व. श्री परमसुखदास पनपालिया के सुपुत्र अरविंद पनपालिया सर्व सम्मति से यवतमाल जिला माहेश्वरी समाज के सर्वसम्मति से वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गये। समाज की ओर से उनका अभिनंदन भी किया गया।

स्पर्श चिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

बैंगलुरू। स्थानीय माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में माहेश्वरी भवन, ओकलीपुरम में चंडीगढ़ के स्पर्श चिकित्सा विशेषज्ञ वीरेंद्र शर्मा द्वारा स्पर्श विधि द्वारा पुराने जोड़ों के दर्द का इलाज किया गया। इसका लगभग 200 रोगियों ने लाभ लिया। सभा अध्यक्ष निर्मलकुमार तापड़िया, उपाध्यक्ष नवलकिशोर मालू, माहेश्वरी महिला मण्डल अध्यक्षा कांता काबरा, माहेश्वरी फाउण्डेशन के चेयरमेन राजगोपाल भूतड़ा एवं माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी देवकीनंदन डागा ने शिविर का शुभारम्भ किया। सचिव भगवानदास लाहोटी, कोषाध्यक्ष अजय राठी, सभा सदस्य गोपाल काकाणी आदि का विशेष सहयोग रहा।

दिलीप भंसाली को राष्ट्रीय सम्मान

रतलाम। रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर एचएसएफ टीम द्वारा गत 22 सितंबर 2019 को ''रक्तदान जीवनदान ग्रुप'' को भी सम्मानित करने के लिए आमंत्रित किया। उसके लिए रतलाम टीम जाने भी वाली थी पर किसी कारण वश नही जा पाई थी उन्होंने उस सम्मान को खरगौन के रक्तमित्र ने इस टीम के लिए ग्रहण किया था। उन्होंने शील्ड व प्रसस्ति पत्र ग्रुप के रक्तमित्र दिलीप कन्हैयालाल भंसाली को अपने हाथों से उन्हें प्रदान किया ।

जिला युवा समिति की नई कार्यकारिणी गठित

नागपुर। जिला माहेश्वरी युवा समिति की नई कार्यकारिणी के चुनाव सर्वसम्मति से महेश भवन गांधीबाग में संपन्न हुए। इसमें अध्यक्ष हेमंत राठी, सचिव विवेक सारड़ा, कोषाध्यक्ष राहुल चांडक, उपाध्यक्ष प्रदीप मंत्री, सह सचिव गोविन्द सारड़ा, संगठन मंत्री प्रणय डागा, खेल कूद मंत्री सुमित मोहता, सांस्कृतिक मंत्री शैलेष मोकाती, प्रचार प्रसार रविंद्र चांडक, बधाई संयोजक अभिजीत टावरी निर्विरोध निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी संजय नबीरा एवं पर्यवेक्षक नारायण तोषनीवाल थे।

करवा बनी शहर उपाध्यक्ष

अमरावती। सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता तथा राणी मैरेज ब्यूरो की संस्थापक अध्यक्ष रानी करवा को सर्वसम्मति से अमरावती शहर माहेश्वरी महिला संगठन उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। उल्लेखनीय है कि हंसमुख व सभी को साथ लेकर चलने के उनके स्वभाव की सभी प्रशंसा करते हैं।

महिला दिवस पर पिकनिक

गुना। माहेश्वरी समाज द्वारा महिला दिवस पर समाज की महिलाओं द्वारा समाज की एक पिकनिक का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। इसमें प्रथम स्थान कांता लाहोटी, ज्योति राठी ममता माहेश्वरी, ममता भट्टर ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान शोभा राठी व राधा राठी ने प्राप्त किया। चेयर रेस प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सभी नए सदस्यों के विचार लिए गए व समाज के प्रति उनके विचारों को रखा गया। नए-नए सुझाव व प्रतिक्रिया सामने आई। बहुत ही रंगारंग तरीके से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

माहेश्वरी (देवपुरा) हुए सम्मानित

भोपाल। स्व.श्री रामस्वरूप माहेश्वरी रिटायर्ड संयुक्त संचालक जनसंपर्क इंदौर के सुपुत्र संजीव माहेश्वरी (देवपुरा) अपनी 41 वर्ष की सेवा पूर्ण कर प्रबंधक परियोजना म.प्र. माध्यम के पद से सेवानिवृत्त हो गये। श्री माहेश्वरी मप्र माध्यम से रोजगार और निर्माण की विज्ञापन एवं प्रसार शाखा, लेख, प्रिंटिंग और सबसे अधिक लगभग 27 वर्षों तक विज्ञापन शाखा में सेवा दे चुके हैं। मप्र माध्यम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने श्री माहेश्वरी को सम्मान समारोह आयोजित कर प्रशस्ति पत्र, शाल श्रीफल से सम्मानित किया। श्री माहेश्वरी के पुत्र अर्पित माहेश्वरी वर्तमान में लॉ कोर्स पूर्ण कर मुंबई की एक प्रतिष्ठित लॉ फर्म में उच्च पद पर कार्यरत हैं।

नेतृत्व करने का मतलब
लोगों को सही रास्ता दिखाना होता है...
ना कि उन पर राज करना होता है...

निःशुल्क मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर का आयोजन

भीलवाड़ा। स्वर्गीय अचल कुमार चेचानी की 5 वीं पुण्यतिथि एवं स्वर्गीय श्री आसाराम व स्वर्गीय श्रीमती जानबाई चेचानी की पुण्यस्मृति में विशाल निःशुल्क मल्टीस्पेशलिटी रोग परामर्श एवं जांच शिविर का आयोजन महेश शिक्षा सदन परिसर पर 9 फरवरी 2020 रविवार को किया गया। शिविर में गुर्दा रोग (किडनी), कैंसर, ज्वाइंट रिप्लेसमेंट एवं चर्मरोग आदि के 730 रोगियों को अहमदाबाद के वरिष्ठ चिकित्सकों द्वारा जांचकर एवं परामर्श दिया गया। शिविर का शुभारंभ उद्योगपति लादूराम बांगड़, महेश प्रगति संस्थान के अध्यक्ष सत्यनारायण डाड, महेश सेवा समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश नराणीवाल, गोपाल राठी, गोपाल काबरा, प्रशांत भाई किनारी वाला, विनोद भाई ठाकर, रूपा शाह, नाथद्वारा मंदिर के अधिकारी व आयोजक बंशीलाल, राजेन्द्र कुमार, बालकिशन व अमन चेचानी एवम चेचानी परिवार द्वारा किया गया। शिविर में अहमदाबाद के जीएसएस अस्पताल गुजरात कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट सिविल एवं किडनी हॉस्पिटल के करीब 20 डॉक्टरों की टीम ने रोगियों की जांच की। रूपा सहाय ने बताया कि रोग की गंभीरता के हिसाब से जिन रोगियों को हाई सेंटर रेफर करने का परामर्श दिया उन्हें रियायती दर पर उपचार उपलब्ध कराया जाएगा। ऑपरेशन भी न्यूनतम दर पर होंगे इसके अलावा रेफर रोगी का आयुष्मान भारत योजना के तहत 5 लाख रुपये तक का इलाज मुफ्त किया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में अजय लोहिया, अर्जुनलाल चेचानी, सुरेश माहेश्वरी, पवन अग्रवाल, कैलाश समदानी, सुनील राठी, नवीन काकानी, महावीर समदानी, सीमा कोगटा, अनिला अजमेरा, प्रीति लोहिया, आदि का सहयोग रहा।

जिला चिकित्सालय में मनाया महिला दिवस

मंदसौर। माहेश्वरी महिला मण्डल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जिला चिकित्सालय में कुपोषित बच्चों के लिये बेडशीट, घोड़ा गाड़ियां एवं अन्य खिलौनों का वितरण किया गया। मण्डल की अध्यक्षता राज चिचानी व सचिव संगीता मण्डोवरा ने बताया कि चंदा-रमेश चिचानी के सौजन्य से उनके विवाह की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की प्रेरणा जिला चिकित्सालय में कार्यरत सविता मूंदड़ा ने दी थी। इस अवसर पर महिला मण्डल से राज चिचानी, संगीता मण्डोवरा, मणी मालू, मिनल मण्डोवरा, सुरेखा झँवर, मीना जाजू, संध्या काबरा, पूजा सोमानी, मेघना झँवर, दीपिका मालपानी, संतोष चिचानी, अंजना मालू, भावना सोमानी व सुषमा भदादा आदि उपस्थित थीं।

आपके नैतिक मूल्य आपकी हर कमाई से बढ़कर हैं, उनके गौरव को खंडित करके खुद को खंडित न होने दें।

विदर्भ युवा संगठन की कार्यकारिणी गठित

नागपुर। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन की नयी कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से गत 16 फरवरी को माहेश्वरी पंचायत, सीताबर्डी, नागपुर में हुआ। इसमें अध्यक्ष हिमांशु चांडक (नागपुर), सचिव प्रवीण कलंत्री (मलकापुर), कोषाध्यक्ष अमोल बजाज (वाशिम), उपाध्यक्ष सचिन झंवर (भंडारा), उपाध्यक्ष हेमसिंघ मोहता (अकोला), सह सचिव प्रतीक बागड़ी (नागपुर), सह सचिव सागर मुंधड़ा (वर्धा), सह सचिव नीलेश राठी (अकोला), संघटन मंत्री मयूर राठी (यवतमाल), खेल कूद मंत्री दीपक सोमानी (चंद्रपुर), सांस्कृतिक मंत्री भावेश लड्ढा (खामगांव) निर्विरोध निर्वाचित हुए। विदर्भ प्रदेश द्वारा राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य एवं राष्ट्रीय पद हेतु सर्वसम्मति से श्रीनिवास मोहता (वर्धा) का नाम सदन में पारित किया। राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य हेतु नागपुर से दीपक मोहता, बनवारी भूतड़ा, प्रतीक प्रमोद बागड़ी, अनूप नबीरा, सौ दक्षा टावरी, गडचिरोली से प्रफुल्ल सारड़ा, चंद्रपुर से नितिन जाजू, भंडारा से वसंत लाहोटी, वाशिम से अतुल चांडक, यवतमाल से सचिन चांडक, बुलढाणा से धीरज मुंधड़ा, गिरीश राठी, सौरभ चांडक, अंकित टावरी, आयुष मालपानी, अकोला से राम बाहेती, सागर लोहिया, विशाल लड्ढा, अजय मंत्री, संकेत साबू का चयन हुआ।

अपनी तुलना दूसरों से मत करो, हर फल का स्वाद अलग होता है !!

निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर संपन्न

भीलवाड़ा। श्री गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा की ओर से महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर आयोजित किया गया। शिविर संयोजक महावीर समदानी ने बताया कि महेश छात्रावास में आयोजित निःशुल्क परामर्श शिविर में महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर से आये विशेषज्ञों ने रोगियों का परीक्षण कर परामर्श दिया। शिविर का शुभारंभ सांसद सुभाषचंद्र बहेड़िया, नगर परिषद सभापति मंजू चेचानी, पूर्व सभापति ओमप्रकाश नरानीवाल, उद्योगपति आर एल नोलखा, राधेश्याम चेचानी, प्रह्लाद राय लड्डा, राधेश्याम सोमानी, कैलाश कोठारी, जगदीश प्रसाद सोमानी, दीनदयाल मारू आदि ने किया। इसमें 175 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर परामर्श दिया गया। गणेश उत्सव समिति अध्यक्ष उदयलाल समदानी ने समिति के साल भर किये जाने वाले सेवा कार्यों से अवगत कराया। शिविर में देवेंद्र सोमानी, राजेन्द्र भदादा, सत्येंद्र बिड़ला, रमेश राठी, सुरेश कचोलिया, दिनेश काबरा, महेंद्र काकानी, छितरमल अग्रवाल, इंदु बंसल, राजेन्द्र कचोलिया, नगर सभा और तहसील सभा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

अपूर्व को महाराणा फ़तेह सिंह अवार्ड

उदयपुर। अपूर्व माहेश्वरी सुपुत्र अजय व पूजा समदानी को अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक परीक्षा (वाणिज्य संकाय) में उदयपुर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 1 मार्च 2020 को महाराणा मेवाड़ फॉउण्डेशन के 38वें वार्षिक सम्मान समर्पण समारोह में महाराणा फ़तेह सिंह सम्मान से नवाजा गया। इसमें अपूर्व को एक प्रशस्ति पत्र, गोल्ड मैडल एवं 11 हजार रुपए की धनराशि प्रदान की गयी।

उज्जवला को पीएच.डी.उपाधि

पुणे। उज्जवला गणेश सोनी, सुपुत्री जगन्नाथ सारडा ने गोंडवाना विद्यापीठ गडचिरोली महाराष्ट्र से पीएच.डी. इन कॉमर्स की उपाधि प्राप्त की। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

संत का किया अभिनंदन

कोलकाता। ऋषिकेश से आये हुए संतश्री हरि का मानव सेवा ट्रस्ट में अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट अध्यक्ष जगदीश चंद्र एन मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष हरिनारायण राठी, ट्रस्टी हरिकृष्ण अग्रवाल, रमाशंकर झंवर, दिनेश सेठ आदि उपस्थित थे। ट्रस्ट द्वारा कोलकाता में पाँच स्थानों पर होम्योपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सालय चलाये जा रहे हैं, जहां गरीबों को दवा वितरण किया जाता है।

सज्जनता ऐसी विधा है
जो वचन से तो कम
किन्तु व्यवहार से
अधिक परखी जाती है !!

भूतड़ा बने मण्डल कार्यसमिति सदस्य

दुर्ग। निवर्तमान छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी सभा अध्यक्ष विठ्ठल भूतड़ा दुर्ग को सर्वसम्मति से छत्तीसगढ़ प्रदेश से अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मण्डल सदस्यों द्वारा महासभा का कार्यसमिति सदस्य चयनित किया गया। माहेश्वरी भवन डुंडा रायपुर में इस चयन प्रक्रिया को संपन्न किया गया। इस अवसर पर महासभा से पर्यवेक्षक दिनेश राठी नागपुर उपस्थित थे।

चेहरे से तो सिर्फ पहचान होती है...
परख तो आज़माने से ही होती है...

फाग के रंग भक्ति के संग आयोजित

चित्तौड़गढ़। हमारी संस्कृति हमारी विरासत पर विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम अध्यक्ष कुंतल तोषनीवाल प्रदेश अध्यक्ष माहेश्वरी महिला संगठन ने भारतीय संस्कृति के महत्व पर प्रकाश डाला। अवसर था विभिन्न समाज के महिला मंडलो को एक ही माला में पिरो कर ''फाग के रंग भक्ति के संग'' कार्यक्रम का जो कि नगर माहेश्वरी महिला मंडल चित्तोड़गढ़ द्वारा महेश वाटिका, गांधी नगर में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम अध्यक्ष जया तोषनीवाल ने सभी का स्वागत किया व भजनों की प्रतियोगिता के नियमों की जानकारी दी। मंचासीन प्रदेश उपाध्यक्ष चंदा नामधर, निवर्तमान नगर अध्यक्ष सरिता चेचानी, एवम जिला संगठन मंत्री प्रेम मानधना संरक्षक, जिला अध्यक्ष कृष्णा संमधानी, लीला आगाल जिला सचिव, मंजू तोषनीवाल निवर्तमान जिलाध्यक्ष, प्रेमलता जागेटिया जिला कोषाध्यक्ष थीं। संगठन सचिव सीमा काबरा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन रुचिका सोनी व रेखा आगाल ने किया। निर्णायक मंडल में कुंतल तोषनीवाल, वीणा खटोड (भीलवाड़ा) व कनकलता पाराशर शामिल थीं। प्रियंका आगाल, रीना जागेटिया, नीतू तोषनीवाल अर्चना मोदानी, चंदा लड्ढा, श्वेता सोमानी आदि विशेष रूप से उपस्थित थीं।

जिला सभा की बैठक संपन्न

नाथद्वारा। अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन नाथद्वारा में राजसमन्द जिला माहेश्वरी सभा की कार्यकारिणी एवं कार्य समिति के सदस्यों की प्रथम बैठक अध्यक्ष अर्जुन लाल चेचाणी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस सभा में महेश नवमी महोत्सव सम्पूर्ण राजसमन्द जिले में निवासरत माहेश्वरी परिवारों द्वारा एक ही जगह जिला मुख्यालय पर मनाने हेतु चर्चा की गई। जिला सभा द्वारा मेडिकल केम्प आयोजन, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति दिलाने आदि पर भी विचार किया गया। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के लिये तीन सदस्यों सत्यप्रकाश काबरा राजसमन्द, विष्णुगोपाल सोमानी आमेट व रामगोपाल सोमानी राजसमन्द एवं दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक सभा के लिये आठ सदस्यों का मनोनयन किया गया।

कुछ यूं हो रहा है
रिश्तों का विस्तार...
जितना जिससे मतलब
उतना उससे प्यार...

कैंसर पीड़ित बच्चों को कम्बल वितरण

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन से सम्बद्ध टोंक फाटक क्षेत्रीय माहेश्वरी महिला संगठन (जोन-4) द्वारा 3 जनवरी को कविता कैंसर केयर सेंटर, प्रतापनगर, जयपुर में 50-60 कैंसर पीड़ित बच्चों को कम्बल वितरित किए गए। इस अवसर पर जिला महिला संगठन की अध्यक्ष उमा सोमानी, क्षेत्रीय संगठन की मंत्री सुलभा सारडा, अनिता परवाल, सुलोचना बांगड, पूजा राठी एवं शशि लखोटिया आदि उपस्थित थी। उल्लेखनीय है कि कविता कैंसर सेंटर में ग्रामीण क्षेत्रों के कैंसर पीड़ित बच्चों को उनकी माताओं के साथ रखा जाता है। सेंटर द्वारा उनके आवास, भोजन आदि की निःशुल्क व्यवस्था की जाती है। उक्त जानकारी संगठन मंत्री सविता राठी ने दी।

जिनकी मुलाकातों में मकसद छुपे हो...
उनसे फासला रहे तो ही बेहतर है...

मिमाणी का किया सम्मान

बलेरी। गत 8 मार्च को माहेश्वरी महिला समिति बरेली की कार्यकारिणी सदस्या रुचि मिमाणी का शाल औढ़ाकर सम्मान किया गया। रुचि लगभग 8 साल से मठरी, समोसा एवं कई प्रकार के नमकीन ऑर्डर पर तैयार करके सप्लाई करती हैं एवं परिवार का सहयोग करती हैं। इस अवसर पर अध्यक्ष शशि साबू व सचिव रेनु परवाल सहित संगठन की कई संस्थाऐं मौजूद थीं।

प्रीति क्लब की बैठक संपन्न

बीकानेर। माहेश्वरी समाज की पारिवारिक संस्था श्री प्रीति क्लब की बैठक क्लब कार्यालय में रखी गई। अध्यक्षता क्लब अध्यक्ष घनश्याम कल्याणी ने की। बैठक में क्लब सचिव नारायण दास दम्माणी ने बताया कि आज की विशेष बैठक का आयोजन हर वर्ष की भांति इस वर्ष आयोजित गवरजा गीतमाला कार्यक्रम की व्यवस्थाओं को लेकर रखी गई। मंत्री दम्माणी ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष गवरजा गीतमाला का कार्यक्रम आगामी 5 अप्रैल 2020 (रविवार) को स्थानीय जस्सूसर गेट स्थित माहेश्वरी सदन में मनाया जायेगा।

स्नेह के रंग से हुआ होली मिलन

देश के कोने कोने में बसे समाजजनों ने स्नेह का पर्व ''होली'' उत्साह के साथ मनाया। इसके साथ ही समाज के संगठनों द्वारा आयोजित किये जाने वाले ''होली मिलन समारोहो'' के दौर की शुरूआत हुई। इसमें स्नेह के रंगों से रंगने के साथ ही कई जगह विभिन्न रंगारंग तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ, जिसमें समाजजनों ने अपनी प्रतिभा का जमकर प्रदर्शन किया।

होली स्नेह मिलन

भीलवाड़ा। श्री माहेश्वरी समाज सेवा समिति सुभाष नगर के होली स्नेह मिलन समारोह में महिला संगठन द्वारा भजन एवम सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। महेश सेवा समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ओम प्रकाश नराणीवाल का अभिनन्दन किया गया इस अवसर पर सुभाष नगर अध्यक्ष कैलाशचन्द्र सामरिया, प्रदेश अध्यक्ष कैलाश कोठारी, मंत्री सत्येंद्र बिरला, ज़िला अध्यक्ष दीनदयाल मारू, मंत्री देवेंद्र सोमानी, नगर मंत्री अतुल राठी, उद्यमी रतन लाल नोलखा, सांसद सुभाष चन्द्र बहेड़िया सहित कई गणमान्यजन उपस्थित थे। यह जानकारी मंत्री राजेन्दकुमार राठी ने दी है।

होली मिलन

भीलवाड़ा। चंद्रशेखर आजाद नगर माहेश्वरी सेवा समिति व माहेश्वरी युवा संगठन चंद्रशेखर आजाद नगर के सयुंक्त तत्वाधान मे होली स्नेह मिलन समारोह व फागोत्सव मनाया गया। युवा संगठन सचिव योगेश हेड़ा ने बताया कि इस अवसर पर नवनिर्वाचित सभापति मंजू चेचानी एवं महेश सेवा समिति के अध्यक्ष ओम प्रकाश नराणीवाल, युवा संगठन के जिलाध्यक्ष प्रदीप पलोड़, महामंत्री राघव कोठारी का सम्मान किया गया। युवा संगठन अध्यक्ष अश्विनी तोतला ने बताया कि फागोत्सव कार्यक्रम में महिला सदस्य एवं बच्चे राधा कृष्ण के रूप में सज धज कर आए। अंतर्राष्ट्रीय भजन गायिका सुमन सोनी द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई। क्षेत्रीय अध्यक्ष रमेश जागेटिया,सचिव दिनेश हेड़ा,रामकिशन सोनी, कमलेश काबरा, कृष्णगोपाल सोमानी, ओम समदानी, राजेंद्र माहेश्वरी आदि गई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

होली मिलन

भीलवाड़ा। धुलंडी के पावन पर्व पर भोपालगंज माहेश्वरी सभा द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्री महेश शिक्षा सदन प्रांगण में स्नेह भोज का आयोजन हुआ। भजन एवं नृत्य का आयोजन भी महिलाओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ओम प्रकाश गट्टानी ने की। मुख्य अतिथि नगर परिषद सभापति मंजू चेचानी व विशिष्ट अतिथि महेश सेवा समिति अध्यक्ष ओम प्रकाश नराणीवाल थे। ८० वर्ष से अधिक समाज के वरिष्ठ बंधुओं का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। समाज के जिन विद्यार्थियों ने अपने अपने क्षेत्र में शीर्ष स्थान प्राप्त किया उन्हें भी सम्मानित किया गया।

फूलों से मनाया फागोत्सव

भीलवाड़ा। पुरानाशहर क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा द्वारा राम स्नेही वाटिका में होली के भजनों की धुन के साथ 1 क्विंटल फूलों से होली खेली गई सभा अध्यक्ष कैलाश बाहेती व मंत्री सत्यनारायन तोतला ने बताया कि फाग के इस विशेष आयोजन में माहेश्वरी महिला संगठन का विशेष योगदान रहा। स्नेहलता पटवारी,अनीता बाहेती, उषा समदानी सहित सैकड़ों महिलाओं ने नृत्य किया। स्नेह भोज में रमेश बाहेती, महावीर सांमरिया कैलाशी ईनानी, मधुसुदन बहेडिया, मनीष भदादा, श्रवण काबरा, शिव कुमार बिरला का विशेष योगदान रहा। झूठा नहीं छोड़ने का विशेष अभियान चलाते हुए लीला तोषनीवाल के नेतृत्व में झुठी प्लेट रखने की जगह पर महिलाएं मुस्तैदी से खड़ी होकर झुटा नहीं छोड़ने का आग्रह किया।

होली स्नेह मिलन

जोधपुर। शहर माहेश्वरी महिला संगठन (उत्तरी क्षेत्र) द्वारा रंगपंचमी के दिन होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्ष लता राठी ने बताया कि आयोजन की शुरूआत सदस्यों के स्वागत से परफ्युम एवम् तिलक होली के साथ हुई। इस कार्यक्रम में गायन, नृत्य, नाटिका, फन्नी टाईटल्स की प्रतिस्पर्धाओं और फन गेम्स, हाऊजी का आयोजन हाई टी आदि का आयोजन भी किया गया। मीना साबू, राजु मूथा संतोष भूतड़ा, पुष्पा सारड़ा, शांति लोहिया, जोधपुर प्रदेश अध्यक्ष-सचिव,जोधपुर जिला अध्यक्ष एवम सभी क्षेत्रीय संगठनों के पदाधिकारियों ने सहभागिता की।

शोरापुर में फाग महोत्सव 2020 की अनूठी पहल

शोरापुर। कर्नाटक यादगिरी ज़िल्हा शोरापुर में श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडल ने फाग महोत्सव 2020 की एक अनूठी पहेल की जिसमें सभी समाज बंधुओं ने मिलकर धूम धाम से फूलो की होली कृष्ण-राधा के संग व गीत, नाच, गाना, बजाना, खान पान सहित सभी बुजुर्ग महिलायें एवं पुरुषों की उपस्तिथि बेहद गरिमामई रही अंतरष्ट्रिय महिला दिवस के उपलक्ष्य में सभी नारी शक्ति को सामूहिक सम्मान भी किया सभी समाज के बंधुओ ने बढ़ चढ़कर इस कार्यक्रम का आनंद लिया।

होली मिलन एवं भजन संध्या आयोजित

नागदा। माहेश्वरी समाज द्वारा माहेश्वरी भवन जवाहर मार्ग पर होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया समाज द्वारा फूलों की होली खेली गयी एवं भजनसंध्या का आयोजन किया गया। महिला मंडल द्वारा रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गयी एवं समाज अध्यक्ष रमेश मोहता ने प्रतिभावान छात्राओ अनुश्री राठी का हाईकोर्ट वकील बनने पर सम्मान किया गया और एन.सी.सी वन स्टार रैंक लाने पर रीता माहेश्वरी का भी समाज अध्यक्ष रमेश मोहता द्वारा सम्मान किया। इस अवसर पर प्रदेश के गोविन्दमोहता,गोपाल मोहता जिला महिला मंडल सचिव, सीमा मालपानी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। महिला मंडल अध्यक्ष प्रति मालपानी सचिव सीमा लड्ढा समाज ट्रस्ट अध्यक्ष बंशीलालजी राठी, गोपाल बजाज आदि समाजजन मौजूद रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने पर घनश्याम राठी द्वारा समाजजनों का आभार माना।

फागोत्सव का किया आयोजन

बीकानेर। रंगों का त्यौहार होली का पावन पर्व श्रीकृष्ण माहेश्वरी मण्डल व स्थानीय सभी माहेश्वरी संस्थाओं के संयुक्त तत्वाधान में सम्पन्न हुआ। मण्डल अध्यक्ष नारायण बिहाणी व मंत्री गोपाल कृष्ण मोहता ने बताया कि कार्यक्रम के प्रथम दिन ८ मार्च को सायं ८ बजे से सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसके साथ समाज की नन्हीं बालिका वंशिका सोमाणी ने कालबेलिया नृत्य के साथ बेटी-बचाओ व बेची पढ़ाओं का संदेश देते हुए अपने नृत्यों की प्रस्तुति दी। इस दिन वुमेन-डे होने के कारण महिला समिति पूर्व अध्यक्षा रेखा लोहिया ने महिला सशक्तीकरण पर अपना उद्बोधन दिया। दूसरे दिन ९ मार्च (सोमवार) को चंग पर धमाल, होली के रसिया व फूलों की होली का कार्यक्रम आयोजित किया गया। माहेश्वरी समाज के प्रमुख गायक कलाकार नारायण बिहाणी, भतमाल पेड़िवाल, ओमजी करनाणी, नवरतन द्वारकाणी आदि ने टीम के साथ अपने भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का सफल संचालन पवन राठी ने किया। इस अवसर पर श्री प्रीति क्लब, माहेश्वरी शहर सभा, नवयुवक मण्डल, माहेश्वरी महिला समिति आदि स्थानीय संस्थाओं के सदस्यों के साथ ही कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

फाग उत्सव का आयोजन

रायसेन (म.प्र.)। माहेश्वरी महिला मंडल उदयपुरा जि.रायसेन म.प्र. द्वारा गत ८ मार्च को फाग उत्सव तथा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। ठाकुर जी की सुंदर झाँकी सज़ा कर फाग के गीत गाए और शीतल पेय वितरित किया गया। साथ ही वरिष्ठ महिलाओं का शाल श्री फल भेंट कर सम्मान भी किया गया ।

फूलों की होली का आयोजन

औरंगाबाद। श्री महेश वरिष्ठ नागरिक संस्था द्वारा होली के रंगन पर्व पर 'स्टैंडअप कॉमेडी नाइट' का आयोजन किया गया था। शुरुआत प्रमुख अतिथि एवं कार्यक्रम प्रायोजक प्रेमराज मंत्री, शोभा मंत्री, जिलाध्यक्ष सतीष लड्ढा, सी एस सोनी, वरिष्ठ संस्था अध्यक्ष डॉ सुभाष मालाणी, सचिव रामचंद्र दरक, महाराष्ट्र प्रदेश संयुक्त मंत्री संजय मंत्री आदि द्वारा की गयी। हर्षवर्धन मालाणी ने गीता पठन किया। तत्पश्चात् 20-20 स्टैंडअप कॉमेडी क्लब के कलाकारों द्वारा कॉमेडी नाइट की शुरुआत की गयी। समस्त कॉमेडिअन्स् को संस्था की ओर से स्मृतिचिन्ह देकर

सन्मानित किया गया। प्रायोजक प्रेमराज मंत्री व शोभा मंत्री का सत्कार संस्था के अध्यक्ष डॉ सुभाष मालाणी एवं द्वारका मालाणी ने किया। तत्पश्चात फुलों की होली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन रवि भट्टड एवं कोमल भट्टड ने किया। आभार प्रदर्शन वरिष्ठ नागरिक संस्था के सचिव रामचन्द्र दरक ने किया।

फागोत्सव का किया आयोजन

सूरत। माहेश्वरी महिला मंडल (मेन) द्वारा फागोत्सव हर्षोल्लास के साथ माहेश्वरी भवन सिटी लाइट में आयोजित हुआ। संस्था की अध्यक्ष प्रतिभा मोलासरिया ने बताया कि कार्यकारिणी सदस्याओं ने बॉलीवुड, फाल्गुनी, राजस्थानी घुमर, राधा कृष्ण, होलिया इत्यादि गीतों पर डांस की प्रस्तुति दी। चंग व फाग गीतों के साथ 300 सदस्याओं ने होली उत्सव भी मनाया।

फाग उत्सव का हुआ आयोजन

बलेरी। माहेश्वरी महिला समिति बरेली की बैठक होली मिलन समारोह एवं गनगौर उत्सव की रूपरेखा तैयार करने के लिये गत 05 मार्च को संरक्षक मंजू बियानी के निवास पर सम्पन्न हुई। इसमें महिलाओं ने एक दूसरे को गुलाल लगा कर फाग उत्सव भी मनाया । फिर 06 मार्च को प्रेमलता साबू के निवास पर होली के गीत एवं भजनों के साथ फूलों की होली खेल कर सभी ने फाग उत्सव का आनंद लिया। दोनो दिन सभी ने गर्मा-गर्म जलपान का भी आनंद लिया।

फागोत्सव का हुआ आयोजन

उज्जैन। कृष्ण भजन, फूलों और गुलाल के साथ फागोत्सव माहेश्वरी महिला मंडल और प्रगति मंडल के तत्वाधान में श्री नृसिंह मंदिर सराफा में मनाया गया। सभी सदस्याओं ने कृष्ण भजन एवम् होली के गीतों पर जमकर नृत्य किया। ठाकुरजी के साथ फूलों और अबीर गुलाल से होली खेली गई। इस अवसर पर रेखा लड्ढा, उषा भट्टड़, विनीता बियानी, रेखा काबरा, पुष्पा कोठारी, किरण साबू व मंगला बांगड़ आदि उपस्थित थीं।

फाग उत्सव के साथ मनाया महिला दिवस

उदयपुर (राज.)। माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा (बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ) स्मार्ट गर्ल कार्यक्रम साल भर के लिये प्रारंभ किया गया। माहेश्वरी महिला गौरव ने फाग उत्सव व होली स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें पुरुष व महिलाओं ने फूल की होली व तिलक होली खेल कर पानी की बर्बादी रोकने का संकल्प लिया। अध्यक्ष आशा नरानीवाल ने सभी का स्वागत किया। सचिव सीमा लाहोटी ने हाउजी व होली से संबंधित गेम्स खेलाये। विजेता टीम को कौशल्या गट्टानी व जनक बांगड़ द्वारा पारितोषिक दिया गया। इस मौके पर प्रदेश संगठन मंत्री सरिता न्याती व जिला अध्यक्ष मंजू गांधी, कला गट्टानी, रेणु मुंदड़ा उपस्थित थीं। संचालन रेखा देवपूरा द्वारा किया गया। महिला दिवस पर वरिष्ठ नागरिक क्लब 'मुस्कान' में कोरोना वाइरस से बचाव के उपाय के साथ ही सभी को लोंग, इलायची, कपूर, जावत्री की पोटली बनाकर सभी को वितरित की गई।

होली की धूम का हुआ आयोजन

वरंगल। स्थानीय मारवाड़ी समाज मे होली की धूम का आयोजन हुआ। कल सायंकाल समाज के भवन में सभी सदस्यों ने होली के मधुर भजन, ठंडाई, अल्पहार का कार्यक्रम आयोजित किया। रात्रि 7 बजे होली दहन का कार्यक्रम हुआ। सुबह समाज के भवन से दुण्ड का कार्यक्रम समाज गेरियों ने मिलकर पहले बैंक कॉलोनी में आयोजित हुआ। रमेश चंद रितेश बंग ओमप्रकाश नीलेश मालाणी, पवनकुमार मालोदिया, रामकिशन दामोदर डोडिया व प्रेमसुख राजेश तोषनीवाल का दुण्ड का कार्यक्रम होली के गीतों के साथ हुआ। सभी जगह अल्पाहार का कार्यक्रम रहा आयोजित हुआ।

होली मिलन

उज्जैन। माहेश्वरी समाज उज्जैन का होली मिलन समारोह "जितना ले थाली में व्यर्थ ना जाए नाली में" की थीम पर आयोजित हुआ। धुलंडी महापर्व के अवसर पर उज्जैन माहेश्वरी समाज द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में उज्जैन जिला माहेश्वरी समाज के निर्वाचित पदाधिकारी एवं पश्चिमाञ्चल में निर्वाचित पदाधिकारी व सदस्यों का सामाजिक अभिनंदन किया गया। सहभोज के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

योग मंडल ने किया होली मिलन

अमरावती। भारतीय योग अभ्यासी मंडल-अमरावती के सदस्यों ने गत 10 मार्च को सुबह 6 से 7 तक योगासन करने के बाद योगषज्ञ प्रो. सोहोनी तथा अध्यक्ष श्री गोसावी के साथ होली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत दीपार्चन, राजापेठ हाल में सुबह 6 से 7 तक किया गया।

गीता की पाठशाला का शुभारम्भ

हरियाणा। हरियाणा पंजाब प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष सुमन जाजु ने गत 27 फरवरी को अपने निवास पर हवन करवा कर गीता की पाठशाला का शुभारम्भ किया। इस पाठशाला में संगठन मंत्री सरोज शारदा, कार्यसमिति सदस्य नीता जाजू प्रादेशिक कार्यकारिणी सदस्य स्वीटी मंत्री, स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठन की उपाध्यक्ष कनक सोमानी, माहेश्वरी जिला सभा बहादुरगढ़ के अध्यक्ष दामोदर जाखोटिया एवं उपाध्यक्ष विकास शारदा आदि की विशेष उपस्थिति रही। इसमें गीता के श्लोकों की व्याख्या बहुत ही सुंदर रूप में पंडित राधेश्याम शास्त्री वृंदावन वाले द्वारा की गई। इस अवसर पर सदस्याओं ने लड्डू गोपाल के साथ फूलों की होली खेली। उक्त जानकारी प्रदेश सचिव सीमा मूंदड़ा ने दी।

गणगौर उत्सव का आयोजन

भरूच। माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गत 14 मार्च को गणगौर उत्सव का कार्यक्रम कोडियार काठियावाड़ रेस्टोरेंट में आयोजित किया गया। इसमें समाज की महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। अध्यक्ष ज्योति लड्ढा एवम् सचिव दीपश्री सोडानी ने बताया कि इसर- गौरा जोड़ी प्रतियोगिता, नृत्य, गेम्स, हाउसी आदि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अंकलेश्वर की श्रीमती प्रीती जाजू मुख्य अतिथि थीं।

ठंडे पानी की मशीन का शुभारम्भ

ओढव (अहमदाबाद)। "जल सेवा ही प्रभु सेवा है" के सिद्धांत पर श्री माहेश्वरी रामायण मंडल ओढव द्वारा रजत जयंति वर्ष पर राहगीरों के लिए एक ठंडे पानी की वॉटर कुलर मशीन का लोकार्पण लम्बे हनुमान के श्री रोकडीया टेबली कठवाडा के कर कमलों द्वारा 28 फरवरी को राजेंद्र पार्क चार रास्ता हनुमानजी के मंदिर पर किया गया। इसमें सुशील बेन-स्व. श्री रामगोपाल चौधरी का विशेष सहयोग रहा। मंडल सदस्य लक्ष्मी लाल झंवर, मणीलाल ईनाणी, चंद्र प्रकाश, जुगल किशोर, राकेश देवपुरा, रामगोपाल, मनोज, घनश्याम, सुरेश, शंकर इनाणी, रामचंद्र, सुरेश नंगवाडीया, राजकुमार, लक्ष्मीलाल मुरली देवपुरा आदि सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

सूरत। जिला माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा 11वे क्रिकेट टूर्नामेंट का भव्य स्तर पर आयोजन किया गया। इसमें सूरत जिले के ही करीब 500 युवा खिलाड़ियों ने भाग लिया। डे-नाइट होने वाले इस टूर्नामेन्ट में इस बार 38 टीम खेली। भव्य ट्रॉफी का विमोचन व खिलाड़ियों का आपसी स्नेह मिलन भी किया गया।

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

महिला दिवस पर किया नारी सम्मान

उज्जैन। महिला मंडल द्वारा संस्था अध्यक्ष हेमलता गांधी व सचिव मनोरमा मंडोवरा के नेतृत्व में पहली बार मंडल की सभी सदस्याओं का नारी शक्ति के रूप में महाकाल की तस्वीर भेंटकर दुपट्टे से सम्मान किया गया। सुभद्रा भूतड़ा व रमा लड्ढा का संस्था की वरिष्ठ सदस्य होने के तहत चाँदी का सिक्का प्रदान कर विशेष सम्मान किया गया। इसी कड़ी में महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में गोला मण्डी स्थित श्री चारभुजानाथ मंदिर में फाग उत्सव का भव्य आयोजन हुआ। सुंदर राधा-कृष्ण के रूप में ज्योति राठी, सीमा परवाल, रेखा मंत्री, उषा सोडानी शामिल थी। आयोजन में विशेष सहयोग शांता मंडोवरा, संगीता भूतड़ा, पुष्पा मंत्री, रूचि गाँधी, मनीषा राठी, मधु लड्ढा, रेणु इनानी, संगीता लाहोटी आदि का रहा।

मोक्षदा न्यायिक सेवा में चयनित

जोधपुर (राजस्थान)। समाज सदस्य गिरधर लाल नांदेड़ की सुपुत्री मोक्षदा का हाल ही में राजस्थान न्यायिक सेवा के लिए चयन हुआ है। उल्लेखनीय है कि मोक्षदा शुरूआत से ही प्रतिभावान रही। उन्होंने सन 2011 में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर से प्रथम श्रेणी के साथ लेखांकन में बी.कॉम. (ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की। सन् 2014 में कम्पनी सचिव की परीक्षा उत्तीर्ण कर सन् 2015 में प्रथम श्रेणी में एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। वर्तमान में मोक्षदा ने 44वें स्थान के साथ राजस्थान न्यायिक सेवा (RJS) में सफलता प्राप्त की है।

मोहता आदर्श महिला अवार्ड से सम्मानित

नागपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन एवं माहेश्वरी महिला समिति नागपुर द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आदर्श महिला अवार्ड से सम्मानित किया गया। सन 1984 से लगातार 35 वर्षों से, स्थानीय माहेश्वरी महिला समिति की संस्थापक सचिव से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक सक्रियता से समाज कार्य करने एवं स्वयम् सिद्धा बहुमूल्य सेवा समाज को समर्पित करने हेतु श्रीमती मोहता को इस अवार्ड से सम्मानित किया गया। सन 2011में महाराष्ट्र शासन, महिला व बाल विकास द्वारा अहिल्याबाई होलकर अवार्ड, विभिन्न संस्थाओं द्वारा 50 से अधिक नेशनल अवार्ड, आईजेसी द्वारा 1999 में नेशनल अवार्ड तथा अन्य कई नेशनल व इंटरनेशनल अवार्ड से भी श्रीमती मोहता को पुरस्कृत किया जा चुका है।

जिला सभा की वार्षिक बैठक संपन्न

सूरत। जिला माहेश्वरी सभा के छटवे सत्र की प्रथम वार्षिक बैठक माहेश्वरी भवन में सम्पन्न हुई। गुजरात प्रदेश सभा अध्यक्ष गजानन्द राठी एवम संगठन मंत्री विनीत काबरा ने मार्ग दर्शन किया। निर्विरोध एवम नव निर्वाचित जिला सभा एवम उसके अन्तर्गत 12 क्षेत्रीय सभाओ के गठन के लिए सभी चयनित सदस्यों को बधाई दी। जिला अध्यक्ष अविनाश चाण्डक ने निज पर शासन - फिर अनुशासन का पालन करते हुए समाज सेवा करने और समाज को समय देने की स्वयं ने शपथ ली तथा जिला सभा के सभी पदाधिकारिओ को भी शपथ दिलवाई।

महिला मंडल ने किया मेला का आयोजन

अमरावती। सचिव संगीता टवानी व कोषाध्यक्ष गायत्री सोमानी के नेतृत्व में माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गत 8 मार्च को मेला 2020 का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महिला दिवस, होली और गणगौर मिलन समारोह आयोजित हुए। साथ ही आनंद मेला का भी सभी ने लाभ उठाया। इसमें सदस्याओं ने विभिन्न विषयों पर नृत्य आदि की रंगारंग प्रस्तुति दी। अंकिता काकाणी और नीता मूंधड़ा ने सफलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया।

महिला दिवस पर निकाला ऐतिहासिक भव्य मार्च पास्ट

नारी सशक्तिकरण के साथ दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

भीलवाड़ा। नगर माहेश्वरी महिला संस्थान के तत्वाधान में दुनिया की आधी आबादी के उत्सव अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर माहेश्वरी समाज की 600 से अधिक महिलाओं ने अध्यक्ष भारती बाहेती व मंत्री रीना डाड के नेतृत्व में विभिन्न जीवंत किरदारों का चित्रण करते हुए संचलन निकाला। यह नगर परिषद सभागार से प्रारंभ हुआ। इसके द्वारा महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण के साथ स्वच्छता का संदेश भी दिया।

संचलन के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन सभापति मंजू चेचानी, यातायात प्रभारी पुष्पा कासोटिया, शिखा भदादा, अनिला अजमेरा, सीमा कोगटा, प्रीति लोहिया द्वारा किया गया। सभी गणमान्य अधिकारी एवं पदाधिकारियों ने केसरिया झंडा दिखाकर रैली को रवाना किया। मार्च पास्ट का विभिन्न क्षेत्रीय सभाओं व नगर सभा द्वारा मार्ग में भव्य पुष्पवर्षा से स्वागत किया गया। महिलाओं के सम्मान में वन्दे मातरम के नारे लगाए गये जिसने महिलाओं के जोश को दुगुना कर दिया। महेश बचत एवं साख समिति द्वारा बैंड भी सम्मिलित किया गया जो विशेष आकर्षण का केंद्र था। साथ ही रैली के आगे बैंड की धुन पर गाड़ी चल रही थी फिर केसरीया ध्वज लिए महिला शक्ति थी व बाद में नगर माहेश्वरी महिला संगठन के साथ सभी क्षेत्रीय महिला संगठन अपने अलग अलग किरदारों में संदेश देते हुए कदमताल कर रही थीं। अंत मे आदर्श विद्या मंदिर की 50 बालिकाओं ने भी विशेष पोशाक में पथ संचलन में भाग लिया।

ये भी थे उपस्थित

इस अवसर पर शहर के विभिन्न गणमान्य अधिकारी एवं माहेश्वरी समाज के सभी पदाधिकारी उपस्थित थे। इनमें मुख्य अतिथि सुभाष बहेडिया, विशिष्ट अतिथि मंजू चेचानी, प्रदेश अध्यक्ष कैलाश कोठारी, सत्येंद्र बिरला, दीनदयाल मारू, देवेंद्र सोमानी, ओम प्रकाश नरानीवाल,राजेंद्र कचोलिया,अतुल राठी, राधेश्याम चैचानी, प्रदीप पलोड, राघव कोठारी, महावीर समदानी, शोभा भदादा, वीणा राठी, मधु जाजू एवं सभी क्षेत्रीय सभाओं के अध्यक्ष व मंत्री शामिल थे। इस अवसर पर गायक कलाकार सुनील एवं सविता काबरा ने महिला सशक्तिकरण पर उत्साह से ओतप्रोत गीत प्रस्तुत किया, जिससे सभी श्रोतागण झूम उठे। मधु मोदी द्वारा अपनी ओजस्वी वाणी से शक्ति एवं साहस से परिपूर्ण कविता प्रस्तुत की गई।भारती बाहेती ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।अंत में राष्ट्र गान के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

पर्यावरण संरक्षण का भी दिया संदेश

बालिकाओ द्वारा विभिन्न स्लोगन बिजली बचाओ, क्लीन व ग्रीन भीलवाडा, पानी बचाओ, अलख जगाओ, प्लास्टिक मुक्त हो भीलवाडा, रक्तदान महादान आदि संदेश दिए गए। इस अवसर पर प्लास्टिक मुक्त भारत का संकल्प भी लिया गया। मार्च पास्ट में महिलाओं में बड़ा उत्साह था। डॉक्टर बनी टीम ने कोरोना वायरस से बचाव का संदेश भी दिया। विभिन्न किरदारों में महिलाओं ने वेशभूषा पहन रखी थी जिसमे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कैप्टन, पायलट, मदर टेरेसा, डॉक्टर, टेनिस खिलाड़ी, क्रिकेट खिलाड़ी, वकील, रानी पद्मावती, न्यायालय, ग्रहणी, सेना की तीनों शाखाओं का वेश धारण किए महिलाओं ने सशस्त्र महिला सेना के शौर्य को भी प्रस्तुत किया। आभार रीना डाड ने व्यक्त किया।

माहेश्वरी फोरम ने किया स्टेशनरी वितरण

सुभाषचंद्र उच्च माध्यमिक विद्यालय में माहेश्वरी प्रोफेशनल फोरम एवं भास्कर की पहल से बने स्टेशनरी बैंक से अब तक 500 से अधिक जरूरतमंदों को स्टेशनरी वितरण किया जा चुका है। बैंक प्रभारी महेश देवपुरा के अनुसार मुकेश जागोटिया प्रदीप लाठी एवं कौशल्या तोषनीवाल उपस्थित थी। इनरव्हील क्लब ने गर्भवती का महिला दिवस के उपलक्ष्य में सम्मान किया। संदेश दिया कि गर्भ में पल रहे बच्चा चाहे वह बेटा हो या बेटी लिंग से कोई फर्क नहीं पड़ता। संस्कार से फर्क पड़ता है। क्लब से अध्यक्ष उषा ठाकुर, मंजू नागौरी, प्रियंका गुप्ता, रीना गुप्ता, कविता सिंह, स्नेहलता पोखरना, मनोरमा गोयल, पदमा बावेल, रीता गोयल, भावना जैन, माधवी, बरखा चतुर्वेदी, संगीता सेठ, लक्ष्मी नायर एवं आरती कोगटा आदि उपस्थित थीं।

बागड़ी बने प्राइड बुक एम्बेसडर

नागपुर। स्व. वरिष्ठ समाज सेवी शरद गोपीदास बागडी को विदर्भ प्राईड बुक ऑफ रिकॉर्ड द्वारा पूरे विदर्भ का ब्रांड एंबेसडर घोषित किया गया है। विदर्भ प्राईड बुक ऑफ रिकार्ड की शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक आदरणीय डॉं. मोहनजी भागवत, सुप्रीम कोर्ट के शरद बोबड़े द्वारा की गयी। उल्लेखनीय है कि ब्रैवो इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्डस द्वारा शरद गोपीदासजी बागडी को उत्कृष्ट लेखन व 1976 से सतत समाज सेवा हेतु प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। ब्रैवो इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड में शरद गोपीदासजी बागडी का नाम मनोनीत किया गया।

कार्यशाला का हुआ आयोजन

अजमेर। माहेश्वरी सेवा समिति कृष्ण गंज अजमेर के सानिध्य में और अजमेर महिला मंडल के सहयोग से अजमेर शहर में प्रथम बार निसर्गोपचार व अपक्व भोजन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिला अध्यक्ष अनीता सोमानी ने बताया कि इसमें मुंबई की डॉ अंजना राठी ने निसर्गोपचार, शरीर विज्ञान, बीमारियों व पोषक तत्वो के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला में समिति अध्यक्ष बीपी राठी और सचिव एसबी माहेश्वरी का विशेष प्रयास रहा। इस कार्यशाला में बेला मूंदड़ा, प्रभा लखोटिया, संगीता झंवर, मधु मंत्री, अंजू जाजू, सुधा मालू, मधु झंवर के साथ अनीता सोमानी की भी सहभागिता रही।

होली मिलन आयोजित

पाली। श्री माहेश्वरी महिला संगठन की महिलाओं एवं युवतियों द्वारा होली स्नेह मिलन का आयोजन किया गया।इस समारोह में नव निर्वाचित कार्यकारिणी का स्वागत किया गया। नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई। लकी ड्रा सरप्राइज गेम एवम अजीज कोहिनूर के गीतों ने कार्यक्रम में समा बांधा।विमला जाजू, उर्मिला तापड़िया, प्रेमलता मानधना एवम मधु बाहेती विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। अध्यक्ष शांति कासट ने बताया कि पुष्पा बाहेती, निर्मला फोफलिया, सरला काबरा, नीता धूत, पुष्पा राठी, पूजा बिड़ला, आभा सोनी, आदि कई सदस्याऐं उपस्थित थीं।

गट्टानी अध्यक्ष व तुरकिया मंत्री

मांडलगढ। माहेश्वरी युवा संगठन के निर्विरोध चुनाव गत दिनों हुए। इसमें अध्यक्ष नितीश गट्टानी को चुना गया साथ ही कार्यकारिणी का गठन भी किया गया। इसमें मंत्री हेमंत तुरकिया, उपाध्यक्ष मुकेश कास्ट एवं लोकेश नामधराणी, कोषाध्यक्ष शिव अठवानी, संगठन मंत्री दुर्गेश लड्ढा व कार्यकारिणी सदस्यों में विशाल सोनी, अनुज लड्ढा, संदीप सोमानी, संगम भंडारी, दिलीप झंवर, लोकेश भंडारी, मनीष लड्ढा सर्वसम्मति से चुने गए। चुनावी प्रक्रिया गोवर्धन लाल झंवर व तहसील मंत्री मानसिंह मूंदड़ा ने सम्पन्न करवाई। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष ओम प्रकाश लड्ढा, मुरली मनोहर गट्टानी, गोपाल मूंदड़ा, विनोद सोनी, जीवन असावा, बसंत लड्ढा सहित समाज के अनेक गणमान्य जन मौजूद थे।

अनन्या ने बनाया रिकार्ड

दुर्ग। छत्तीसगढ़ से महासभा कार्यसमिति सदस्य एवं छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के निवृत्तमान अध्यक्ष विट्ठल भूतड़ा की दोहिती अनन्या राठी ने अपना नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज कराया है। उन्हें यह उपलब्धि नम्बरर 1 से 31 तक के वर्ग को 2 मिनट 36 सेकंड में बोलने व लिखने के कारण प्राप्त हुई। अनन्या, सीनियर के जी की विद्यार्थी है व उनकी उम्र मात्र 5 साल 8 महीने है। अनन्या 80 नम्बर तक के वर्ग को सेकण्ड्स में बताने में कुशल है। वह खामगांव के प्रतिष्ठित व्यवसायी अक्षय राठी एवं दुर्ग की बेटी चंचल की सुपुत्री है। अनन्या की इस उपलब्धि पर राठी परिवार, खामगांव एवं भूतड़ा परिवार दुर्ग ने हर्ष व गौरवान्वित अनुभव करते हुए कहा कि छोटी सी बिटिया ने बड़ा कार्य किया है, लगातार शुभचिंतकों एवं परिजनों के बधाई संदेश प्राप्त हो रहे हैं जिसने खुशी के उत्साह को दोगुना कर दिया है।

अंजली बीफार्मा में अव्वल

भीलवाड़ा। अंजली बसेर सुपुत्री अशोक कुमार बसेर ने बी.फार्मेसी में पूरे मेवाड़ प्रांत में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके लिये गत 1 मार्च 2020 को उदयपुर सिटी पैलेस में इसरो के पूर्व चेयरमैन कस्तरी रंजन एवं मेवाड़ महाराणा अरविंद सिंह मेवाड़ द्वारा उन्हें सम्मानित किया

बनेड़ा तहसील में दिया मार्गदर्शन

भीलवाड़ा। जिला माहेश्वरी महिला संगठन की बनेड़ा तहसील का दौरा जिला अध्यक्ष सीमा कोगटा एवं सचिव प्रीति लोहिया द्वारा किया गया। इसमें मंडल की गतिविधियों के बारे में जानकारी देने के बाद कार्यकारिणी की रूपरेखा भी बताई। भारतीय संस्कृति के महत्व को बताते हुए रीति-रिवाजों एवं त्योहारों पर होने वाले फिजूल खर्चों को कम से कम करने का भी आग्रह किया। साथ ही उन्हें जिला माहेश्वरी महिला संगठन से भी जोड़ा गया। इस कार्यक्रम में प्रदेश निवर्तमान उपाध्यक्ष सुनीता बल्दवा एवं जिला सह सचिव राधा न्याति का भी सहयोग रहा। जिलाध्यक्ष सीमा कोगटा द्वारा स्वच्छ भारत के तहत पॉलिथीन का कम से कम उपयोग करने की महिला मंडल को शपथ भी दिलाई। इस अवसर पर बनेड़ा की चंदा लाठी, सुमन न्याति, डिंपल न्याति, ममता नुवाल, अंजु बांगड़, मुन्नी देवी काबरा एवं स्नेह लता गगरानी आदि उपस्थित थी।

कोरोना पर स्वास्थ्य कार्यशाला

जोधपुर। स्थानीय महिला संगठन (उत्तरी क्षेत्र) द्वारा स्वास्थ्य एवं परिवार समरसता समिति (महिला स्वस्थ-परिवार स्वस्थ) के तहत कार्यशाला का आयोजन गत 6 मार्च को किया गया । इसमें डॉ. किरण सारड़ा (होम्योपैथिक विशेषज्ञ) और डॉ. मंजू गुप्ता (स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ) द्वारा वर्तमान में तीव्रता से फैल रही कोरोना वायरस , कैंसर, थॉयराड, श्वेत प्रदर, गठियाँ, विटामिन ए, यूरिन इनफेक्शन एवं यूरिन लिकेज जैसी बिमारियों के कारण एवं निवारण बताए गए। संगठन अध्यक्ष लता राठी ने बताया कि कैसे छोटे छोटे संकेतो को इग्नोर ना करते हुए स्वयं ही उन सिनटम्स को समझ कर तुरंत टेस्टिंग एवं चेकअप करवाएँ। कार्यक्रम मे मंजू लोहिया,मीना साबू,राजू मुथा,संतोष भूतडा,वर्षा लोहिया आदि सदस्यों ने सहयोग दिया।

'मिशन 50' का संचालन

पाथर्डी। अहमदनगर जिला माहेश्वरी सभाद्वारा 'मिशन आयएएस 50' हेतू जिलेमे संपर्क अभियान चल रहा है। माहेश्वरी समाज के जिलाध्यक्ष अनिष ने बताया कि इस भ्रमण में जिलाध्यक्ष मणियार के साथ मानद मंत्री अजय जाजू, अर्थमंत्री अनिल भट्टड, युवा जिल्हाध्यक्ष सागर राठी, संयुक्त मंत्री सतीश बाहेती, मिशन 50 जिला समन्वयक रामेश्वर बिहाणी व आनंद आसावा सम्मिलीत थे।जिला संयुक्त मंत्री सतीश बाहेती ने आभार प्रदर्शन किया। बैठका का संचालन मानद मंत्री अजय जाजू ने किया। प्रदेश कार्यसमिति सदस्य नंदकिशोर सारडा, जिला सह मंत्री विजय दरक, जिला संगठन मंत्री दिलीप मुंदड़ा, शेवगाव युवा संगठन के अध्यक्ष रमण बिहाणी, कन्हैया सारडा, मंजुश्री धुत, मधुमती धुत, अध्यक्ष प्रकाश लढ्डा, मंत्री जगदीश मानधने तथा युवा संगठन, महिला संगठन के पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

शोभा यात्रा का स्वागत

निजामाबाद। माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा आयोजित श्री रामकथा की शोभायात्रा का निजामाबाद जिला माहेश्वरी युवा संगठन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा स्वागत किया गया। युवा संगठन के सदस्यों ने सभी भक्तों को जलपान करवाया। अध्यक्ष श्रीकांत झंवर ने युवा संगठन की ओर से साध्वी समाहिता का पुष्पकुच्च देकर आशीर्वाद प्राप्त किया। संगठन मंत्री अभिषेक जाजू ने बताया कि श्रीकांत झंवर, अनुप मालू, अनुराग भांगडिया, राजगोपाल बंग, मधुसूदन मालू आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा

शास्त्रोक्त
आयुर्वेद सिद्धांतोंपर आधारित निर्माण प्रक्रिया

मानकीकृत
आयुर्वेद एवं आधुनिक निकषोंपर मानकीकृत

सुरक्षित
तीव्र, जीर्ण विषाक्तता एवं जीनो टॉक्सिसिटी स्टडिज

उपयुक्त
जीर्ण एवं जटिल विकारों में भी उत्तम लाभकर

बोलो रे भाईडा मायड भाष माँय बोलो

दरेक व्यक्तिने आपणो देश, अपणी भाषा, अपणो खानदान, अपणी संस्कृती उपर गर्व होणो चाहिजे। अपणी भाषा मारवाडी खिचडी भाषा होय गई है। ना शुद्ध हिन्दी, न मराठी, न मारवाडी, ना अंग्रेजी सवारी मिसल होय गई है। जीमण में जेसो कालो करा हां, वेसी भाषा ओंरी भेल बण गयी है। आपा कठे गलती कर रयां हां, आ भी समझ नहीं पड़ रही इतनो पाको जोड होय गयो हे। आपणी मायड भाषा घरां माँय भी मायड भाषा रो उपयोग पिछडोपन केवीजे। बोलणा मांय बीच-बीच में अंग्रेजी शब्दारों उपयोग फॅशन बणगी हे। माँ शब्दमाय आपणोपन रेवे माँ शब्द में जो शक्ति हे वा मॉम-मम्मी बोलणा में नही। मायड भाषा बोलणारी शरम नही गर्व होणी चाहिजे। पण आपां तो अपनो परिवार, अपांरो समाज रे लोगा सूं भी अपनी मायड भाषा माँय बोलणमें कतरावां मन माँय सूं हीन भावना निकालणरी महती गरज हे। राजस्थान मांय राजस्थानी ने राजभाषा री मान्यता मिली हे पण राजकारण में ही नहीं समाजकाज में भी उपयोग नहीं करां। आपणी मायड भाषा री विडबंना अपाईंच करां, तिरस्कार कर रयां हां, सरकार कांई करसी?

महाराष्ट्र मांय मराठी राजभाषा हे। सरकारसुं सारो व्यवहार, कानून-कायदा मराठी में बणीयां हे। मराठी में भी राजस्थानी जेसा कई प्रकार हे। कोकणी, मुम्बईया, पुणेरी, बन्हाडी, खानदेशी, मराठवाडी, खानदेशी हे। शब्द उच्चारण, बोली अलग-अलग है। आईच बात राजस्थान री हे। छोटी मारवाड, बडी मारवाड, जेसलमेरी, बीकानेरी, मेवाडी, शेखावरी, हाडोती इसा बोलीरा घणा प्रकार हे। बोली अलग-अलग हे पण भाषा मारवाडी-राजस्थानीच हे। सबसुं उंची, मीठी मनभावनी जोधपूरी बोली हे। देवनागरी-मोडी जेसी लीपी और जेसो लीखाण हे वेसाईच उच्चारण हे। अंग्रेजी में लिखाण और अच्चारण अलग-अलग रेवे।

मायड भाषा माँय वार्ता सूं अपणा विचार सुस्पष्ट होवे। आपनोपन लागे। मनरीबात आपनी भाषा में करणा सुं मन प्रसन्न होवे। उपहासात्मक सही मारवाडी भाषा रो उपयोग हिन्दी चलचित्रों माँय हूया करे। दिसावरी लोक सूणे तो लोट-पोट होय जावे इतनी शक्ति मायड भाषा में हे। घणी चिंता और सोच री बात है मायड भाषा सामाजिक वार्तालाप सूं लुप्त होय गयी और घरमांयसू भी होय रही हे। गत 3/4 पीढीसूं टाबर अंग्रेजी स्कूलां में प्रवेश ले रया हे। तो बच्चासूं अंग्रेजी और ग्रामीण क्षेत्रमांय हिन्दी में बात करें। जुना पीढ़ी का कुछ बुजुर्ग जीका घर में हे वे फगत मायड भाषा में बोले। इसीच स्थिति बणी रही तो आने वाला दशकां मांय मारवाडी बोली लुप्त होय जासी। जीणारी मायड भाषा नहीं रहसी उणारी संस्कृती और विशिष्ट पहचान भी खत्म हो जासी। सौ बरसां में मारवडीयों री जनसंख्या पेलाइच आधी सूं भी कम हो गई हे। 1 या 2 टाबरच रेणासुं और भी कम या स्थिर रहसी। समाज में हम दो हमारा दो नहीं तीन री बात चल पड़ी है। दो रा दो वाला भी कम होता जाय रया हे, हम दो म्हारो एक वालो चलण सुरु रह गयो तो ना मायड भाषा रहसी ना मारवाडी रहसी।

मायड भाषा और मारवाडी कायम रेवणो चाहिजे। नहीं तो पारसी समाज जेसो हाल हूसी। सबसूं पेला पति-पत्नी ने घरमांय और समाज मांय मारवाडी में च वार्तालाप करणो जरूरी हे। माँ-बाप मायड भाषा में बात करसी तो उणारा टाबर भी मायड भाषा अपने आप सीख जासी। घर में और समाज में मायड भाषा मांय बोलचाल करणासूं आपनी भाषा, संस्कृती, अपनी परंपरा, रीति-रिवाज भी कायम रहसी। अपणी सभ्यता, आपणी विशिष्ट ओलीखाण जिंदा रेवेला। म्हाने दुसरी भाषा रो विरोध नहीं हे। बस इतनोइच केवणो हे की राष्ट्रभाषा हिंदी, प्रादेशिक भाषा मराठी, मायड भाषा मारवाडी और एक विदेशी भाषा अंग्रेजी जरुर आणों चाहिजे। सरकार री भी आईच नीति हे। आपणी मायड भाषा सूं संस्कृती री जड मजबूत बणसी।

खासकर म्हारी महिला, युवतीयां और नवपरिणतासूं प्रार्थना हे वे घरमें मायड भाषा ने मान देवे। सामाजिक कार्यक्रमों में मारवाडी भाषा रो उपयोग होणो जरुरी है। गुजराती, सींधी, पंजाबी, बंगाली, मराठी, तेलगु और भारत देश के हर प्रांत रा लोग अपनी अपनी मायड भाषा रो उपयोग करने में संकोच नहीं करे। आओ आज आपां एक संकल्प करां, म्हे घरमें मायड भाषा में च बातचीत करांला। एक बात याद राखज्यों भाषा रेवेला तो संस्कृती रहसी, समाज रहसी।

फाग उत्सव सम्पन्न

अमरोहा। स्थानीय माहेश्वरी सभा की तरफ से फाग महोत्सव का कार्यक्रम सारस्वत धर्मशाला बड़ा बाजार अमरोहा में धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि कमलेंद्र कुमार माहेश्वरी अध्यक्ष एवं सुभाष चंद्र बाहेती प्रदेश मंत्री द्वारा आरम्भ किया गया। कार्यक्रम में छोटे बच्चों, महिला मंडल की महिला सदस्यों तथा युवा मंच के द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रदेश मंत्री सुभाषचंद्र बाहेती ने महासभा द्वारा संचालित सभी ट्रस्टों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन प्रीति मालीवाल एवं राहुल माहेश्वरी एडवोकेट ने किया। शिव कुमार माहेश्वरी विनय बाहेती राजेंद्र लखौटी विनय लखौट, रजत मालपानी, वैभव खटोड़, शिखा खटोड़ आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

गेट टॉपर बने प्रियांशु

धनबाद। आईआईटी आईएसएम से बीटेक माइनिंग इंजीनियरिंग के फाइनल सेमेस्टर के छात्र प्रियांशु माहेश्वरी गेट माइनिंग में ऑल इंडिया टॉपर बने हैं। प्रियांशु के लिए यह उपलब्धि खास है क्योंकि वे गरीब परिवार से हैं। राजस्थान के उदयपुर निवासी प्रियांशु के पिता दिनेश माहेश्वरी मार्बल फैक्ट्री में मजदूर व मां कैलाश देवी गृहिणी है। ऐसे में यह समझा जा सकता है कि प्रियांशु ने संघर्ष करते हुए यह मुकाम हांसिल किया है। 11वीं व 12वीं की पढ़ाई में थोड़ी परेशानी हुई। उसके बाद जेईई में पूरे भारत में 6051 रैंक हासिल कर आईआईटी धनबाद में नामांकन लिया। यहां पर स्कॉलरशिप ने उनकी पढ़ाई की राह आसान की। बड़ा भाई एमकॉम व छोटा भाई जेईई की तैयार कर रहा है। प्रियांशु का कैंपस चयन टाटा स्टील में हो चुका है। गेट में बेहतर करने के बाद पीएसयू में मौका मिलेगा।

पुरानी यादों का कोई पहरेदार नहीं होता...
बचपन की शाम जैसा अब इतवार नहीं होता...

॥ जय श्री कृष्ण ॥

भगवान श्रीकृष्ण की ब्रजभूमि गोवर्धन में परिक्रमा मार्ग में 'श्री गिरिराजधरण माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट' द्वारा संचालित अत्याधुनिक सुविधायुक्त माहेश्वरी भवन

माहेश्वरी भवन, गोवर्धन

आन्योर परिक्रमा मार्ग, दानघाटी के पास, गोवर्धन 281502 (उ.प्र.)
दूरभाष- 0565-2815832, मो. 88591-11222
www.mbgoverdhan.com
E-mail : mbgoverdhan@gmail.com

आप अपना आरक्षण ऑन लाईन अथवा फोन से करवा सकते हैं

उपलब्ध सुविधायें

- 26 डीलक्स ए.सी. कमरे (डबल-बेड) इन कमरों में ए.सी., गीजर, मिनिफ्रीज, डिजिटल लॉकर, टॉविल आदि की सुविधायें
- 26 एसी कमरे (डबल बेड) गीजर की सुविधा सहित।
- 4 ए.सी. कमरे (3 बेड) गीजर की सुविधा सहित।
- 2 एसी मिनी हॉल (10बेड)
- 46 कूलर युक्त कमरें (डबल बेड)
- 2 मिनी हॉल (6बेड) एयर कूलर सहित
- 1 डोरमेट्री (24बेड) एयर कूलर सहित
- 1 एसी डाइनिंग हॉल एवं किचन
- सभी कमरों में अटेच लेट-बॉथ की सुविधा।
- सत्संग हॉल 200 व्यक्तियों की बैठकर कथा सुनने की व्यवस्था (शीघ्र एसी युक्त होगा)
- 2000 स्क्वेयर फीट का किचन एवं डाइनिंग हॉल निजी उपयोग के लिये, जिसमें यात्री अपने रसोइयों द्वारा भोजन बनवा सकते हैं।
- दोनों भवनों में लिफ्ट की सुविधा।
- कारों एवं बसों की सुरक्षित पार्किंग का स्थान।
- पॉवर कट के समय निरंतर विद्युत सप्लाई के लिये 125 केवीए एवं 25 केवीए के जनरेटर।

बजरंगलाल बाहेती (अध्यक्ष)
मो.- 98290-79200
विनोद कुमार बांगड (महामंत्री)
मो. 094142-12835
जुगल किशोर बाहेती (कोषाध्यक्ष)
मो. 98291-56858

श्री द्वारिकाधीश विजयते

भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि

द्वारकाधाम

में 'श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट' द्वारा संचालित अत्याधुनिक सुविधायुक्त एकमात्र माहेश्वरी अतिथि गृह

माहेश्वरी सेवा कुंज

21, द्वारकेश पार्क सोसायटी (अम्बुजा प्लाट), नागेश्वर रोड,
देवभूमि द्वारका-361335 (गुजरात),
दूरभाष- 02892-235553 / 235554, मो. 097271-22111
E-mail : maheshwarisewakunj@gmail.com

उपलब्ध सुविधायें

- ए.सी. व टी.वी. से सुसज्जित 47 डबल बैडरूम (अटैच्ड लैट, बॉथ)।
- 4 फैमिली ए.सी. हॉल (6 व्यक्तियों की क्षमता वाले)।
- अत्याधुनिक किचन के साथ वातानुकुलित भोजनशाला।
- वाई–फाई सुविधा से युक्त पूरा भवन
- विभिन्न मंजिलों पर जाने के लिये दो लिफ्ट की सुविधा।
- स्वच्छ आर ओ पेयजल की सुविधा
- भव्य एयरकंडीशन सत्संग हॉल।
- कार पार्किंग की सुरक्षित व्यवस्था।

श्यामसुंदर कासट
अध्यक्ष
मो.- 098315-55555
रामस्वरूप जैथलिया
कार्यकारी अध्यक्ष
मो.- 096490-79999
विनोद कुमार बांगड
महामंत्री
मो. 094142-12835
गोविंद गोपाल सोनी
कोषाध्यक्ष
मो. 98240-26961

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है
इसका सही समाधान

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Registration Free

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agrawal2agrawal.org

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

कला साहित्य की 'सुहासिनी' स्वाति मानधना

लोग कला व साहित्य को अलग-अलग नजरिये से देखते हैं, लेकिन हकीकत देखे तो दोनों एक ही सृजन के पथ है। ऐसे ही दोनों क्षेत्रों में एक साथ अपने सफलता के पथ पर अग्रसर हो रही है, पाक कला विशेषज्ञ व साहित्यकार स्वाति रामचंद्र मानधना। आईये जानें उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी।

मेरा जन्म समाज सेवी परिवार में हुआ। शुरुआत से ही मैंने अपने दादाजी सांवलराम सोमानी को समाज के लिए तत्पर देखा। वे माहेश्वरी समाज, ब्यावर के अध्यक्ष पद पर भी रहे। हरिद्वार, पुष्कर, ब्यावर आदि जगह उन्होंने माहेश्वरी भवन निर्माण में यथासंभव सहयोग दिया। मेरे पिताजी श्याम सुंदर सोमानी समाज के कोषाध्यक्ष रह चुके हैं। माँ सुशीला देवी एक आदर्श महिला थीं। वह हस्तकला जैसे सिलाई, बुनाई-कशीदाकारी, पेंटिंग आदि में निपुण थीं। यह सारे हुनर मैंने अपनी माँ से सीखे। मेरी बड़ी बहन रश्मि साबू ने मेरे लिए हमेशा एक सुरक्षा कवच की तरह काम किया और मुझे भरपूर दुलार दिया। बचपन मेरा दिल्ली में बीता। प्रारंभिक शिक्षा कानपुर में हुई। उसके बाद की शिक्षा ब्यावर से ग्रहण की। बीकॉम में मैंने पूरे ब्यावर में तीसरा स्थान प्राप्त किया। पढ़ाई के दौरान काफी सहेलियां बनी जिनसे आज भी जुड़ाव है।

बचपन से ही कला साहित्य की शुरुआत

कुकिंग का शौक मुझे बचपन से ही था। रोज नित नई चीजें बनाती थी। मेरी बनाई हुई रेसिपी अनगिनत बार अखबारों में छपी व गिफ्ट हैंपर जीते। विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे गायन,पाककला, सलाद सज्जा, क्राफ्ट संबंधित, पैकिंग, पूजा थाली सजावट, निबन्ध, नृत्य, प्रांतीय वेशभूषा, राखी मेकिंग, मंनोरंजक गेम आदि में अनेकों इनाम प्राप्त किए। पिताजी ने अपनी लिखी हुई एक कविता मुझे दिखाई। उस दिन से ही मुझे लिखने का शौक चढ़ गया। उस समय दो चार कविताएं व लेख लिखे। वे अखबार में भी छपे। लेकिन उसके बाद जिंदगी का दूसरा पड़ाव शुरू हो गया। ससुराल भी मुझे खानदानी मिला। समय बीता और ईश्वर ने दो फूलों से मेरी झोली को भरा। मैंने जीवन का व्यवहारिक ज्ञान मेरी सासू माँ से सीखा। कुछ साल ऐसे ही निकल गए मन मचल रहा था कुछ करके दिखाने को।

सेवा के साथ व्यवसायिक पथ पर भी कदम

मन में कुछ नया करने की चाह ''टप्परवेयर'' की ओर ले आयी। एक दिन ऐसा आया कि मैंने मैनेजर व ग्रुप मैनेजर का पद पाया। 7 वर्षों तक ट्यूशन ली। कुकिंग क्लासेस ली। समर कैंप लगाए। समाज के कार्यक्रमों में मेरी शुरू से ही रुचि थी और मैं सक्रिय थी। 27 अप्रैल 2014 को मुझे माहेश्वरी महिला मंडल का अध्यक्ष घोषित किया गया। इतनी कम उम्र में अध्यक्ष पद पाने वाली मै प्रथम महिला थी। सामाजिक स्तर पर वे सभी कार्य किए जो पहले कभी नहीं हुए ।5 वर्षों तक चले

कार्यकाल में बालोतरा माहेश्वरी समाज को एक नई पहचान दिलवाई । वर्ष 2014, 2015 व 2017 में महिलाओं के लिए महेश मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य महिलाओं को स्वावलंबी व आत्मनिर्भर बनाना था। इसमें सभी जाति व समुदाय की महिलाओं को शामिल किया। तीन बार ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन शिविर का आयोजन महिलाओं व बालिकाओं के लिए किया गया ताकि वे अपनी कला को निखार सकें और उनके लिए रोजगार का मार्ग प्रशस्त हो। इस प्रयास को भी बालोतरा स्तर पर सभी के लिए किया गया। इसके अलावा त्योहारों को परम्परा के साथ मनाते हुए उसमें आधुनिकता का समावेश किया गया ताकि नई पीढ़ी भी उससे जुड़ाव महसूस कर सकें।

सफलता का सफर जारी

त्योंहार हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, इसे ध्यान में रखते हुए 'त्योंहार कहानी संग्रह' पुस्तक का समाज स्तर पर वितरण किया गया।

अन्न की बर्बादी को लेकर उठाए गए कदम आज एक प्रभावी रूप ले चुके हैं। इधर अंतर्मन में कला व पाककला का प्रेम हिलोरे ले रहा था। डिजाइनर केक को मैंने अपना प्रोफेशन बना लिया। कब, कहां, कैसे शुरुआत हुई, मुझे खुद भी नहीं मालूम चला। आज इस हुनर के दम पर मैंने अलग ही स्थान बनाया है ।पहचान को बांधा नहीं जा सकता। हमारा कार्य बोले तो हमें बोलने की जरूरत नहीं पड़ती। मुझे बाड़मेर जिला उपाध्यक्ष का पद मिला। पश्चिमी राजस्थान प्रदेश में सदस्य रहते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 15 अगस्त 2019 को उप जिला कलेक्टर द्वारा मुझे राजकीय सम्मान दिया गया ।फिर मैंने पुनः लेखन चालू किया।पत्रिकाओं व लोगों ने मेरे लेखन को खूब सराहा।अब ये सिलसिला कहाँ तक ले कर जाएगा यह तो नहीं मालूम लेकिन मुझे सम्मान बहुत मिला। शीर्षक साहित्य परिषद द्वारा 'शब्द मनीषी' का सम्मान दिया गया। साहित्य संगम संस्थान द्वारा 'सुहासिनी' उपनाम से अलंकृत किया गया। वर्तमान में मैं बालोतरा माहेश्वरी महिला मंडल संरक्षक, बाड़मेर जिला माहेश्वरी महिला मंडल उपाध्यक्ष, पश्चिमी राजस्थान प्रदेश संयुक्त मंत्री, अखिल भारतीय महिला मंडल की सदस्य, 'सखी ग्रुप' (एनजीओ) की फाउंडर, आईएमसीसी की बाड़मेर जिलाध्यक्ष,अखिल भारतीय वैश्य महा संगठन बालोतरा जिला महिला विंग अध्यक्ष के पद पर हूँ।

वास्तव में देखा जाऐ तो ''रामनाम लेखन'' एक आध्यात्मिक उपासना है, लेकिन इसकी इसी रूप में हर पीढ़ी तक पहुँच आसान नहीं होती। इसे एक कला का रोचक रूप देकर हर उम्र के लोगों तक ''राम नाम'' की आध्यात्मिक अनुभूति पहुँचाने का कार्य कर रही है, कोलकाता निवासी रामनाम कलागुरु कविता डागा।

'रामनाम' की कला गुरु कविता डागा

कोलकाता निवासी कविता डागा की पहचान वर्तमान में ''रामनाम लेखन कला'' की कलागुरु के रूप में न सिर्फ क्षेत्र बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश में है और धीरे-धीरे यह प्रदेश की सीमाओं को भी लांघ रही है। मात्र गत वर्ष 2019 से उन्होंने इसकी निःशुल्क कार्यशाला आयोजित करने की शुरुआत की। इतनी अल्पावधि में अब तक वे 35 से अधिक राम राम लेखन की कार्य शाला विशेषकर कोलकाता के साथ पुरूलिया, राँची, जमशेदपुर, बीकानेर, नोखा, झाडसुगडा, सम्बलपुर, रायपुर, पिपरिया, जबलपुर, अकोला, अमरावती, नागपुर आदि शहरों में आयोजित कर चुकी हैं। आगामी कार्य शाला चेन्नई, ईरोड, कोयम्बंटुर, सलेम और मदुरै में होने जा रही है। उनकी इस राम लेखन कार्य शाला में बच्चे ही नहीं बड़े भी उत्साहित रहते है। फ़ेसबुक पेज से भी जुड़कर इस कला को लोग अपना रहे है। आपको आश्चर्य होगा कि अमेरिका में रहने वाले कुछ भारतीय बच्चे भी इस कला से जुड़ गये है। गत दिनों दक्षिण भारत में भी चैन्नई, ईरोड, सलेम, मदुरै व पंडिचेरी में उनकी कार्यशाला का आयोजन हो चुका है।

बनाती हैं राम नाम से चित्र

जीवन में जो कुछ भी अविस्मरणीय कार्य होते है, इन सब कें पीछे ईश्वरीय प्रेरणा ही सर्वविदित है। ऐसा ही श्रीमती डागा के साथ हुआ है, जिन्होंने आदिकाल से चले आ रहे राम लेखन को एक कला कें रुप में रुपान्तरित किया है। इस कला में न तो बिंदु, न हीं कोई लाईन का प्रयोग

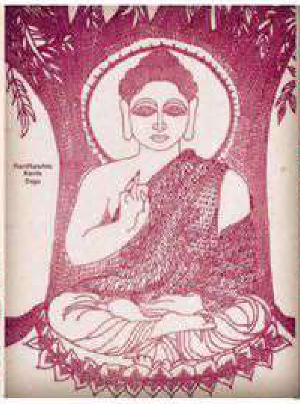

किया गया है। इस लेखन कला की विशेषता यह है कि इसके आकार मे पूर्ण रुप से सिर्फ राम एवं राम शब्दों का प्रयोग किया गया है। रामनाम हमें स्वार्थ से परमार्थ की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। आज की सदी मे मन की एकाग्रता को जोड़ने की ताकत इस रामनाम लेखन कला मे है। इस कला के प्रकाश से हम न केवल समाज मे बल्कि विश्व मे भी इसे योग की तरह लोकप्रिय बना सकते हैं। श्रीमती डागा ने अपने जीवन के 49 वर्ष तक कोई चित्र नहीं बनाया। लेकिन विगत तीन वर्ष से वो राम लेखन चित्र कला बना रही हैं और अबतक वो राम लेखन से 150 से ज़्यादा चित्र बना चुकी है।

ईश्वरीय प्रेरणा से मिली कला

श्रीमती डागा का जन्म महाराष्ट्र के अकोला जिला के अकोट में सन् 1968 में हुआ। इनका विवाह पुरुलिया निवासी कोलकाता प्रवासी राजेश कुमार डागा के साथ हुआ, जो पेशे से चार्टड एकाउंटेंट हैं। इनके एकमात्र पुत्र कुमारवर्धनम डागा आईआईटी, खड़गपुर से ग्रेजुएशन कर विज्ञान की दुनिया से जुड़े हुए है। ऐसे में कला की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह ईश्वरीय प्रेरणा ही कही जा सकती है। वैसे वे इस कला की प्रणेता अपनी सासूजी और माताजी को मानती हैं। उनकी सासूजी जीवन पर्यन्त रोज़ नियमित रूप से राम राम का एक पन्ना लिखती थी। वर्ष 2017 में सासूजी के देहांत होने पर उनकी बैठक में श्रीमती डागा ने पहली बार रामराम का पन्ना लिखना शुरू किया, किन्तु इनका मन बिल्कुल नहीं लगता था। इसी बैचेनी में उसी वक्त से राम - राम से छोटे छोटे चित्र बनाने लगी। कविता जी अपनी इस ईश्वरीय आस्था में लगन का योगदान अपनी माताजी को भी देती है जो विगत 20 वर्ष से ऋषिकेश के गीता भवन में स्थायी रुप से प्रवास कर आध्यात्मिक साधना में गतिशील हैं। ईश्वर ने जो लगन लगाई वो आज हम सबके सामने रामराम आर्टस के रुप में प्रस्तुत है। इस कला के प्रति लोगों का स्नेह देखकर पुत्र एंव पति ने उन्हें रामलेखन कला को लोगों को सिखाने के लिये प्रोत्साहित किया।

उनके जीवन में कई विषम परिस्थितियाँ आयीं, लेकिन उनके हौंसले के सामने आखिरकार उन विपरीत परिस्थितियों को घुटने टेकने ही पड़े। कानपुर निवासी रजनी माहेश्वरी विषम परिस्थितियों की एक ऐसी ही ''योद्धा'' हैं, जिन्हें विषम परिस्थितियाँ भी कभी पराजित नहीं कर पायीं। 50 वर्ष की उम्र में एमबीए जैसी व्यावसायिक डिग्री प्राप्त करना भी उनकी ऐसी ही उपलब्धियों में शामिल हैं।

विषम स्थितियों की ''योद्धा'' रजनी माहेश्वरी

कानपुर निवासी 50 वर्षीय रजनी माहेश्वरी न सिर्फ माहेश्वरी समाज अपितु हर परिचित के लिये आदर्श ही हैं। उनका जीवन अपने - आपमें उनके लिए प्रेरणा की खुली ही किताब बन गया है। कारण है, उनका हौंसला जिसके सामने हर विषम परिस्थिति को हमेशा नतमस्तक होना पड़ा। तभी गत दिनों जब उन्होंने उम्र के अर्द्ध शतक में एमबीए जैसी उच्च व्यावसायिक उपाधि प्राप्त की तो भी लोगों को अत्यधिक आश्चर्य नहीं हुआ। उम्र के इस पड़ाव पर आमतौर पर लोग परम्परागत शिक्षा प्राप्त करने की भी कोशिश नहीं करते। ऐसे में उनके इस प्रयास की सभी ने सराहना तो की लेकिन साथ ही यह भी दबी जुबान में यह कहने से भी नहीं चूके कि उनके लिये तो कुछ भी असंभव नहीं है। महिला संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम सुमिरन 2018 में ऑल इंडिया के सुश्रिता नारी प्रतियोगिता में श्रीमती लोइवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया था। इस वर्ष 2020 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर उत्तरप्रदेश महिला उद्योग-व्यापार मंडल ने उन्हें ''शक्ति स्वरूपा अलंकरण'' से सम्मानित किया।

परिवार को दिया आर्थिक संबल

7 नवंबर 1970 को श्रीमती माहेश्वरी का जन्म दुर्गापूर निवासी श्री गिरधर दास भट्टड़ और श्रीमती पुष्पा देवी भट्टड़ के यहां हुआ। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने अंग्रेजी विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। फिर कानपुर निवासी श्री राजीव लोइवाल से उनका विवाह हो गया। 14 जनवरी 2013 को अचानक उनके पति का दुखद निधन हो गया। उस समय बड़ी बेटी दर्शिता 19 साल की थी और सीए का इंट्रेस एग्जाम दिया ही था। छोटी बेटी दिव्या 14 साल की थी और कक्षा 9 की वार्षिक परीक्षा देने वाली थी। इन्होंने नियती के इस क्रूर फैसले का भी सामना किया और अपनी दोनों बेटियों का भविष्य संवारने और अपने पति की प्रिंटिग इंक बनाने की फैक्ट्री को सुचारू रूप से चलाने में जुट गई। लोगों को लगा था कि एक अबला क्या व्यवसाय संभालेगी? लेकिन उन्होंने इसे सफलतापूर्वक आगे बढ़ाते हुए सिद्ध कर दिखाया कि वे ऐसी सबला हैं, जो किसी से कम नही हैं।

एक माह में व्यवसाय पुनः स्थापित

उन्होंने 25 साल बाद फिर से पढ़ाई करने का फैसला किया और डिस्टेंस ऑनलाइन के तहत मुंबई से एमबीए करने लगी। जिन्दगी अपनी रफ्तार से चल रही थी। मगर फिर वक्त ने इनकी और एक कठिन परीक्षा ले ली। 18 जून 2019 को , जब वे अपने एमबीए के तीसरे सेमेस्टर की परीक्षा दे रही थी, इनकी फैक्ट्री में भीषण आग लग गई और पूरी फैक्ट्री जल कर राख हो गई। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और नियती का फिर डट कर सामना करते हुए एक महीने में ही दूसरी फैक्ट्री लगा ली। आज इनकी बड़ी बेटी सीए बन गई और मुंबई के आईसीआईसीआई बैंक में कार्यरत हैं। छोटी बेटी बीबीए अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रही है और कॉलेज से ही उनका प्लेसमेंट हो गया है। इन्होंने दोनों बेटियों को स्वावलंबी बना दिया और मुस्कुराते हुए जिन्दगी का सफर तय कर रही है। इसका श्रेय वो ईश्वर की कृपा, पूर्वजों के आशीर्वाद तथा परिवार और दोस्तों के सहयोग व स्नेह को देती है। अब अपने एमबीए से प्राप्त व्यावसायिक ज्ञान का उपयोग श्रीमती माहेश्वरी अपने उद्यम के चहुंमुखी विकास में कर रही हैं।

माहेश्वरी नारी शक्ति की प्रतिभा से शायद ही कोई क्षेत्र अछूता हो। खेल जगत में भी माहेश्वरी नारी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है। 14 वर्ष से कम उम्र में ही इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रही है, इंदौर निवासी आन्या कालानी।

खेल जगत की 'नन्ही परी' आन्या कालानी

वर्तमान में इंदौर निवासी समाज सदस्य पंकज व दीपा कालानी की सुपुत्री आन्या पर न सिर्फ परिवार व स्कूल बल्कि सम्पूर्ण शहर भी गर्व कर रहा है। कारण है, उसका बॉस्केटबॉल में एक सितारा खिलाड़ी के रूप में उभरना, जिस प्रतिभा के सामने हर कोई नत मस्तक है। वर्तमान में आन्या 14 वर्ष से कम आयु की राष्ट्र स्तरीय बॉस्केटबॉल टीम में शामिल हो चुकी हैं। उनका चयन प्रतिष्ठित खेल प्रशिक्षण संस्था ''एनबीए'' में प्रशिक्षण के लिये हुआ है। इसमें चयनित होने वाली देश के पब्लिक स्कूल की वह एक मात्र खिलाड़ी है।

सभी को किया आश्चर्यचकित

कालानी परिवार में किसी ने भी यह नही सोचा था कि उनकी नन्ही सी, छोटे से कद काठी की, पतली-दुबली, सबसे छोटी लाड़ली एक दिन अपना, अपने परिवार तथा अपने स्कूल के नाम को खेल जगत में ऊंचाई के नये शिखर तक पहुंचाऐगी। अपनी बड़ी बहन, जो स्वयं एक अच्छी बास्केट-बॉल खिलाड़ी हैं, से प्रेरित हो कर कक्षा पांच से आन्या ने बास्केट-बॉल खेलना आरम्भ किया। दो साल में ही मात्र 12 वर्ष की आयु में, आन्या ने अपने स्कूल मेयो कालेज की टीम की ओर से इंटर स्कूल टूर्नामेंट अजमेर 2018, में भाग लिया खेला और 'बेस्ट प्लेयर' का खिताब जीता, जिससे उसका चयन स्टेट लेवल (14 वर्ष आयु वर्ग) में किया गया। उसी वर्ष उसने (19 वर्ष से कम आयु वर्ग) आईपीएससी टूर्नामेंट में अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व किया तथा अपने कौशल और खेल प्रतिभा से सभी कोच को बेहद प्रभावित किया। इसमें उसे 'मोस्ट इमरजिंग प्लेयर' का खिताब दिया गया।

हमेशा मिला 'बेस्ट प्लेयर' अवार्ड

इस उभरते सितारे ने वर्ष 2019 में मेयो कॉलेज की टीम (14 वर्ष से कम आयु वर्ग) की कप्तानी की। उसकी कप्तानी में टीम ने 63वीं इंटर स्कूल अजमेर डिस्ट्रिक्ट चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। इस चैम्पियनशिप में भी आन्या को 'बेस्ट प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट के खिताब से नवाजा गया। आन्या की ही कप्तानी में मेयो कॉलेज की टीम ने एआइपीएससी (ऑल इंडिया पब्लिक स्कूल फाउंडेशन) के 14 वर्ष से कम आयु वर्ग में रजत पदक जीता। इसमें आन्या ने 'बेस्ट प्लेयर' का खिताब फिर से अपनी झोली में डाला। आन्या की इसी उम्दा खेल तकनीकी के कारण सीआईएससीई (सेंट्रल जोन ऑफ आईसीएसई बोर्ड) 14 वर्ष से कम आयु वर्ग की 'प्री नेशनल' टीम में उसका चयन किया गया। सीआईएससीई के 'प्री नेशनल' अहमदाबाद में भी आन्या की टीम ने स्वर्ण पदक जीता तथा एक बार फिर से उसे 'बेस्ट प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' का खिताब दिया गया। अब एनबीए से प्रशिक्षित होकर सम्भव है, आन्या अन्तर्राष्ट्रीय खेल जगत में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाए।

Umesh Chandak
93271 18440, 93771 98631
Shakti Textile
Wholesale Fancy Dress Material
Of Suit Dupatta
A-3055, 2nd Floor, Radha Krishna Textiles Market, Surat (Guj.)

Dinesh Chandak
93749 98631
Shri Dharti Fab India
Wholesale Heavy Embroidery
Dupatta, Stoll, Blouse

Ring Road, Surat (Guj.)

वर्तमान में यह सोच बन गई है कि टेक्सटाईल के क्षेत्र में हैंड ब्लाक प्रिंटिंग पुरानी तकनीक हो गई है। यह आधुनिकतम तकनिकों का मुकाबला नहीं कर सकती। इस सोच को अपने प्रयासों से बदल कर रख रही है, बाग निवासी प्रियंका बाहेती। बाग प्रिंट की कलाकार प्रियंका बाहेती उन्होंने न सिर्फ क्षेत्र बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश में अपनी इस कला को व्यावसायिक स्तर पर प्रतिष्ठित स्थान दिलवाया है।

बाग प्रिंट कलाकार प्रियंका बाहेती

माहेश्वरी नारी शक्ति जिस भरपूर ऊर्जा के साथ हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परचम लहरा रही है, इसमें टेक्सटाईल प्रिंटिंग का क्षेत्र भी शामिल है। बाग जिला धार निवासी दिलीप बाहेती की धर्मपत्नी प्रियंका बाहेती इस क्षेत्र की ऐसी कलाकार है, जिन्होंने अपने क्षेत्र की "बाग प्रिंट" को सम्पूर्ण प्रदेश में प्रतिष्ठित करवाया। इतना ही नहीं बल्कि मात्र 5 वर्षों में इसे "माँ श्री बाग प्रिंट" के नाम से एक सफल व्यवसाय का रूप भी दे दिया।

छोटे से कस्बे से निखरी प्रतिभा

आमतौर पर लोग छोटे कस्बों को अपनी उन्नति के मार्ग में बाधा समझते हैं। यही कारण है कि लोगों की भीड़ महानगरों की ओर उमड़ रही है। ऐसे लोगों के लिये भी श्रीमती बाहेती एक जवाब है। उन्होंने जन्म भी कस्बे में लिया और विवाह भी एक कस्बे में ही हुआ, लेकिन इसे भी उन्होने अपनी शक्ति बना लिया। श्रीमती बाहेती का जन्म छोटे से कस्बे कांटाफोड़ जिला देवास (म.प्र.) में 8 दिसम्बर 1980 को स्व. श्री पदम कुमार गोरानी के यहां हुआ था। दादाजी स्व. श्री चतुर्भुज गोरानी इस क्षेत्र के वर्ष 1962 से 1967 तक निर्दलीय विधायक रहे थे। बी.कॉम द्वितीय वर्ष तक ही शिक्षा ग्रहण कर पायी थी कि विवाह 17 अप्रैल 2000 में बाग जिला धार निवासी श्री रामेश्वर बाहेती के सुपुत्र दिलीप बाहेती के साथ हो गया।

ऐसे बढ़े आगे कदम

विवाह के पश्चात वैसे तो श्रीमती बाहेती मात्र पारिवारिक जिम्मेदारी ही निभा रही थीं, लेकिन उनके अंदर और कुछ करने की इच्छा थी। पति टेक्टटाईल व्यवसाय से सम्बद्ध थे। अतः बचपन से रहे कला के प्रति रूझान ने इस क्षेत्र में कुछ करने के लिये प्रेरित कर दिया। ऐसे में उनकी पसंद बनी कला "बाग प्रिंट" और उन्होंने इसे ही नया आयाम देने की ठान ली। इसमें उन्हें सासू माँ गीताबाई बाहेती का भी प्रोत्साहन मिला। इनके प्रयास आखिरकार रंग लाये और न सिर्फ "बाग प्रिंट" कला निखरी बल्कि उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर "माँ श्री बाग प्रिंट" के नाम से मात्र 5 वर्ष में प्रतिष्ठित व्यवसाय भी स्थापित कर लिया।

वूमन्स मीडिया अवार्ड से सम्मान

वूमन्स प्रेस क्लब मध्यप्रदेश द्वारा भोपाल में आयोजित नेशनल टॉक शो व वूमन्स मीडिया अवार्ड समारोह के अंतर्गत सोशल अचीवर्स अवार्ड

से श्रीमती बाहेती को बाग प्रिंट में नई-नई आकर्षक डिजाइन प्रिंट करने एवं हाथ ठप्पा छपाई से बाग प्रिंट के लिए दिया गया। उन्हें यह अवार्ड केबिनेट मंत्री विजय लक्ष्मी साधौ, चिकित्सा शिक्षा द्वारा एवं जनसंपर्क मंत्री पी.सी. शर्मा द्वारा संयुक्त रूप से दिया गया। उल्लेखनीय है कि धार जिले से एक मात्र महिला प्रियंका बाहेती को ही बाग प्रिंट को लेकर चुना गया था।

समाजसेवा में भी सक्रिय

अपनी व्यस्तता के बावजूद श्रीमती बाहेती निःस्वार्थ भाव से स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल को सक्रिय रूप से अपनी सेवा देती रही है। अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल दिल्ली में आयोजित सीट कैपिटल में आप ने प्रथम स्थान पाया। मध्यप्रदेश वुमन प्रेस क्लब द्वारा भी 5 जिलों में प्रथम अवार्ड देकर प्रोत्साहित किया। पति दिलीप बाहेती माहेश्वरी समाज बाग में सचिव का दायित्व निभा रहे हैं। आपका परिवार धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। श्रीमती बाहेती को भारतीय कुकिंग एवं ब्यूटीशियन में भी महारत हासिल है। वे अपने कार्य क्षेत्र में महिलाओं को अपना यह हुनर भी प्रदान कर रही हैं।

खेल जगत की ''आयरन वुमन''
शिवांगी सारडा

नारी को कोमल, कमजोर तथा अबला समझने वालों के लिये शिवांगी सारडा एक जवाब हैं। शिवांगी ने न सिर्फ विश्व स्तर पर आयोजित ''आयरन मैन'' स्पर्धा में अपने हौंसले व ताकत की मिसाल पेश की, बल्कि अन्य महिलाओं को भी वे ''आयरन वुमन'' बनाने में जुटी हैं।

जयपुर निवासी शिवांगी सारडा ने 20 अक्टूबर 2019 को चीन में आयोजित हुई आयरन मेन प्रतियोगिता में भाग लिया था। इसमें आयरन मेन 7.3 का टास्क (25 से 29 वर्ष केटेगरी) में उन्होंने 6 घंटे 52 मिनट 44 सैकेण्ड के रिकार्ड समय में पूरा किया। इसमें उन्होंने 1 घंटा 11 मिनट 42 सैकण्ड खुले पानी में 1.9 किमी स्विमिंग, 3 घंटा 31 मिनट 8 सैकण्ड में 90 किमी. साइकिलिंग एवं 2 घंटा 7 मिनट 21 सैकंड में 21 किमी रनिंग करके यह कठिन टास्क पूरा किया। इसमें तैराकी-साइकिलिंग एवं रनिंग लगातार करनी पड़ती है। इसमें 64 देशों के 1200 महिला-पुरुष प्रतियोगी थे, जिसमें से 967 प्रतियोगी ही यह टॉस्क पूरी कर पाये। राजस्थान के महिला एवं पुरुष वर्ग में यह टास्क शिवांगी ने ही सबसे कम उम्र में पूरा किया है।

बचपन से खेल की ओर रूझान

शिवांगी का जन्म 19 अप्रैल, 1993 को जयपुर में नीता व विमल किशोर सारडा के यहाँ हुआ। महारानी गायत्री देवी स्कूल, जयपुर की छात्रा रही शिवांगी सारड़ा ने बॉस्केटबाल की अनेक प्रतियोगिताओं में स्कूल का प्रतिनिधित्व किया। वह सन् 2010-11 में इस स्कूल की 'स्पोर्ट्स केप्टेन' भी रही। साथ ही क्रिकेट भी खेलती रहा। उन्हें जयपुर की बेस्ट वूमन वीकेट कीपर का अवार्ड भी प्राप्त हुआ है। विभिन्न दौड़ प्रतियोगिताओं में भी अनेक पुरस्कार प्राप्त किये हैं। इसमें अण्डर 19 वर्ष आयु वर्ग में राजस्थान बॉस्केटबाल टीम की कप्तान एवं लगातार 3 वर्ष तक सर्वश्रेष्ठ बॉस्केटबाल खिलाड़ी होने का गौरव भी प्राप्त है। शिवांगी इंडियन पब्लिक स्कूल कॉन्फ्रेंस आईपीएससी की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी एवं 19 वर्ष आयु केटेगरी में राजस्थान से नेशनल लेवल बॉस्केटबाल प्लेयर रही हैं।

दिल्ली टीम का भी किया नेतृत्व

शिवांगी लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली में अध्ययनरत रहते हुए कॉलेज की बॉस्केटबाल टीम की कप्तान रहीं। दिल्ली विश्वविद्यालय बॉस्केटबाल टीम की भी कप्तान रहीं। उन्हें दिल्ली स्टेट बॉस्केटबाल टीम का कप्तान रहने का भी सौभाग्य मिला। लेडी श्री राम कॉलेज, दिल्ली की नेशनल स्पोर्टस ओरगेनाईजेशन (एनएसओ) में उपाध्यक्ष भी निर्वाचित हुई थी।

दिल्ली से मनोविज्ञान में एम.ए. कर मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में एम.बी.ए. मार्केटिंग व स्पोर्ट्स मैनेजमेंट की पढ़ाई करते समय शिवांगी ने वहाँ भी बॉस्केटबाल एवं अन्य खेलों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की।

खेल से लगाव ने मातृभूमि पहुँचाया

ऑस्ट्रेलिया से एमबीए करने के बाद शिवांगी वहीं पर आईटी क्षेत्र में कार्य कर रही थीं। इस नौकरी में मिलने वाली अच्छी सेलरी के बावजूद उनका मन खेल जगत तथा अपनी मातृभूमि की ओर दौड़ लगाता रहा। आखिरकार वे अपना यह जॉब छोड़कर वापस जयपुर आ ही गईं। यहाँ वर्तमान में शिवांगी महिलाओं के लिये फिटनेस सेंटर का संचालन कर रही हैं। उन्होंने सन् 2019 में आयोजित हुई थोर हाफ मेराथन में भी जयपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आईडीबीआई मुंबई हॉफ मेराथन- 2019 में भी महिला वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया। वह अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता को देती हैं। उनका कहना है कि माँ नीता एवं पिताजी विमल किशोर सारडा उनका निरंतर उत्साहवर्द्धन करते रहते हैं। श्री सारडा उद्योगपति एवं समाजसेवी हैं। वे जयपुर इण्डस्ट्रियल एस्टेट एसोसिएशन 22 गोदाम के महासचिव रहे हैं एवं वर्तमान में वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं। वे श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के संगठन एवं प्रचार मंत्री भी रहे हैं।

जब भी मंदबुद्धि या निःशक्त बच्चों की सेवा की चर्चा होती है, तो उसमें भीलवाड़ा निवासी मधु काबरा का नाम प्रथम पंक्ति की समाजसेवियों में आता है। वे एक ऐसी समाजसेवी हैं, जो न सिर्फ तन, मन, धन से इनके प्रति समर्पित हैं, बल्कि यह कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उन्होंने तो इसके लिये अपना सम्पूर्ण ममता का सागर ही एक माँ की तरह उड़ेल कर रख दिया है।

ममता का सागर मधु काबरा

समाज समाजसेवी गौ भक्त ओमप्रकाश काबरा की धर्मपत्नी मधु काबरा वर्तमान में भीलवाड़ा में सहसचिव के रूप में "सोना मनोविकास केंद्र" के नाम से मंदबुद्धि विद्यालय का संचालन कर रही हैं, जिसका सैकड़ों बच्चे लाभ ले रहे हैं। श्रीमती काबरा क्षेत्र की ख्यात लोक गायिका भी हैं और अपने गीतों की प्रस्तुति वे सशुल्क विभिन्न मांगलिक कार्यक्रमों में देती हैं। मंदबुद्धि बच्चों के प्रति यह उनका समर्पण ही है कि इससे प्राप्त धनराशि भी वे इन्हीं बच्चों को समर्पित कर देती हैं। वे अभी तक कुल 3000 से ज्यादा कार्यक्रम कर चुकी हैं। भीलवाड़ा में व राजस्थान के बाहर भी कई कार्यक्रम किए। जहां भी जरूरतमंद, निशःक्त एवं मंदबुद्धि संस्थाएँ होती है, वहाँ सहयोग राशि व आवश्यक सामग्री देने से पीछे नही हटती। अब तक मांगलिक कार्यक्रमों से प्राप्त राशि से सोना मनोविकास केंद्र में खेलकूद की सामग्री से लेकर स्टेशनरी, फर्नीचर, प्रोजेक्टर, जरूरतमंद बच्चों की ऑटो फीस आदि काफी कुछ प्रोजेक्ट किए। इसके अलावा पैतृक गांव सरगांव के उच्च माध्यमिक विद्यालय सहित करीब 8 स्कूलों को फर्नीचर उपलब्ध करवाया। जिसमें टेबल, चेयर, अलमारी, दरियाँ, ग्रीन नेट आदि शामिल हैं। जरूरतमंद निःशक्त लोगों को आठ ट्राई साइकिल, साइकिल, जरूरतमंद बच्चियों की पढ़ाई की फीस दी। राजकीय महाविद्यालयों में व हॉस्पिटल में 5 व्हील चेयर भेंट की। भजनों के प्रोग्राम से प्राप्त राशि गौशाला में सहायतार्थ दी जाती है।

बेटी बनी सेवा की प्रेरणा

चित्तौड़गढ़ में श्री सत्यनारायण सीता देवी तोषनीवाल के यहाँ जन्मी मधु काबरा का विवाह भीलवाड़ा के ग्राम सरगांव के भेरूलाल काबरा के सुपुत्र ओम प्रकाश काबरा के साथ 1985 में हुआ। 1989 में प्रथम पुत्री निधि का जन्म हुआ जो जन्म से ही मंदबुद्धि थी। उसका हर संभव उपचार करवाया। इसी दौरान दिल्ली के डॉक्टर पंकज खजांची से मुलाकात हुई। उन्होंने इन्हें स्पेशल एजुकेशन के लिए दिल्ली बुलाया। वर्ष 1994 से दो बार 25-25 दिन की मंदबुद्धि बच्चों को संभालने की कार्यशाला में भाग लेकर स्पीच थेरेपी, फिजियोथैरेपी, स्पेशल एजुकेशन के होम बेस्ड प्रोग्राम के तहत काफी कुछ सीखा। इससे वे अपनी बिटिया को इस लायक बना पाई कि वह अपना आवश्यक कार्य स्वयं कर सकें। इससे उसके मन में अपनी बेटी के साथ-साथ अन्य ऐसे बच्चों के लिये भी कुछ

करने की इच्छा उत्पन्न होती चली गई।

ऐसे हुई सोना स्कूल की शुरुआत

श्रीमती काबरा बताती हैं कि सन् 1995 में भीलवाड़ा के समाजसेवी श्री प्रेमचंद जैन ने अपनी बेटी सोना के नाम से एक मंदबुद्धि विद्यालय का गठन किया। उस संस्था में मैंने अपनी बेटी निधि का प्रवेश करवाया और स्पेशल एजुकेशन के बारे में अपने विचार जैन साहब के सामने रखें। तब जैन साहब ने मुझे उस संस्था की सहसचिव बनाकर संस्था की कार्यकारिणी में शामिल किया समय-समय पर अपनी सेवाएं देते हुए दिल्ली की स्पेशल एजुकेशन की टीम जिसमें 5 डॉक्टर भी शामिल थे, को भीलवाड़ा में मंदबुद्धि से पीड़ित बच्चों का असेसमेंट करने के लिए 1997 में कार्यशाला करवाई। इसमें भीलवाड़ा जिले के करीब 367 बच्चों के रजिस्ट्रेशन करवाए गए। सेवा से ओतप्रोत दोनों परिवारों के संस्कारों में सेवा भाव का एक जुनून था। सबसे पहले 1992 में लायनेस क्लब ज्वाइन किया। फिर और भी कई संस्थाओं में जुड़ने का मौका मिला। 1992 में बेटे निखिल का जन्म हुआ जो आईटी इंजीनियर है, अभी अपने पिताजी के साथ कपड़े का व्यवसाय कर रहा है। पुत्र वधु निकिता जो सीए है। छोटी पुत्री निशिता मुम्बई में ग्रेजुएशन के बाद इंटीरियर डिजाइनिंग की पढाई कर रही है। परिवार का हरसंभव साथ रहा। पति एवं बच्चों के पूरे सहयोग से समाज सेवा के कई कार्य किए।

लोक गायिका के रूप में बनाई पहचान

श्रीमती काबरा को बचपन से गायन और नृत्य का शौक था। नृत्य में फॉक डांस जैसे भवाई, कठपुतली और क्लासिकल डांस के स्टेज शो भी किए। गाने के शौक के चलते मौका मिला साउंड और ढोलक पर कुछ गीत व भजन गाने का। तभी मन में विचार आया कि कुछ ऐसा करें जिससे किसी का सहयोग हो सके। तब 2009 से मांगलिक गीतों के कार्यक्रम करने शुरू किए धीरे धीरे सभी को अच्छा लगने लगा। फिर लोग हल्दी, मेहंदी ,मायरा, संगीत मय फेरे, जन्मोत्सव, मुंडन, स्वर्ण सीढ़ी, सालगिरह भजन संध्या आदि कार्यक्रम करवाने लगे। तब एक निर्णय लिया कि कार्यक्रम से कुछ निश्चित राशि ली जाए। तब से वे इन कार्यक्रमों की चैरिटी करने लगी। कार्यक्रम से जो राशि प्राप्त होती, वह सारी राशि सोना मंदबुद्धि विद्यालय में सहयोग हेतु दे दी जाती है।

सेवा ने दिलाया सम्मान

श्रीमती काबरा को उनकी इस निःस्वार्थ सेवाओं को लेकर विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं द्वारा उन्हें कई विशिष्ट अवसरों पर सम्मानित किया जा चुका है। इसके अंतर्गत जगतगुरु आचार्य श्री रामदयाल जी द्वारा स्वर कोकिला सम्मान से सम्मानित किया गया। लायंस क्लब से बेस्ट परफॉर्मेंस अवार्ड तथा समाज कल्याण विभाग द्वारा भी 3 बार सम्मानित किया गया। महिला संगठन से माहेश्वरी महिला सेवा रत्न सम्मान मिला।

लायंस क्लब में बेस्ट सोशल वर्कर के तहत 5 बार सम्मानित हुई व बेस्ट सेक्रेट्री सम्मान से सम्मानित किया गया। गोरजा फाउंडेशन ट्रस्ट की ओर से उन्हें नारी रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया।

हमारे देश के पर्वतों व वनों में ऐसी औषधियाँ मौजूद हैं, जो कई असाध्य सी समझी जाने वाली बीमारियों को भी किसी जादू की तरह ठीक करने की क्षमता रखता है। दुर्भाग्य यह है कि पहले इनका ज्ञान ग्रामीणों व वनवासियों को था, लेकिन अब उनकी नई पीढ़ी भी इनसे अनजान होती जा रही है। ऐसी ही दुर्लभ औषधियों को को अपने सहेजने में जुटी है, कोटा निवासी डॉ. शालिनी माहेश्वरी (खुवाल)।

दुर्लभ औषधीय ज्ञान को संजोती डॉ. शालिनी माहेश्वरी

हमारा आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान विश्व का सबसे प्राचीन विज्ञान तो है, ही साथ ही चिकित्सा के लिये अत्यंत प्रभावी भी रहा है। इनकी प्रभावशीलता का कारण था, हमारे घने वनों व पर्वतों में पायी जाने वाली दुर्लभ औषधियाँ भी। दुर्भाग्य से वर्तमान में इस दुर्लभ औषधियों की पहचान ही विलुप्त होती जा रही है। यही कारण है कि अब आयुर्वेद चिकित्सा इतनी प्रभावी नहीं रही, जितनी पहले हुआ करती थी। उर्दू शायरी व किताबें पढ़ने की शौकीन डॉ.शालिनी इसरो की महिला वज्ञानिक टेसी थॉमस, रितु करिघल चाहती है। अपनी वैज्ञानिक सोच और देश के परम्परागत ज्ञान को साथ लेकर परिवार, समाज व देश में एक सकारात्मक परिवर्तन, लाना चाहती है। देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को किताबों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना चाहती है।

इसी क्षेत्र में की पीएच.डी. शोध

डॉ. शालिनी माहेश्वरी (खुवाल) का जन्म 9 दिसम्बर 1975 को गोविंद व श्यामा परतानी के यहाँ मालपुरा में हुआ। उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकार्ड के साथ जयपुर में बॉटनी से पोस्ट ग्रेजुएट तक शिक्षा प्राप्त कर 1998 में श्रीमती कुसुमलता खुवाल कोटा के सुपुत्र शैलेंद्र खुवाल से विवाह के बाद पूरी तरह से पुत्र राघव के लालन पालन व गृहस्थी को ही समर्पित हो गई। समाज में कुशलवक्ता व लेखिका के रूप में सक्रिय रही और योग, बोनसाई, डाइट व न्यूट्रीशन आदि से भी जुड़ी रहीं। लेकिन मन में आगे पढ़ने की चाह बाकी थी, इसीलिये शादी के 16 साल बाद पीएच.डी. का अधूरा सपना पूरा किया। बढ़ती बीमारियों व पेड़ पौधों से इलाज के परंपरागत ज्ञान में विशेष रूचि विषय के चयन का आधार बनी। राजस्थान के जंगलों में साढ़े तीन वर्ष का गहन शोध कार्य किया।

अब मानवता को सौगात देने का प्रयास

डॉ. माहेश्वरी ने अपने इस शोध के आधार पर बेहद प्रभावी दर्द निवारक बाम बनाया जो कि माइग्रेन, अंदरूनी चोट, जोड़ों का दर्द, सूजन आदि में काम आता है तथा पेड़-पौधों से ऐसे उत्पाद तैयार किये जो कई बीमारियों में बेहद कारगर साबित हुये हैं। बतौर बायो-डायवर्सिटी वैज्ञानिक विलुप्त होते पौधों के संरक्षण व संवर्धन के कार्य में जुटी है। साथ ही एक केम्पेन शुरु किया है, 'बेक टू बेसिक्स' जिसके माध्यम से लोगों में जागरुकता ला रही है ताकि अच्छी जीवनशैली और परंपरागत खान पान से लोग स्वस्थ रह सके। इसके साथ ही कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय जरनल्स में शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं और कई कांन्फ्रेंस व वर्कशॉप में व्याख्यान दे चुकी है। आकाशवाणी पर कई वार्ताएँ और अखबार में लेखों के माध्यम से आसपास उगने वाले पौधों की उपयोगिता सामान्यजन तक पहुँचाने का कार्य कर रही है और इसे ही जीवन का ध्येय बनाना चाहती है।

गरीब परिवारों में बेटियों की इच्छा अक्सर इसलिये पूरी नहीं की जाती क्योंकि उनके विवाह का खर्च उनके लिये एक बड़ी चुनौती होती हैं इस स्थिति में गरीब ब्राह्मण परिवारों की बेटियों के विवाह की जिम्मेदारी वहन कर बालिका संरक्षण को संबल दिया है, रोडा (जिला बीकानेर) की विद्या डागा ने।

निःस्वार्थ समाजसेवी
विद्या डागा

ऐसा ही एक इतिहास रचा है, श्रीमती विद्या किशनजी डागा सुपुत्री बंशीलाल राठी ने। बीकानेर जिला की नोखा तहसील में एक छोटा सा गांव है रोडा, इसमें माहेश्वरी समाज की बेटियों द्वारा छः ब्राह्मण कन्याओं व तुलसी जी का विवाह 8 नवम्बर 2019 को सुव्यवस्थित रूप से संपन्न करवाया गया। इसमें करीब 2500 लोगों की उपस्थिति रही। कन्या परिणय उत्सव के इस पुनीत कार्य को करने की हिम्मत जो विद्या डागा ने दिखाई वो तारीफे काबिल है। श्रीमती डागा ने छह महिने से ज्यादा समय मेहनत की थी, इस कार्यक्रम को मूर्तरूप देने के लिए। यह उन्हीं की मेहनत का परिणाम है कि यह कार्यक्रम इतना सफल रहा।

पूर्व में भी किया कन्या दान

विद्या ने पूर्व में भी 3 ब्राह्मण कन्याओं का कन्यादान किया। इतना ही नहीं पूरे गांव को जोड़कर एक-एक बेटी के नम्बर ढुंढकर उनसे बात करके उन्हें तैयार किया। पूरे रोडा की 285 बेटियों को जोड़कर उनको साथ लेकर चलना बहुत बड़ी बात है। इसमें से करीब 225 बेटियां इस कार्यक्रम में आईं व सभी ने साथ मिलकर इस कार्यक्रम को खुशी व प्रेम से पूरा किया। रोडा के सभी सदस्यों का भी सहयोग रहा। अपने इस प्रयास से उन्होंने सभी को समाजसेवा की एक नई राह दिखाई।

घर की शादी जैसी व्यवस्था

एक साल की कड़ी मेहनत के फलस्वरूप इस 3 दिवसीय विवाह समारोह में सबसे महत्वपूर्ण व खास बात यह रही कि सारे मांगलिक कार्यक्रमों में माहेश्वरी परिवारों के रीति रिवाजों को अपनाया गया। घी पावना, गीत गाना, मायरा, चिकनी कोथली, मेल-मुद्दा, फेरा व केसरियो लाडो जैसे नियम पालन को देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो किसी अपने खास की शादी में ही शामिल होने गए हो। सभी 6 जोड़ों के रिश्तेदारों के आदर सत्कार के लिए अलग-अलग सुंदर टेंट व रिसेप्शन की व्यवस्था भी की गई। देश-विदेश में रहने वाली रोडा गांव की बहनों,बेटियों,बुआ-भतीजी सब को एक छत के नीचे इकट्ठा कर इस विवाह उत्सव का आयोजन करवाकर श्रीमती डागा ने सामंजस्य की एक नई मिसाल कायम की।

समाज सेवा एक ऐसा पथ है, जिस पर चलने के लिये बस जरूरत होती है, तो मन में दृढ़ इच्छाशक्ति की और मानवीय संवेदना की। यदि ये दोनों हों तो हम जो कुछ भी कर रहे हों, वह सब समाजसेवा बन जाता है। इसे चरितार्थ कर रही हैं, नागपुर निवासी रूपा चांडक।

किरण मूंदड़ा, नागपुर

चहुंमुखी सेवा की पथिक
रूपा चांडक

व्यवसायी अशोक चांडक की धर्मपत्नी रूपा चांडक की नागपुर में एक ऐसी समाजसेवी के रूप में पहचान है जो अन्य समाजसेवी संस्था उन्हें जहाँ आवश्यकता लगी, अपनी सेवा देने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। श्रीमती चांडक नागपुर महिला समिति को अध्यक्ष के रूप में अपनी समर्पित सेवा भी दे चुकी हैं तथा नागपुर ज़िला माहेश्वरी महिला संगठन में व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर प्रमुख के रूप में सेवा दे रही हैं। व्यावसायिक रूप से वे आइडियल मेडिकोज व चांडक साड़ी स्टोर्स का संचालन कर रही हैं। इसके साथ ही वे अपने संस्थान 'पूर्णरुपम'इवेंट्स के माध्यम से सामाजिक एवं वैवाहिक कार्यक्रमों को डिज़ाइन करती हैं।

संयुक्त परिवार को बनाया अपनी शक्ति

श्रीमती चांडक का जन्म स्व. श्री बृजमोहन बिसानी और सावित्रीदेवी बिसानी के यहा 31 डिसेम्बर 1969 को हुआ था। मात्र बी.एससी. प्रथम वर्ष तक ही शिक्षा ग्रहण की थी कि उनका विवाह नागपुर के चांडक परिवार में स्व. श्री गुलाबचंद चांडक के सुपुत्र अशोक चांडक के साथ हो गया। यहाँ उन्हें ऐसा वृहद संयुक्त परिवार मिला जिसमें वर्तमान में भी परिवार के 22 सदस्य सांझा चूल्हा संस्कृति के आदर्श को प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें वर्तमान में पुत्री डॉ. छबि व इंजीनियर पुत्र निकुंज चॉडक सहित जेठ-जेठानी, चाचा ससुर आदि के परिवार भी शामिल हैं। श्रीमति चांडक न सिर्फ सम्पूर्ण परिवार को साथ लेकर प्रेमपूर्वक संयुक्त परिवार को संभाले हुऐ हैं, बल्कि सभी की उन्नति में भी मार्गदर्शक की भूमिका निभा रही हैं। यही कारण है कि परिवार के सभी बच्चे उन्नति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। स्वयं श्रीमती चांडक ने विवाह के पश्चात ही न सिर्फ अपनी बी.एससी. पूर्ण किया बल्कि डी.फार्मा. व संगीत में विशारद जैसी उपाधि भी प्राप्त की।

समाज सेवा में चहुंमुखी योगदान

श्रीमती चाँडक ऑरेंज सिटी जयसिरेट व रोटरी क्लब साऊथ ईस्ट लेडिज विंग की चेयरपर्सन रह चुकी हैं। विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उपक्रम 'उड़ान' की संयोजिका के रूप में अभी तक महिलाओं के उत्थान के लिये 35 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन कर चुकी हैं। कलात्मक और साहित्यिक क्षेत्र की अपनी रूचि का भी वे समाजहित में उपयोग कर रही हैं। इसके अन्तर्गत वे अभी तक कई समर कैम्प तथा गरबा वर्कशॉप का आयोजन कर चुकी हैं। साहित्यिक योगदानों से समाजसेवा के अन्तर्गत वे विवाह से सम्बंधित पुस्तक 'शगुन के पल' का पूर्णिमा काबरा के साथ मिलकर संपादन कर चुकी हैं। इसमें विवाह से सम्बंधित समस्त गीत व परम्पराओं का समावेश है। सब टीवी के कार्यक्रम 'हैप्पी हाऊसवाईव्ज क्लब' के अन्तर्गत ड्रामा और घूमर की प्रस्तुति दे चुकी हैं।

सेवा व प्रतिभा ने दिलाया सम्मान

रोटरी साऊथ ईस्ट के बुलेटिन 'आग्नेय' तथा नागपुर जिला माहेश्वरी संगठन 2017-18 के बुलेटिन 'अरूणिमा' की सम्पादिका भी रही हैं। श्रीमती चाँडक विदर्भ स्तरीय नवभारत प्रतियोगिता 'आयडीयल होम मेकर' में रनर अप रही हैं। समाज सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदानों के लिये उन्हें यूनिक स्लिम पॉइंट द्वारा 'वुमन्स अचिवर्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया। कला के क्षेत्र में दैनिक भास्कर द्वारा उन्हें बेस्ट फीमेल डॉन्सर अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है। इसके साथ ही श्रीमती चाँडक 'श्रीशिवम् लीडरशिप अवार्ड' तथा रोटरी साऊथ ईस्ट के 'बेस्ट एन्ट्र' अवार्ड से भी सम्मानित हो चुकी हैं। अखिलभारतीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित कविता प्रतियोगिता 'कोमल है कमज़ोर नहीं तू'में आपकी कविता को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। साहित्यिक रुझान के रहते आपने कई दोहा, कविता, हाइकु, तांका, लघु कथा लिखे हैं जो प्रकाशित हुए हैं,विभिन्न पुस्तकों में संग्रहित हैं। उनके जीवन में सफलता का एक ही मूल मंत्र है कि हुनर को तलाशें ,तराशें और अपने आप को जीवंत रखें।

समाजसेवी
दीप्ति समदानी

उदयपुर (राज.) सीए दीप्ति समदानी एक ऐसा नाम हैं, जो पेशे से तो चार्टर्ड अकाउंटेंट है, लेकिन उनकी पहचान मानवता की भावनाओं से ओतप्रोत समाजसेवी के रूप में अधिक है। व्यावसायिक स्तर पर वे स्वयं की फर्म चला रही हैं, इसके बावजूद व्यवसाय की व्यस्तता भी उनकी सेवा भावना को प्रफुल्लित होने से नहीं रोक सकी । गत 3 वर्षों से दीप्ति ऐसे कई सामाजिक संगठनों से जुड़ी हुई है, जो दिव्यांगों के लिए कार्य करती है। वो उन संस्थाओं को फ्री में अपनी सेवाएं देती है। इसके अलावा दीप्ति इन संस्थाओं के माध्यम से दिव्यांगों को जरुरत का सामान भी उपलब्ध कराती है। दिव्यांगों के साथ-साथ निम्न आय वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। दीप्ति गत 3वर्षों से निम्न आय वर्ग की लड़कियों (जो बी.कॉम और एम कॉम हो) को काम भी सिखाती हैं ताकि वे लड़कियां अपने स्वयं के पैरों पर खड़ी हो सके। दीप्ति उन लोगों को फ्री सर्विसेज देती है जो निम्न आय वर्ग के होते हैं व विभागीय कार्य की फीस भी नहीं दे पाते हैं। इनके लिए दीप्ति को कई सम्मान भी प्राप्त हुए है।

कोई भी सामूहिक अभियान या प्रयास तब सफल होता है, जब उसका नेतृत्व भी उस अभियान के प्रति पूरे तन-मन से समर्पित हो। यही कारण है कि इतिहास के तमाम महायुद्धों का श्रेय उनके नेतृत्वकर्त्ताओं को ही विशेष रूप से दिया गया है। समाजसेवा के क्षेत्र में कानपुर निवासी मंजू बांगड़ एक ऐसा ही नेतृत्व हैं, जिन्होंने समाज ही नहीं बल्कि मानवता की सेवा में भी हर उस संगठन को कीर्तिमान बनाने में योगदान दिया, जिससे वे जुड़ी रहीं।

मधु बाहेती, कोटा

सेवा पथ की 'महा'पथिक मंजू बांगड़

वर्तमान दौर में कानपुर के प्रतिष्ठित पेट्रोलियम एवं ट्रांसपोर्ट व्यवसायी राजेंद्र कुमार बांगड़ की धर्मपत्नी मंजू बांगड़ समाज ही नहीं बल्कि कई स्वयंसेवी संस्थाओं के लिये एक अत्यंत प्रतिष्ठित नाम बन गई हैं। कारण यही है कि उन्होंने जहाँ मानवता की सेवा के लिये कुछ नया करने का बीड़ा उठाया, बस वहाँ कीर्तिमान ही बन गया। उनकी इन्हीं सेवाओं ने उन्हें अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के 12 वें सत्र हेतु उन्हें महामंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपी है। संगठन के नवीन द्वादश सत्र हेतु सोमनाथ में सम्पन्न राष्ट्रीय बैठक 'सोहम' सत्रान्त समारोह 2020 में सर्वसम्मति से श्रीमती बांगड़ को राष्ट्रीय महामंत्री सर्वसम्मति चुना गया। श्रीमती बांगड़ इससे पूर्व एकादश सत्र में राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहीं। इस पद पर रहते हुए उन्होंने विभिन्न शहरों का भ्रमण करते हुए समाज की महिलाओं को संगठन में जुड़ने का आह्वान किया और जिला व स्थानीय स्तर पर नये महिला संगठन बनाने में सफलता प्राप्त की । शरबत वितरण तथा बेंडिंग मशीन लगाने जैसे वर्ल्ड रिकॉर्ड राष्ट्रीय कार्यक्रमो में राष्ट्रीय स्तर पर बहनों को प्रोत्साहित करते हुए अपने मध्य उत्तर प्रदेश तथा कानपुर शहर में विशेष रूप में तन-मन-धन से प्रमुख सहभागिता निभाई। श्रीमती बांगड़ माहेश्वरी महिला उद्योग एम.एम.यू. ब्रांड की डायरेक्टर व अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला सेवा ट्रस्ट की संरक्षिका न्यासी के रूप में भी जिम्मेदारी निभा रही हैं।

पति बने सेवा पथ की प्रेरणा

श्रीमती बांगड़ का जन्म 2 दिसंबर को दिल्ली के प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार में स्वर्गीय श्री बालकिशन काबरा व मां श्रीमती विद्यावती काबरा के यहाँ हुआ। माता-पिता की प्रेरणा से दिल्ली के प्रसिद्ध इंद्रप्रस्थ कॉलेज से बी०ए० की शिक्षा प्राप्त की। विवाह 19 जनवरी 1976 को कानपुर के प्रतिष्ठित पेट्रोलियम एवं ट्रांसपोर्ट व्यवसायी राजेंद्र कुमार बांगड़ के साथ हुआ। सेवा पथ की इस यात्रा में पति प्रेरणा स्त्रोत बने। अपनी व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद वे समाजसेवा से भी समर्पित भाव से सम्बद्ध रहे है। वर्तमान में भी श्री बांगड़ कई समाज सेवी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं एवं वर्तमान में माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन भी हैं। वर्तमान में उनके परिवार में तीन विवाहित बेटियां निधि, युक्ति, एडवोकेट नूपुर हैं। पति की प्रेरणा व परिवार के सहयोग से वर्ष 1981-82 में इनरव्हील क्लब कानपुरईस्ट की चार्टर सचिव के रूप में सदस्यता ग्रहण कर सामाजिक सेवा के क्षेत्र में सर्वप्रथम जुडी और तब से अब तक अर्थात पिछले 38 वर्षों से विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से कानपुर शहर में सामाजिक सेवा कार्यों में पूर्णतया संलग्न है।

ऐसे चली सेवा यात्रा

श्रीमती बांगड़ इनरव्हील की डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन तथा ऑल इंडिया वुमेंस कांफ्रेंस कानपुर की अध्यक्ष रहीं व वर्तमान में इसकी चीफ पैट्रन हैं। राजस्थान एसोसिएशन की महिला संयोजिका आदि विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए वैश्य एकता परिषद की महिला विंग की प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत हुई। कानपुर के वामा महिला मंडल की सेक्रेटरी भी रहीं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश सोशल वेल फेयर बोर्ड में आशा किरण परिवार परामर्श केंद्र कानपुर की सलाहकार भी हैं। वर्ष 2016 में रोटरी क्लब कानपुर विनायक श्री की चार्टर अध्यक्ष बनी और क्लब का शुभारंभ किया। उनके

नेतृत्व में केवल कानपुर ही नहीं अपितु संपूर्ण रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3110में मैत्री और सेवा कार्यों को चरितार्थ किया। रोटरी लिट्रेसी मिशन के अन्तर्गत कार्य करते हुए दो हैप्पी स्कूल का निर्माण कराया तथा बच्चों को शिक्षा व खेलकूद की सुविधा प्रदान की। वर्तमान में रोटरी वर्ष 2019-20 के आगामी सत्र हेतु डिस्ट्रिक्ट असिस्टेंट गवर्नर के रूप में कार्यरत है।

ऐसे प्रारम्भ हुई समाज की सेवा की शिखर यात्रा

1 सितंबर 1996 में राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोरमा लड्ढा के नेतृत्व में मध्य उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की संस्थापक सचिव बनी। तत्पश्चात उपाध्यक्ष कार्य समिति सदस्य व प्रदेश अध्यक्ष पदों को सुशोभित करते हुए अपने प्रदेश का सफल नेतृत्व कर चुकी हैं। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम आपणों उत्सव में सह संयोजिका रहीं। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के रजत जयंती वर्ष में प्रकाशित नवनारी जागृति विशेषांक के संपादक मंडल की सदस्य रही। नवम सत्र 2010 मैं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की सहमंत्री के रूप में उत्तरांचल की प्रगति हेतु सर्वदा प्रयासरत रहीं। अयोध्या में राष्ट्रीय कार्यक्रम आध्यात्मिक शिविर नवचेतना, उत्तरांचल अधिवेशन, नव उत्तरा लहरी व कार्यकारिणी मीटिंग की स्वागताध्यक्ष रहीं।

दशम सत्र में बनी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दशम सत्र वर्ष 2013में उत्तरांचल हेतु अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनी और उत्तरांचल के सभी प्रदेशों का भ्रमण करके वहां समाज की सदस्याओं में जागृति उत्पन्न की। उत्तरांचल दर्पण न्यूज़लेटर प्रकाशित किया व आंचलिक स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित कर प्रतिभावान बहनों को पुरस्कृत किया। उत्तरांचल में प्रथम बार प्रादेशिक अधिवेशन आयोजित करवाएं। ताकि समाज में संगठन की पहचान बने। हरिद्वार में आयोजित राष्ट्रीय कार्य समिति एवं कार्यकारिणी की बैठक एवं राष्ट्रीय उत्तरांचल अधिवेशन 'अभिनन्दनम' की 'कार्यक्रम अध्यक्ष' बनकर सफलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान किया इंदौर में संपन्न महाअधिवेशन 'सृजन सेतु' में देशभक्ति गीत प्रतियोगिता की प्रभारी बनने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ स्वास्थ्य स्वाध्याय समिति की राष्ट्रीय प्रभारी रही।

सेवा ने दिलाया सम्मान

ईश्वर में विशेष आस्था है समय-समय पर शिक्षा नृत्य नाटिका संगीत आदि विभिन्न क्षेत्रों में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर संपूर्ण सफलता प्राप्त की। दिल्ली रेडियो स्टेशन पर गिटार वादन के कई सफल कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। वेकानपुर स्पास्टिक सेंटर की लाइफ मेंबर व ट्रस्टी है विकलांग शिविर महिला शिक्षा अभियान भ्रूण हत्या रोकने के लिए कार्यशाला और मजदूरों के बच्चे को पंखुड़ी विद्यालय के माध्यम से मुफ्त शिक्षा व संसाधन उपलब्ध कराने जैसे विभिन्न सेवा कार्यों हेतु समय-समय पर सम्मानित किया गया। इसके अन्तर्गत श्रीमती बांगड़ मानस संगम द्वारा 'कानपुर गौरव', कानपुर जिला माहेश्वरी सभा द्वारा 'समाज निधि', कानपुर के विधायक द्वारा 'नारी रत्न पुरस्कार', पश्चिम बंगाल के राज्यपाली द्वारा 'महिला चेतना पुरस्कार', ऑल इंडिया कांफ्रेंस ऑफ इंटेलेक्चुअल्स द्वारा 'कानपुर रत्न', केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री द्वारा 'समाज चेतना सम्मान', मारवाड़ी मंच द्वारा 'आदर्श समाज सेविका', अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता'सम्मान तथा राष्ट्रीय पोलियो समिति रोटरी इंटरनेशनल द्वारा पोलियो उन्मूलन हेतु स्क्रॉल ऑफ ऑनर अवार्ड द्वारा सम्मानित किया गया। इसी प्रकार वैश्य एकता परिषद द्वारा 'वैश्य रत्न सम्मान', मध्य उ.प्र. माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा 'श्रेष्ठ समाज सेवा', रोटरी डिस्ट्रीक्ट द्वारा 2016 में 'कम्युनिटी सर्विस अवार्ड', इनरव्हील द्वारा मई 2017 में 'स्वयं सिद्धा सम्मान', मध्य उत्तर प्रदेश माहेश्वरी सभा द्वारा 'समाज रत्न', ऑल इंडिया वुमेन्स कॉन्फ्रेंस द्वारा 'अवार्ड ऑफ ऑनर' प्राप्त हुआ। जून 2017 में रोटरी डिस्ट्रिक्ट द्वारा 'श्रेष्ठ क्लब' व'श्रेष्ठ अध्यक्ष' अवार्ड व महिला दिवस 8 मार्च 2019 को रोटरेक्ट व रोटरी इन्टरनेशनल डिस्ट्रिक 3110 द्वारा सामजिक सेवाओ हेतु मातृशक्तिसम्मान से सम्मनित किया गया। केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के करुणा सामाजिक उत्थान सेवा समिति द्वारा प्राइड ऑफ़ कानपुर - 2020 सम्मान प्राप्त हुआ। इंटरनेशनल माहेश्वरी कपल इंडिया द्वारा माहेश्वरी वुमेन्स ऑफ द ईयर 2019 से सम्मानित किया गया।

ज्वेलरी व्यवसाय वास्तव में ऐसा है कि इसका नाम आते ही हीरे की तरह आंखों में भी चमक आ जाती है। हर किसी के आकर्षण का केन्द्र रहीं ज्वेलरी के व्यावसायिक क्षेत्र पर पुरूषों का ही वर्चस्व रहा है, लेकिन कोटा निवासी पियुषा न्याती ने न सिर्फ इसमें सेध लगाने की कोशिश की बल्कि इस मजबूती के साथ कदम रखे कि आज उनका ज्वेलरी व्यवसाय ग्राहकों के लिये विश्वास का दूसरा नाम बन गया है।

मधु बाहेती, कोटा

ज्वेलरी व्यवसाय में उभरता नक्षत्र पियुषा न्याती

वर्तमान में कोटा में ज्वेलरी प्रतिष्ठान ''ऑर्नेट ज्वेल्स'' अपनी सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के लिए जाना जा रहा है। इसकी विशेषता है, ज्वेलरी की उत्कृष्ट डिजाइन, उचित व्यवहार और एक पारदर्शी मूल्य प्रणाली। कोटा में यह ऐसा सर्वप्रथम प्रतिष्ठान है, जिसने अपनी सोना पिघलाने और शुद्धता परीक्षण की मशीन स्थापित की। इसकी विशेषता यह है कि यहाँ ग्राहकों का सोना पिघलाने की प्रक्रिया और सोने की शुद्धता की जाँच सब कुछ ग्राहक की आंखों के सामने होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता ही यह है कि इसका संचालन किसी पुरूष नहीं बल्कि एक माहेश्वरी नारी द्वारा किया जाता है, जो हैं पियुषा न्याती। श्रीमती न्याती यहीं पर नहीं ठहरीं। इस सफलता के बाद वे भव्य तीन मंजिला महिला परिधान शोरूम 'अजवा दी फैशन स्टूडियो एलएलपी' की शुरूआत भी कर चुकी हैं।

व्यवसायी परिवार में लिया जन्म

पियूषा का जन्म 25 अप्रैल 1979 को जयपुर में एक व्यवसायी परिवार में श्री द्वारकादास व शांता सोमानी के यहाँ हुआ। अतः बचपन से ही जाने अनजाने उन्हें व्यवसाय के गुर मिलते ही रहे। सेंट एंजेला सोफिया स्कूल, जयपुर से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने वर्ष 2000 में पूरे भारत में 44 वीं रैंक के साथ सीए स्वर्ण पदक के साथ पूर्ण किया। फिर कोटा के प्रतिष्ठित व्यसायी श्री श्रवणकुमार व प्रमिला न्याती के सुपुत्र राहुल के साथ परिणय बंधन में बंध गई। वर्ष 2007 में बेटी 'पिहुल' और वर्ष 2011 में जुड़वां बेटों 'आदवे - अडविक' का जन्म हुआ। उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों के लालन - पालन में भी कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। इसी का नतीजा है कि पिहुल, आडवे और अडविक न केवल अपने स्कूल में पढ़ाई में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं बल्कि विभिन्न खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। उनकी नानीजी श्रीमती शांता सोमानी प्रसिद्ध गायिका रही हैं। अतः आडवे - अडविक ने भी कई भजन सीखें हैं, जो वे संगीत कार्यक्रमों के दौरान सुनाते हैं। हनुमान चलीसा व गीता पाठ भी उनकी दिनचर्या में शामिल हैं।

ऐसे रखे व्यवसाय जगत में कदम

पियूषा ने वर्ष 2001 में अपनी व्यावसायिक यात्रा शुरू की। कुछ अनुभवों के बाद अक्टूबर 2008 में उन्होंने डायमंड, गोल्ड और कुंदन पोल्की ज्वेलरी प्रदर्शनी कोटा में शुरू की। व्यवसाय के क्षेत्र में उनके कदम आगे बढ़ते ही जा रहे थे, ऐसे में उन्हें वर्ष 2012 में एक 'ज्वेलरी स्टूडियो' प्रारम्भ करने की आवश्यकता महसूस हुई। बस फिर क्या था उन्होंने उसने अपने घर पर ही 'ऑरनेट ज्वेल्स' के नाम से ज्वेलरी स्टूडियो की शुरूआत कर दी। घर पर शुरूआत के पीछे लक्ष्य था, अपने बच्चों की देखभाल। वे व्यावसायिक उन्नति के लिये बच्चों के भविष्य को दाव पर नहीं लगाना चाहती थीं। घर से व्यवसाय के कारण उन्हें अपने छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल का पर्याप्त समय भी मिल जाता था। अपने ग्राहकों को अच्छी गुणवत्ता व डिजाईन की ज्वेलरी देने के लिये श्रीमती न्याती ने अपने ज्ञान की वृद्धि भी जारी रखी। इसके लिये उन्होंने डायमंड ग्रेडिंग कोर्स, डायमंड असोर्टिंग कोर्स, पर्ल ग्रेडिंग पाठ्यक्रम और समय-समय पर अन्य विभिन्न पाठ्यक्रम पूर्ण किये और अपनी दक्षता का विकास किया।

ऐसे बढ़े शिखर की ओर कदम

वे स्वयं कहती हैं कि पति राहुल, ससुर श्री श्रवण कुमार और सास श्रीमती प्रमिला न्याति शुरू से ही बहुत सहयोगी रहे, जिससे आगे कदम बढ़ाने में सहयोग मिला। घर से संचालित इस व्यवसाय को जब ग्राहकों का अच्छा सहयोग व समर्थन मिलने लगा, तो पति के सहयोग से उन्होंने इसका

भव्य शोरूम प्रारम्भ करने की योजना बना ली। आखिरकार उनके इस सपने ने साकार रूप लिया और 27 अगस्त 2015 को 2500 वर्गफीट के भव्य शोरूम का शुभारम्भ कर दिया। इस शोरूम को उत्कृष्टतम् बनाने के लिये उन्होंने हर आधुनिक तकनीक और अपने ज्ञान का उपयोग किया। शहर में सर्वप्रथम सोना पिघलाने व शुद्धता जाँचने की मशीन की स्थापना उनके इन्हीं प्रयासों में शामिल है। प्रयास यह रहा कि ग्राहकों को मनपसंद डिजाईन तो दी ही जाऐ साथ ही उनके विश्वास को भी हासिल किया जाऐ।

आखिरकार प्रयास रंग लाये

उनके इन प्रयासों ने न सिर्फ ग्राहकों के बीच उनके व्यवसाय को लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया अपितु ज्वेलरी व्यवसाय जगत में सम्मान भी दिलाया। उनके इन प्रयासों की राष्ट्र स्तरीय पत्रिका 'रिटेल आभूषण' ने भी न सिर्फ सराहना की, बल्कि उन्हें उनके प्रयासों के लिये सम्मानित भी किया गया। उनका एक पौधे की तरह प्रारम्भ व्यवसाय अब विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। इस क्षेत्र में सफलता के बाद श्रीमती न्याती भव्य तीन मंजिला महिला परिधान शोरूम 'अजवा दी फैशन स्टूडियो एलएलपी' द्वारा वस्त्र व्यवसाय में भी सशक्तता से कदम रख चुकी हैं। अब आगामी भविष्य के लिये उनकी योजना अपने इस ज्वेलरी व्यवसाय को ब्रॉण्ड के रूप में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलवाना है, जिसके लिये वे आगामी 10 वर्षों में राजस्थान के विभिन्न शहरों में अपने व्यवसाय के आऊटलेट्स खोलना चाहती हैं।

समाजसेवा मे भी सक्रिय

श्रीमती न्याती अपने परिवार व व्यवसाय दोनों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं। ऐसे में उनकी व्यस्तता कम नहीं है। इसके बावजूद वे समाजसेवा के क्षेत्र में भी यथासंभव योगदान देने में पीछे नहीं रहतीं। इसके लिये वे समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रिय विभिन्न क्लबों और गैर सरकारी संगठनों से भी जुड़ी हुई हैं। श्रीमती न्याती वर्ष 2014 में 'जेसीआई सुरभि' से सम्बद्ध हुई और अभी तक बोर्ड ऑफ डायरेक्टर के रूप में कई पदों पर अपनी सेवा दे चुकी हैं। वर्तमान में इस संस्था को 'वाईस प्रेसिडेंट - ट्रेनिंग' के रूप में सेवा दे रही हैं। वर्ष 2017-18 में 'रोटरी क्लब पद्मिनी' की अध्यक्ष भी रहीं। माहेश्वरी समाज में भी श्रीमती न्याती निःस्वार्थ भाव से अपना यथासंभव योगदान देती रही हैं।

With Best Compliments from

Balkrishan Bang
9461434230

Ramprakash Bang
9388605053

Rameshwarlal Bang
9414496331

DR. Vijay Bang
8129272101

Bharat bang
9495932910

Vinay Bang
7300145696

Bang Krshi Farm
Paladi Ranwata,
Dist. Jodhpur (Raj.)

Bang Property
Kachery Choraya,
Jodhpur (Raj.)

Bang Krshi Farm
Rampuriya
Dist. Bara (Raj.)

MARBLE CENTRE
Wholesale Dealer Of Granite, Tiles ,Marble, Ceramic Tiles

Ramprakash Bang
(Ex. Secretary Maheshwri Sabha Cochin)

Pramila Bang
(Ex. Vice Prasident MMM. Cochin)

32/1476, Palarivattom Bye Pass, Near Asianet, Palarivattom, Cochin - 682025, Kerala.
PH. 0484 2340122, 2340583, E-mail:- vijaybang1989@yahoo.com

उच्च व्यावसायिक योग्यता प्राप्त करने के बाद भी कोई समाजसेवा के पथ की ओर अग्रसर हो जाये, तो यह फैसला वैसा ही कहा जाएगा जैसा सिद्धार्थ या गौतम ने मानवता के कल्याण के लिये वानप्रस्थ हेतु किया था। सीहोर निवासी डॉ. प्रतिभा झँवर ऐसी ही समाजसेवी हैं, जो अपनी तमाम व्यावसायिक उपलब्धियों के बावजूद निःस्वार्थ भाव से समाजसेवा के प्रति ही समर्पित हो गई।

डॉ. दीप्ति परवाल

विशिष्ट नेतृत्व क्षमता की "प्रतिभा" डॉ. प्रतिभा झंवर

सीहोर निवासी डॉ. प्रतिभा झंवर की समाज में विशिष्ट पहचान एक ऐसी समाजसेवी के रूप में है, जिन्होंने महिला संगठन की प्रदेश अध्यक्ष के रूप में प्रदेश को सफलता के शीर्ष की ओर पहुँचा दिया। समाज को एक सूत्र मे पिरोने वाली प्रतिभा जी को 2016 मे प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। तथा इनके कार्यकाल में अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की 20 प्रतियोगिताओ मे मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्र माहेश्वरी महिला संगठन को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

1993 में सीहोर माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष बनी। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में माहेश्वरी भवन निर्माण की घोषणा के मात्र 10 मिनिट की अवधि में उस समय की बड़ी धन राशि 3 लाख रुपये संग्रहीत करवा दिया। फ़रवरी 2009 में इन्हें प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन का सचिव निर्विरोध बनाया गया। प्रदेश स्तर पर इन्होंने सीहोर माहेश्वरी समाज का नाम गोरवान्वित किया है, 2012 मे इन्हे श्रेष्ठ प्रदेश सचिव के रूप मे अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा सिल्वर शील्ड से सम्मानित किया गया। सीहोर की कई सामाजिक संस्थाओ ने कई वार शाल, श्रीफल व सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया।

चुनौतियों के बीच भी उच्च शिक्षा यात्रा

डॉ प्रतिभा झंवर का जन्म स्व. श्री नारायण दास व स्व. श्री कृष्णा बाहेती के यहां 24 जनवरी 1952 को आगर मालवा में हुआ। माता-पिता से संस्कार व सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करने के साथ इन्होने एम.ए.अर्थशास्त्र, एल.एल.बी. एवं डी.एच.बी. होम्योपेथी की उच्च शिक्षा प्राप्त की। 1975 में 8 मार्च को सीहोर के डॉ सुरेश झंवर के साथ विवाह बंधन में बंध गईं। 1976 में पुत्र रत्न, 1984 में पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्री मानसिक विकलांग हुई। विषम परिस्थितियां होने के बाद भी जिस काल मे इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालो की संख्या अत्यंत न्यून थी, उस समय में इन्होने अपने उच्च अकादमिक कैरियर के स्थान पर सामाजिक सरोकार, पारिवारिक दायित्व व समाज सेवा को प्राथमिकता दी। आदर्श ग्रहणी, समाज सेविका तथा श्रेष्ठ अध्यापिका के रूप मे बहुरंगी प्रतिभा को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान में वे अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्रीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा कार्यसमिति सदस्य नियुक्त की गयी है।

महिलाओं की आम समस्या

प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम

नारी जीवन की अपनी भिन्न परेशानियाँ भी होती है। ऐसी ही एक परेशानी है, प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम जिससे लगभग अधिकांश महिलाओं को गुजरना पड़ता है। आईये जानें इंदौर निवासी ख्यात मनोविशेषज्ञ डॉ. श्रीमित माहेश्वरी से क्या है, प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम और कैसे पाऐं इस परेशानी से मुक्ति?

डॉ. श्रीमित माहेश्वरी
कंसलटेंट साइकैटरिस्ट
इंदौर 8105949881

प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम एक ऐसी परेशानी है जो महिलाओं को हर महीने मासिक धर्म शुरू होने के कुछ दिन पहले होती है। इस संदर्भ में व्याख्यान से यह पता चला है कि इस समस्या के लक्षण लगभग ४० प्रतिशत महिलाओं में मासिक धर्म के पहले पाए जाते हैं। ज्यादातर महिलाओं में यह समस्या मासिक धर्म के ६ दिन पहले शुरू होती है, इसके लक्षण सबसे ज्यादा 2 दिन पहले देखे जाते हैं जब इनकी तीव्रता भी ज्यादा होती है, और यह मासिक धर्म शुरू होते ही खत्म हो जाती है। अवधि तो इसकी मात्र ६ दिन होती है, लेकिन जब इसकी स्थिति गम्भीर होती है तो महिलाऐं अत्यंत परेशान हो जाती हैं। लेकिन वे दुविधा में रहती हैं क्योंकि उन्हें स्वयं समझ नहीं आता कि वे क्यों परेशान हैं? वास्तव में इसका कारण यह समस्या ही रहती है।

सामान्य लक्षणों से भी पहचानें

प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम के लक्षण आमतौर पर तीन प्रकार से जाने जाते है। यह शारीरिक, मानसिक अथवा व्यवहारिक लक्षण होते हैं। शारीरिक लक्षण जैसे की कमर का दर्द, सरदर्द, पैरों में दर्द, पैरों मे सूजन आना, पेट फूलने की समस्या आदि है। मानसिक लक्षण जैसे कि चिड़चिड़ापन व मूड स्विंग सबसे ज्यादा महिलाओं को परेशान करता है। इसके अलावा घबराहट, टेंशन, उदासी, जल्दी भावुक हो जाना आदि कुछ मानसिक लक्षण है। इसके व्यवहारिक लक्षण जैसे कि कम नींद आना या बहुत ज्यादा नींद आना, बिल्कुल भूख नहीं लगना या किसी-किसी खाद्य पदार्थ की अत्यधिक क्रेविंग होना, एकाग्रता में कमजोरी, अपना कार्य करने में आनंद न आना आदि है।

यह होती है गम्भीर स्थिति

इस समस्या का एक गंभीर रूप भी पाया गया है जिसको पीएमडीडी अथवा प्रीमेंस्ट्रूअल डिस्फोरिक डिसऑर्डर कहते है और यह लगभग ३ से ८ प्रतिशत महिलाओं में देखा जाता है। इन समस्याओं का सीधा असर महिलाओं की व्यवसायिक, सामाजिक एवं निजी जिंदगी पर पड़ता है। प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम कॉलेज स्टूडेंट एवं स्कूल के बच्चों में भी पाया जाता है और इस कारण से स्टूडेंट की पढ़ाई एवं दिनचर्या पर गहरा असर पड़ता है। यह समस्या शरीर और दिमाग में कुछ हॉरमोन और केमिकल मे बदलाव के कारण होती है। जरूरी बात यह है कि हम इन लक्षणों को समय रहते पहचाने और अगर यह लक्षण बीमारी का रूप लेते हैं तो जल्द से जल्द अपने डॉक्टर को या मनोचिकित्सक को दिखाएं।

कैसे करें इससे बचाओ

इससे बचने के लिए और इसे हमारे जीवन पर हावी ना होने देने के लिए नियमित व्यायाम, पौष्टिक भोजन, समय पर भोजन, समय पर सोना, मोबाइल एवं कंप्यूटर का इस्तेमाल कम करना बहुत जरूरी है। हमारे समाज में एवं देश में मासिक धर्म से संबंधित समस्याओं की चर्चा नहीं होती और कई बार इसे शर्म की बात समझा जाता है। प्रीमेंस्ट्रूअल सिंड्रोम एक बहुत ही आम समस्या है और इसके बारे में चर्चा करना और समाज को इसके बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी है। इससे भी ज्यादा जरूरी है कि अगर आपको या आपके किसी परिजन को यह समस्या है तो इसका इलाज कराया जाए।

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा
सुवर्ण से समृद्ध
स्वामला®
हर मौसम में संपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक
सेहत का खजाना, दो* चम्मच रोजाना!
रोगप्रतिकार क्षमता बढ़ाने में मदद करें
शरीर में चुस्ती, स्फूर्ति एवं उर्जा लाए
शरीर एवं मन का स्वास्थ्य बनाए रखें
रोग पुनरुत्पत्ति रोकने में मदद करें
बढ़ती उम्र के बच्चों में पोषण मूल्यों की कमी को दूर करें
६० वर्षों से आयुर्वेद विशेषज्ञों का विश्वसनीय सुवर्ण समृद्ध च्यवनप्राश
स्वामला, समय के कसौटी पर खरा उतरा एक ऐसा कल्प है, जो चुनिंदा आवलें, गाय का शुद्ध घी, शुद्ध शहद, सुवर्ण भस्म, रौप्य भस्म व पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज से समृद्ध एक परिपूर्ण आयुर्वेद रसायन होने से शरीर को आवश्यक पोषण और बल देता है।
*मात्रा
बड़ों के लिए - एक बड़ा चम्मच (१५ ग्राम) दिन में दो बार
बच्चों के लिए - एक छोटा चम्मच (५ ग्राम) दिन में दो बार
हर मौसम में संपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक
सुवर्ण से समृद्ध
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
शास्त्रोक्त • मानकीकृत • सुरक्षित • उत्तम गुणवत्ता • १४५+ वर्षोकी आयुर्वेद परंपरा
www.sdlindia.com | For Health & Trade Enquiries Tollfree: 1800 22 9874
F20SWDad11x8.5H303

संक्रामक विकार
आयुर्वेद समाधान

आज के इस आधुनिक युग के दौर में हम किसी ना किसी संक्रामक विकार से पीडित हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर देखा जाय तो जैसे ही ऋतु बदलाव हो जाता है, अनेक व्यक्ति फ्लू जैसे संक्रामक विकार से ग्रस्त हो जाते हैं। घर में एक व्यक्ति को होने के बाद अन्य सदस्य भी संक्रमित होते दिखाई देते हैं। आज कल तो उत्पन्न होने वाले संक्रामक विकार भी अत्यंत घातक स्वरुप के तथा ठीक होने पर भी शरीर पर अत्यंत बुरा असर छोडते दिखाई दे रहे हैं।

धीरज भूसारी

आयुर्वेद के विद्वान ऋषियों द्वारा वर्णित उपायों को देखें तो इन संक्रमण द्वारा उत्पन्न बीमारियों से बचना मुमकिन हो सकता है। आयुर्वेद द्वारा वर्णित उपाय इस प्रकार हैं- दूषित जगहों से दूर रहना, दूषित अन्न एवं जल का त्याग करना, शारीरिक स्वच्छता रखना, संक्रामक रोगों से प्रभावित व्यक्ति के संपर्क में न आना, उसके शरीर से स्पर्श न करना, साथ में भोजन तथा शयन वर्ज्य करना, प्रभावित व्यक्ति द्वारा इस्तमाल की हुए वस्त्र आदि का प्रयोग नहीं करना, उसके निःश्वास के सान्निध्य में न रहना। लगभग इन्हीं उपायों को सामान्य तौर पर आज प्रयोग में लाया जा रहा है। रोगों की उत्पत्ति ही न हो इसलिए इन प्रतिरोधात्मक उपायों जरुर करे साथ ही अपनी रोगप्रतिकारमता को भी उत्तम रखें। किसी भी संक्रमण से शरीर प्रभावित न हो और यदि प्रभावित हो भी गया, तो भी बिना किसी नुकसान से जल्द स्वास्थ्य प्राप्त हो, इसलिए आयुर्वेद में वर्णित सबसे पहला एवं महत्वपूर्ण उपाय है, रसायन चिकित्सा।

रसायन सेवन के बारे में आचार्य चरक बताते हैं,

रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगाश्च कालवित्।
रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु।
धातवश्चाभिवर्धन्ते जरामान्द्यमुपैति च।

अर्थात् रसायन औषधियों के सेवन से रस से लेकर शुक्र धातु तक सभी शरीर धातुएँ उत्तम सौष्ठव प्राप्त कर लेती हैं। आयुर्वेद के अनुसार शरीर की रोगप्रतिकार क्षमता धातु घटकों के सौष्ठव पर निर्भर रहती है और उत्तम रोगप्रतिकार क्षमता से शरीर में विकार उत्पन्न होने की संभावना कम हो जाती है।

बच्चे या वृद्ध व्यक्तियों में धातुओं की दुर्बलता से रोगप्रतिकारक्षमता की कमी होती है। वृद्ध व्यक्तियों में विशेषतः मधुमेह, हृदय एवं मस्तिष्क संबंधित विकार या श्वसन संस्थान के विकार रहने से संक्रमणजन्य विकारों से वह जल्द प्रभावित होते हैं। आयुर्वेद में वर्णित उपायों को तथा औषधियों को आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह से लेने से शरीर की संक्रामक विकारों से लडने की क्षमता को उचित रखा जा सकता है। छोटे बच्चों के लिए महास्वर्णयोग इस स्वर्णप्राशन का नियमित सेवन करवाना अत्यंत लाभदायक होता है। आयुर्वेद में कहा गया है कि सुवर्ण से संस्कारित शरीर में रोग ठहर नहीं सकता, जिस प्रकार कमल के पत्तों पर पानी नहीं ठहरता। इसका मतलब दुसरे शब्दों में देखा जाए तो सुवर्ण के कारण उत्पन्न हुई रोगप्रतिकार क्षमता विकार को शरीर में उत्पन्न होने को रोकने में शरीर को बल प्रदान करती है। यदि शरीर में रोग उत्पन्न हो भी गया, तो भी उसकी तीव्रता कम होती है। च्यवनप्राश का प्रयोग करना तथा बडे बच्चों से लेकर सभी के लिए स्वामला इस सुवर्ण भस्म, रजत भस्म तथा मकरध्वज जैसे घटकों से संपन्न च्यवनप्राश का प्रयोग, मधुमेह से पीडित व्यक्तियों के लिए वसंत कुसुमाकर रस या सुवर्ण वसंत मालती, संशमनी वटी जैसे कल्पों का प्रयोग रसायन हेतु उपयुक्त हो सकता है। सर्दी खाँसी के साथ बुखार के लक्षण दिखाई देने पर महासुदर्शन काढे, अमृतारिष्ट का प्रयोग लाभकर हो सकता है।

आज के दौर में दिखाई देने वाले संक्रामक विकारों से यदि कोई व्यक्ति अधिक तीव्रता से या अधिक काल तक प्रभावित रहा तो उस विकार के ठीक होने के बावजूद भी उसके अत्यंत गंभीर उपद्रव या दुष्परिणामों का परीणाम देर तक उस शरीर पर रहता है। इस दुष्परीणामों के कारण वह व्यक्ति बार बार बिमार होने की या उस प्रभावित हिस्से की कार्यक्षमता में कमी होने जैसी तकलिफों से जिंदगीभर पीडित रह सकता है। आयुर्वेद में वर्णित रसायन चिकित्सा वह उपचार है, जो बिमारी ठीक होने के बाद शरीर पर बाकी रह गये उपद्रवों को या दुष्परीणामों को दूर करने के लिए कार्य करती है। शरीर के धातु घटकों को हुई क्षति को दूर कर उन्हें पुनः सौष्ठव प्राप्त कराने में रसायन चिकित्सा सहायता करती है। शरीर का जो अवयव या हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ है, उसको ध्यान में लेकर आयुर्वेद रसायन दवाईयों का इस्तमाल किया जाता है। उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो श्वसन संस्थान के अवयवों के लिए सितोपलादि चूर्ण या चौसष्ट पिप्पली जैसे सादे एवं अत्यंत गुणवान रसायन कल्पों का प्रयोग किया जा सकता है। यह कल्प श्वसन संस्थान के अवयवों में उत्पन्न क्षति को दूर कर उन्हें पुनः स्वास्थ्य प्रदान करने में अवश्य लाभ देता है। संक्रामक विकारों को लेकर एक और बात का विवेचन यहाँ पर करना उचित होगा और वह है स्वास्थ्यपूर्ण जीवनशैली को अपनाना। आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य यह स्वास्थ्यपूर्ण जीवन के तीन अत्यंत महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं। इनका योग्य मात्रा में एवं योग्य काल में किया गया प्रयोग शरीर का स्वास्थ्य बनाए रखने में अत्यंत लाभदायक होता है।

अन्धत्व का कारण बन सकती है डाइबिटिक रेटिनोपैथी

जब मधुमेह (डाइबिटीज) का प्रभाव आंख के पर्दे पर पड़ता है, तो आंख के पर्दे पर बनी रक्तवाहिनियों से रक्त या तरल पदार्थ निकलने लगता है, जो पर्दे को नुकसान पहुंचाता है। इसे मधुमेह जनित आंख के पर्दे का रोग (डाइबिटिक रेटिनोपैथी) कहा जाता है। यह ऐसी बीमारी है, जो अंधत्व का कारण भी हो सकती है।

डॉ. सोहन नारायणदास लोहिया, वर्धा (महाराष्ट्र)

मधुमेह जनित रेटिनोपैथी छोटी रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचने से होती है। ये रक्त वाहिकाएं ही रेटिना को पोषण पहुंचाती हैं। क्षतिग्रस्त होने पर इनमें से रक्त व अन्य तरल पदार्थो का रिसाव होने लगता है, जिससे रेटिना के ऊतकों में सूजन आ जाती है और नजर धुंधलाने लगती है। यह स्थिति आमतौर पर दोनों आंखों को प्रभावित करती है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के मुताबिक, हालांकि मधुमेह जनित रेटिनोपैथी हमेशा से ही मधुमेह से जुड़ी एक बड़ी परेशानी रही है, लेकिन हाल के वर्षों में इसके मामलों में वृद्धि देखने में आ रही है। यदि समय पर उचित कदम नहीं उठाए गए, तो स्थिति और अधिक खराब हो सकती है।

ऐसे बनती है और विकट स्थिति

मधुमेह जनित रेटिनोपैथी को मधुमेह पीड़ितों में अंधेपन का प्रमुख कारण माना जाता है। विश्व सवास्थ्य संगठन के अनुसार अंधेपन का एक प्रमुख कारण है 'डायबिटिक रेटिनोपैथी'। हालांकि, यह एक ऐसी स्थिति है, जिसे ठीक किया जा सकता है और होने से रोका भी जा सकता है? कुछ कारक जो इस स्थिति को बढ़ाते हैं, उनमें प्रमुख हैं- ग्लाइसेमिक नियंत्रण में कमी, उच्च रक्तचाप और उच्च कोलेस्ट्रॉल स्तर। ज्यादातर रोगियों में, मधुमेह जनित रेटिनोपैथी आमतौर पर एकदम से पता नहीं चल पाती, यानी इसके लक्षण हल्के होते हैं। इस कारण से, मधुमेह पीड़ित लोग इस बात से तब तक अनजान रहते हैं, जब तक कि रोग बढ़ नहीं जाता। खोया हुआ विजन बहाल नहीं हो सकता। इसलिए, यह आवश्यक है कि मधुमेह पीड़ित व्यक्ति रेटिनोपैथी का पता लगाने के लिए नियमित रूप से जांच कराते रहें।

दृष्टि हानि को कम करने के तरीके

रक्त शर्करा के स्तर पर नियंत्रण करके इससे बचा जा सकता है। रक्त शर्करा के स्तर पर लगातार नजर रखनी चाहिए और पर्याप्त शारीरिक गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहिए। रक्तचाप को नियंत्रित करें: इस विकार से संबंधित जटिलताओं में से एक मैकुलर एडेमा है, जो उच्च रक्तचाप वाले लोगों में होता है। इसलिए, इसके लेवल को कंट्रोल में रखें। अपनी आंखों की जांच नियमित रूप से कराएं। यद्यपि मधुमेह जनित रेटिनोपैथी और अन्य ऐसी समस्याओं के लिए स्क्रीनिंग काफी नहीं होती। फिर भी इससे समय पर उपचार में मदद मिल सकती है। डाइबिटिक रेटिनोपैथी का जितनी जल्दी से जल्दी पता चल जाए, उतना अच्छा है। यह तभी संभव है जब आंख की जांच खासकर पर्दे की जांच साल में कम से कम एक बार या नेत्र विशेषज्ञ के सुझाव के अनुसार होती रहे।यह आवश्यक है कि डाइबिटिक रेटिनोपैथी का पता लगने के बाद डाइबिटीज को प्रभावी तरीके से नियंत्रित किया जाए। इसके अलावा हाई ब्लड प्रेशर और बढ़े हुए कोलेस्टेरॉल को नियंत्रण में रखना आवश्यक है। लिपिड प्रोफाइल टेस्ट सामान्य रहना चाहिए और अगर गुर्दे से संबंधित बीमारी है, तो उसे डॉक्टर के परामर्श से नियंत्रण में रखना चाहिए।

ऐसे उत्पन्न होता है अंधत्व

डाइबिटिक रेटिनोपैथी के दो प्रकार होते हैं। पहला, बैकग्राउंड डाइबिटिक रेटिनोपैथी और दूसरा प्रोलिफरेटिव डाइबिटिक रेटिनोपैथी। बैकग्राउंड डाइबिटिक रेटिनोपैथी में आंख के पर्दे के अंदर रक्तवाहिनियां फूलने लगती हैं और उनसे रक्त या तरल पदार्थ का रिसाव होने लगता है। इससे पर्दे के टिश्यूज में सूजन आ जाती है और इसमें पीले रंग का पदार्थ (वसा) जमा होने लगता है, जिसे एक्सयूडेट्स कहते हैं। यदि रिसाव होने पर तरल पदार्थ मैक्युला (पर्दे के केंद्र) पर होता है तो यह महीन या सूक्ष्म दृष्टि पर असर डालता है और गंभीर बीमारी का रूप धारण कर लेता है। प्रोलिफरेटिव डाइबिटिक रेटिनोपैथी में असामान्य नई रक्त वाहिनियां पर्दे पर ऑप्टिक नर्व (दृष्टि तंत्रिका) या विट्रीअॅस (पर्दे के आगे के रिक्त स्थान) में फैलने लगती हैं। यह नसों का जाल जब फटता है, तब इनसे रक्त निकलने लगता है जो विट्रीअॅस जेली में भर जाता है। इस कारण रोशनी आंख के पर्दे तक नहीं पहुंच पाती। कभी-कभी यह विट्रीअॅस जेली में खिंचाव पैदा कर देती है, जिससे पर्दा पीछे से उखड़ जाता है या अपने स्थान से हट जाता है। इस स्थिति को ट्रैक्शनल रेटिनल डिटेचमेंट कहते हैं। यह स्थिति दृष्टि को तो हानि पहुंचाती ही है, पूर्ण अंधापन भी ला सकती है। कभी-कभी तो इसके साथ काला मोतिया (ग्लूकोमा) की समस्या भी पैदा हो जाती है।

सही समय पर उपचार कारगर

इसके उपचार के अंतर्गत कई विधियों का इस्तेमाल किया जाता है। लेजर फोटो कोएगुलेशन विधि में लेजर की किरणों द्वारा आंख की नसों से रक्तस्राव को रोकने और असामान्य नसों को विकसित होने से रोकने के लिए रक्तवाहिनियों को सील कर दिया जाता है। लेजर उपचार द्वारा रक्तस्राव को रोक दिया जाता है, जिससे दृष्टि में सुधार या स्थिरता आती है। लेजर उपचार की आवश्यकता बीमारी की गंभीरता पर निर्भर करती है।

इंजेक्शन

आजकल कुछ दवाओं का आंख में इंजेक्शंस लगाया जाता है, जो डाइबिटिक रेटिनोपैथी में होने वाले परिवर्तनों को रोकने में सहायक हैं । इन इंजेक्शनों की जरूरत उन स्थितियों में होती है, जहां पर मैक्युला में सूजन ज्यादा होती है या फिर जहां लेजर उपचार के बाद भी रक्तस्राव होता है। यदि रक्त भरने से पारदर्शी विट्रीअॅस जेली धुंधली हो जाती है या ट्रैक्शनल रेटिनल डिटेचमेंट हो जाता है, तो लेजर उपचार काम नहीं करता। ऐसी स्थिति में विट्रेक्टॅमी नामक ऑपरेशन की आवश्यकता होती है ।

पूर्व में भी कई महामारी और भीषण रोग आये, जिन्होंने कई जीवन को निगल लिया। फिर वैज्ञानिकों ने इसकी दवा व टीके आदि इजाद कर इससे मुक्ति दिलाई। लेकिन रोगों का अंत नहीं हुआ, वे सतत् रूप से नये - नये रूपों में आते ही रहे और कई जीवनों की बलि लेते ही रहे हैं। ऐसे में दवा के अलावा भी किसी ऐसे उपाय पर विचार करना आवश्यक हो जाता है, जो वर्तमान कोरोना महामारी ही नहीं बल्कि भविष्य में आने वाली किसी अन्य नवीन बीमारियों से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर सके। आज सम्पूर्ण विश्व अपने गुरू भारत की ओर आशा के साथ देख रहा है। वास्तव में हमारे पुरातन खजाने में इन सभी समस्याओं का समाधान छुपा है, और उनमें से ही एक प्रभावी तरीका है, योग।

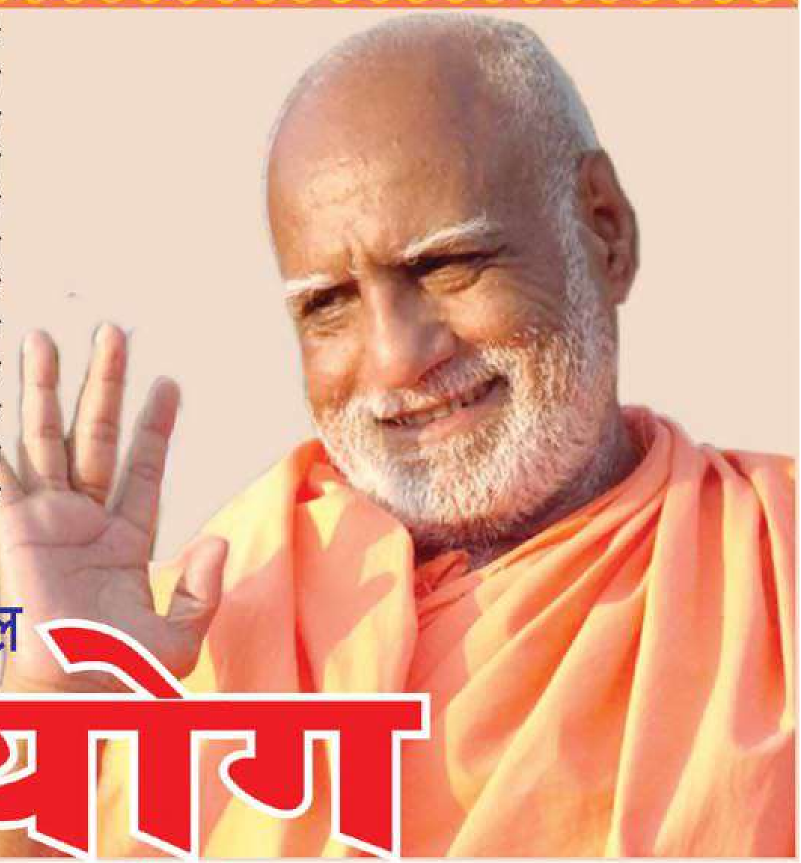

कोरोना वायरस के निर्मूल का अचूक उपाय है योग

महायोगी स्वामी श्री बुद्धपुरीजी महाराज, मोगा (पंजाब)

विश्व की सर्वश्रेष्ठ कृति मानव को लगने लगा था कि जैसे सारा विश्व उसका घर बन गया, किन्तु कोरोना वायरस ने थोड़े ही समय में उसे आतंकित कर दिया। एक देश से दूसरे देश तो क्या अपने घर से बाहर निकलने की भी मनाही है। छोटे-बड़े सभी देशों में स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, संस्थान, व्यापार, यातायात आदि सब बन्द हो गये हैं। प्रायः सब जगह लॉकडाउन घोषित कर दिया गया है। लोगों को अपने घरों में ही सिमटे रहने की चेतावनियाँ बार-बार दी जा रही हैं। कारोबार ठप्प हो रहे हैं। प्रत्येक प्राणी भयभीत है कि कहीं मुझ पर यह वायरस हमला न कर दे। और हमलों की तीव्रता है कि बढ़ती ही जा रही है। इसमें शक नहीं कि इस वायरस पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी।वैज्ञानिक दिन-रात खोजें करने में लगे हुये हैं-किन्तु क्या वह पूर्ण विजय होगी? समय-समय पर अनेक महामारियों ने मानव जाति पर हमले किये; वे रोगाणु पराजित भी हुये किन्तु उनका स्थान नयी किस्म के रोगाणुओं ने ले लिया। यह क्रम कब तक चलेगा? कब होगी पूर्ण विजय?

कब होगी पूर्ण विजय

क्या रोगाणु ही रोग के मुख्य कारण हैं? नहीं! वस्तुतः रोगाणुओं से भी बढ़कर इन्हें अपने शरीर में प्रवेश प्राप्तिपथ प्रदान करना मात्र ही विचार करने वाली बात यह है कि कहीं वह इन्हें अनजाने ही निमन्त्रण तो नहीं देता रहता? एक रोगाणु पर विजय प्राप्त होती है तो दूसरे रोगाणु कहाँ से आकर प्रविष्ट हो जाते हैं मानव शरीर में? आखिर, कहाँ है रोगों पर पूर्ण विजय प्राप्ति का पथ? पूर्ण विजय तो तभी मानी जायेगी जब 'कोरोना वायरस' तो क्या कोई भी रोगाणु शरीर पर हमला न कर सके। इतना ही नहीं, अन्य रोग जैसे कैंसर, शुगर, ब्लड प्रेशर, तनाव, गैस, एसिडिटी आदि शरीर के ही अन्दर पनपने वाले जानलेवा रोग भी निर्वीय हो जायें।

क्या इनके लिये अनेक अचूक औषधियों का आविष्कार करना होगा? नहीं! ऐसी बात नहीं है क्योंकि औषधि सेवन तो प्रायः रोगोत्पत्ति के बाद ही होता है; जहाँ वह पूरा काम करे या न करे। इसके लिये तो हमें ऐसी विधि अपनानी होगी जो रोगों के उत्पन्न होने की धरा का ही रूपान्तरण कर दे;

जो मानव को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे। ध्यान रहे, रोग अनेक हो सकते हैं किन्तु स्वास्थ्य सदा एक ही होता है। मात्र स्वास्थ्य (रोग मुक्ति) ही नहीं बल्कि पूर्ण स्वस्थ होने की विधि अपनानी होगी। वस्तुतः रोग शरीर की प्रकृति नहीं हैं, स्वास्थ्य ही शरीर की प्रकृति है। रोग तो शरीर की विकृतियाँ हैं। यह विकृतियाँ मानव पिण्ड में तीन स्तरों पर प्रगट होती हैं- 1) मन, 2) प्राण, 3) इन्द्रियाँ। यह तीनों विकृत होकर अपने आदि शक्ति स्रोत से सीधे नहीं जुड़े रह पाते और इनकी गति शरीर से बाहर की ओर होती रहती है। ये ही बाहर से रोगाणुओं को अन्दर आने का अनजाने ही निमन्त्रण देते हैं या अन्दर खींचते हैं। ये ही स्थूल शरीर के अन्दर भी रोगाणुओं को पनपने देते हैं। (1) मन की विकृति है- भिनभिनाता हुआ चंचल और विषयों का गुलाम मन। (2) प्राण की विकृति है- श्वास का उथलापन और अधूरा आना-जाना। (3) मन और श्वास की मिली-जुली चालों का परिणाम है- इन्द्रियों का विषयों (खान-पान, प्राणी-पदार्थों) की आसक्ति जाल में उलझते रहना। यह तिकड़ी ही रोगाणुओं को अन्दर खींचती है और अन्दर पनपने देने का ताना-बाना बुनती है।

तेजस तत्व की वृद्धि की जाये

इन शारीरिक विकृतियों से मुक्ति का एक उपाय है- शरीर में तैजस तत्व की वृद्धि। दूसरे शब्दों में शक्ति का जागरण और वृद्धि की जाये। वैसे तो आहार के द्वारा भी शक्ति प्राप्त होती है किन्तु थोड़ा भी अधिक या कम आहार तो अग्नि मन्द करेगा। शरीर मोटा होगा या क्षीण होगा। दोनों अवस्थाओं में शक्ति क्षीण ही होगी। इसी प्रकार कर्मठता से भी शक्ति बढ़ती है किन्तु बहिर्मुखी कर्मों तथा लोभ-लालच अथवा राग-द्वेष भरे कर्मों से तो शरीर थकता-टूटता ही अधिक है। शक्ति क्षीण ही होती है। यदि तैजस तत्व की कमी हो तो 'देहं क्लेदयन्त्यः शिथिली कुर्युः' (शांकर भाष्य, छा. उ.) अर्थात् देह ढीली-ढाली (मोटी, शक्तिहीन) होती है। तेज ही खाये-पीये रस को शोषित करके रक्त और प्राण भाव में परिणत करता है। तेज से ही मन सबल होता है और वाणी में शक्ति का जागरण होता है। उपनिषद् वाणी की स्पष्ट घोषणा है, 'तेजसा सोम्य शुङ्गेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूलष्ठ' (छा. उ.) अर्थात् हे सौम्य! तेजोरूप अंकुर के द्वारा सद्रूप मूल की शोध कर। भाव यह है कि तेज के माध्यम से सत् (विनाशरहित, रोग-व्याधिरहित) परमात्मा से योग युक्त होने का प्रयास कर क्योंकि इससे प्राणी भी जरा-व्याधि आदि रोगों-दुःखों से मुक्त होगा। यह घोषणा है उन सनातन ऋषियों की जो स्वयं पूर्ण मुक्त थे। इस साधना का उपयोग वर्तमान में भी जो कोई भी करेगा और जितनी भी मात्रा में करेगा, उतना ही वह रोग-दुःख से मुक्त भी अवश्य होगा क्योंकि ये घोषणायें सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं।अतः शरीरस्थ इस तैजस वा अग्नि क्षेत्र सुषुम्ना में प्राणी की चेतना का प्रवेश कैसे हो?

प्रथम उपाय - सिद्धामृत सूर्य क्रियायोग

सूर्य क्रियायोग नाम से प्रचलित इस साधना को लाखों लोग अब तक कर चुके हैं। इससे दो-चार दिनों में ही लाभ मिलने शुरू हो जाते हैं। इसी साधना को जरा-व्याधि तथा मृत्युजित् सनातन ऋषि 'त्रिकाल संध्या' के नाम से दो-तीन घण्टे की अवधि तक दिन में तीन-तीन बार करते रहे हैं। वर्तमान समय में एक सामान्य प्राणी इसे 30-40 मिनट भी कर ले तो वह तेजोमय बनने का पथ प्राप्त कर लेगा। जब सूर्य लालिमा मुक्त तेजोमय हो जाये, तब इसे करना अधिक उचित है। बैठकर या खड़े होकर भी इसे किया जा सकता है। सूर्य की ओर मुख करके, रीढ़ की हड्डी सीधी रखते हुये, बन्द आँखों को सूर्य से सीधे जोड़ना है अर्थात् गर्दन थोड़ा पीछे रखना है जिससे सूर्य किरणें 90 डिग्री के कोण से नेत्र पटलों पर सीधी पड़ें। 5-10 मिनट आँखों की क्रियायें और श्वासमयी नाभि क्रियायें करें। फिर ऊँचे-नीचे स्वरों में विशेष मन्त्रों का उच्चारण करते हुये (1) हाथों को ऊपर उठाये रखें जैसे आवाहन कर रहे हों, फिर (2) दायें-बायें फैलायें जैसे आलिंगन कर रहे हों, अन्त में (3) गोद में रख लें जैसे समर्पण कर रहे हों। इस सारी क्रिया को 15-20 मिनट लग सकते हैं। विशेष ध्यान रहे कि इन तीनों मुद्राओं में (बन्द) आँखों का सीधा सम्बन्ध सूर्यदेव के साथ बना ही रहे और सस्वर मन्त्रोच्चारण होता रहे। इस प्रकार (1) सूर्यदेव के साथ नेत्र सम्बन्ध बनाये रखकर ध्यान करने से आँखों के पथ से सूर्य तेज मस्तक में प्रविष्ट होता हुआ और उत्तरोत्तर सारे शरीर में फैलता हुआ, सुषुम्ना पथ को खोलेगा। (2) सस्वर मन्त्रोच्चारण से मन एकाग्र और अन्तर्मुखी होगा। (3) हाथों की विशेष मुद्राओं के सहयोग से ग्रहण किया गया सूर्य तेज समस्त इन्द्रिय छिद्रों तक प्रसारित होगा। (वस्तुतः इस प्रक्रिया में प्रायः छः-सात मुद्रायें प्रयोग की जाती हैं किन्तु तीन मुद्रायें भी पूरा काम करेंगी)। सूर्य क्रिया के अन्त में 5-10 मिनट पेट के बल शवासन में लेट जायें। इससे सारा सूर्य तेज सुषुम्ना के अग्नि पथ में सहज गति करेगा; वहाँ विश्रान्ति लाभ करेगा।

संजीवनी क्रिया

खड़े होकर, लेटकर तथा बैठकर की जाने वाली तीन-तीन श्वास क्रियाओं का यह एक अद्भुत संगम है। जैसे जब एक बच्चा श्वास लेता है तो पैर के अँगूठे से लेकर मस्तक तक सारा शरीर जीवनदायी प्राणों के स्पन्दनों से

आपूरित होता है। बच्चे के शरीर में हो रही इस क्रिया को कोई दूसरा प्राणी भी स्पष्ट देख सकता है। संजीवनी क्रिया द्वारा ऐसा ही श्वास भरने-छोड़ने के पथ को शरीर के अन्दर विकसित किया जाता है। शरीर में नाभि मण्डल प्राणों का केन्द्र है। इसके आधार में ही, चार अँगुल नीचे अग्नि केन्द्र है। प्राण नाड़ियों से सुषुम्ना की अग्नि धारा में जाने का सीधा रास्ता खुलता है। संजीवनी क्रिया द्वारा भरा-पूरा श्वास ले सकने में रोगाणुओं को बलात् अग्नि कुण्ड में जाना ही पड़ेगा और वे निर्मूल होंगे। कोरोना वायरस का विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नामकरण ही Severe Acute Respiratory Syndrome Corona Virus -2 (SARS-COV-2) किया है अर्थात् श्वास के माध्यम से अन्तः प्रविष्ट वायरस। प्रथमतः श्वसन प्रणाली को ही दुष्प्रभावित करता है। क्योंकि उथला और अधूरा श्वास, जो सामान्यतः सभी प्राणियों का होता है, उसका शरीरस्थ अग्निमय तेजोकुण्ड के साथ कभी सीधा सम्बन्ध बनता ही नहीं। तेजोकुण्ड के साथ सीधा सम्बन्ध यदि किसी का बन जाये तो वह रोगाणुओं के झुण्ड में विचरण करता हुआ भी उनसे अप्रभावित रहेगा। सामान्यतः श्वास का वेग बाहर अधिक और अन्दर कम होता है। इससे बाहर फैले रोगाणुओं को अन्दर जाने का रास्ता तो मिलता है किन्तु शरीरस्थ अग्नि कुण्ड से उनकी दूरी भी बनी रहती है। इससे उन्हें पनपने का मौका मिलता है। अनेक जोर के व्यायामों के करने से भी बाहर तो श्वास का वेग विशेष बनता है किन्तु अन्तरस्थ अग्नि कुण्ड से सम्बन्ध पूरा बना नहीं रहता। इसीलिये व्यायामों से थकावट अधिक होती है।यदि श्वास का वेग शरीर के अन्दर विशेष हो जाये तो ये रोगाणु अग्नि कुण्ड में पड़कर दग्ध ही होंगे; उनके लिये और कोई रास्ता नहीं।

गन्तव्य विवाह यानि डेस्टिनेशन वेडिंग का अर्थ है अपने स्थायी निवास स्थान से दूर किसी पर्यटन स्थल या रोमांचक स्थल पर जाकर विवाह सम्पन्न करना। पिछले एक दशक से गंतव्य विवाह का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। ऐसे विवाह आयोजन में अतिथियों की संख्या भी सीमित हो जाती है। समाज में रहकर भी समाज को विवाह में शामिल नहीं कर पाते हैं। केवल कुछ खास रिश्तेदारों –दोस्तों के बीच ही विवाह कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं। अस्थायी स्थलों में विवाह बजट घट–बढ़ भी जाता है यदि ऐसी अनेकों बातों पर गौर करें, तो हम सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि आज के दौर में गंतव्य–विवाह का फैशन , समय की मांग, दिखावा या मजबूरी? समाजहित के इस ज्वलंत विषय पर आपसे आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं। आपके विचार समाज व समाज के संगठनों को कई राह दिखाएंगे। आईये जानें, इस स्तम्भ की प्रभारी मालेगांव निवासी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

क्या समय की मांग है डेस्टिनेशन वेडिंग

लाभ और हानि दोनों ही पक्ष

अपने स्थायी निवास स्थान से दूर किसी पर्यटन स्थल या रोमांचक स्थल पर जाकर विवाह-सम्पन्न करने का प्रचलन दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। सिक्के के दो पहलूओं की तरह ही गंतव्य विवाह आयोजन के भी दो पहलू नजर आते हैं । गंतव्य विवाह में अतिथियों की संख्या सीमित हो जाती है, हर जान-पहचान वाले को इसमें आमंत्रित नहीं किया जा सकता जैसा कि स्थानीय विवाह आयोजनों में होता है । सिर्फ खास दोस्त और निकटतम रिश्तेदार ही विवाह में आमंत्रित होते हैं । अनजान और नए स्थान पर जाकर विवाह करने से विवाह के दोनों पक्ष वैवाहिक जरूरतों को पूरा करने में परेशान हो जाते हैं इसलिए इवेंट मैनेजर की जरूरत होती ही है। इससे इवेंट मैनेजमेंट व्यवसाय फलीभूत होता है और आयोजनकर्ता की जेबें प्रभावित होती हैं। चूंकि स्थायी निवास पर विवाह होने पर आयोजनकर्ता की जिम्मेदारी बढ़ जाती है , वह आगंतुकों को अपना समय नहीं दे पाता और ना ही स्वयं विवाह का लुफ्त उठा पाता है। पर अगर गंतव्य स्थल पर विवाह हो तो सब काम इवेंट मैनेजर को सौंपकर वह निश्चिंतता के साथ वैवाहिक कार्यक्रमों का हिस्सा बन सकता है । नए स्थान पर अतिथिगण आने के लिए अधिक उत्साहित रहते हैं , गंतव्य स्थल पर रिश्तेदारों के साथ दो-तीन दिन तक साथ रहकर अपना पूरा समय विवाह कार्यक्रमों में ही देते हैं । एक-दूजे के साथ अच्छा समय बिताते हैं, जो आज की व्यस्त दिनचर्या में संभव नहीं होता है । साथ ही शादी समारोह के बीच वहां के दर्शनीय स्थल और सैर-सपाटे का भी आंनद उठा लेते हैं ।

देखा जाये तो वर्षों से हम जहां रहते हैं, वहां के समाज और पहचान वाले स्थानीय लोगों को विवाह में शामिल ना करना भी तो उचित नहीं है ना। इस बहाने ही तो हमें समाज को अपनी खुशियों में शामिल करने और खिलाने-पिलाने का अवसर मिलता है । उच्च स्तर के परिवार तो गंतव्य स्थल पर विवाह कर एक रिसेप्शन अपने स्थायी शहर में भी दे देते हैं, पर हर स्तर के लोगों के लिए यह संभव नहीं होता है । गंतव्य विवाह के बढ़ते चलन से मध्यम स्तर के परिवारों में आर्थिक परेशानी आ जाती है क्यूंकि ना चाहते हुए भी वो फैशन की होड़ का हिस्सा बन जाते हैं । अभी कुछ समय पहले ही एक बात सामने आई कि जिस शहर/गांव ने अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा द्वारा लागू आचार-संहिताओं का पालन करने का निर्णय लिया है, वहाँ के सम्पन्न परिवार अपनी मनमर्जी से विवाह कार्यक्रमों को करने के लिए गंतव्य स्थल पर विवाह करना चाहते हैं । विचार करें यह आचार-संहिता का उल्लंघन करना माना जायेगा या नहीं ?

सुमिता मूंधड़ा, मालेगांव, (नासिक)

डेस्टिवेशन वेडिंग उचित नहीं

मेरे विचार से गंतव्य शादी समारोह सामाजिक हित में सही नहीं है। कारण है गंतव्य शादी में नजदीकी रिश्तेदारों को अवॉइड किया जाता है क्योंकि इसमें सदस्यों की संख्या सीमित रखनी होती है एवं उसके स्थान पर आप व्यावसायिक रूप से जुड़े लोगों को महत्त्व देते है। गंतव्य शादी में आप जिन रिश्तेदारों एवं दोस्तों को शादी में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित करते हैं वे लोग भी अधिकांशतः गंतव्य शादी में सम्मिलित होने को अवाइड करते हैं। कारण उन्हें काफी रुपए खर्च करके उस स्थान पर पहुंचने का इंतजाम करना होता है। तीसरा कारण है गंतव्य शादियों में पारंपरिक रीति रिवाजों को नहीं निभा कर इसे एक मनोरंजन का साधन बनाते हुए पूल पार्टी, गेम्स, डांस आदि चीजों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। मेरे नजर में गंतव्य शादी सिर्फ सेलफिशनेस का एक उदाहरण है जो कि सामाजिक हित में सही कदम नहीं है। गंतव्य शादियों के बाद रिसेप्शन देने का भी प्रचलन है। अगर आपको खर्चा ही करना है तो सारे समाज के सामने क्यों ना पारंपरिक शादियां की जाए।

विनीता गग्गड, नैंनवा रोड, बूंदी (राज.)

दिखावा तो है पर परेशानी नहीं

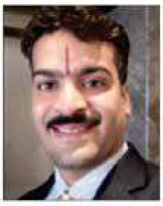

प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि ये भी एक और बहाना है दिखावे का और अकारण अपव्यय का। बस किसी को ऐसा करते देख लिया और लगे नकल करने। एक के बाद एक सभी को डेस्टिनेशन वेडिंग का चस्का लग गया है। इसके लिए जाने कितना अतिरिक्त नियोजन और निवेश भी करना पड़ता है। जाने कितने स्थानों पर विचार किया जाता है और व्यवस्था के लिए अतिरिक्त श्रम भी। इसके कारण विवाह समारोह में आने वाले परिजनों की संख्या अनायास ही कम हो जाती है। समय और धन में व्यय को देखते हुए कई लोग इस आयोजन का भाग नहीं बन पाते हैं और कुछ को बुलाया ही नहीं जाता है। फिर अगले ही पल विचार आता है कि क्या डेस्टिनेशन वेडिंग के इतर हम उन विवाहों में सम्मिलित नहीं होते हैं जो कि अन्यत्र सुदूर स्थान पर आयोजित हों? क्या बारातें लम्बी यात्राएँ कर के विवाह स्थल तक नहीं पहुँचा करती हैं? क्या सभी लोगों के परिजन एक-दूसरे से निकट ही रहते है? क्या हम अपनी इच्छा से सपरिवार विविध स्थानों पर भ्रमण करने नहीं जाते हैं? तो फिर अपने निवास के निकट आयोजन हो या डेस्टिनेशन वेडिंग इससे क्या अन्तर उत्पन्न होता है? हाँ समय की मांग जैसा तो इसमें कुछ भी नहीं है। ये तो अपने-अपने सामर्थ्य और रूचि का विषय है। इसी बहाने सभी परिजनों को एक नए स्थान का भ्रमण करने का भी अवसर प्राप्त हो जाता है। मेरे अनुभव से तो ये सभी व्यवस्थाएँ भी विवाह का आयोजक परिवार ही करता है। मुझे नहीं लगता कि डेस्टिनेशन वेडिंग के कारण कम परिजनों को निमन्त्रण दिये जाते है।

प्रतीक 'भारत' पलोड़ (दर्पण), बैंगलुरू

रीति रिवाज ही इससे खतरे में

कुछ समय पहले एक विवाह में सम्मिलित होने का संयोग बना। विवाह उदयपुर के एक बड़े रिसोर्ट में था। कहने का मतलब है कि डेस्टिनेशन वेडिंग ही था। सुबह हल्दी का कार्यक्रम था। जल्दी से तैयार होकर वहाँ पहुंची और सबके साथ बैठकर दुल्हन को हल्दी लगते देखने लगी। इतने में मेरी नजर वहाँ कोने में बैठी बूढ़ी काकी पर पड़ी, जो हल्दी के गीत गा रही थीं। ना तो कोई उनको सुन रहा था, ना कोई समझने का प्रयास कर रहा था कि उन गीतों का क्या महत्व है? कुछ ही देर में जोर का बैंड बजा और फिल्मी गाने चालू हो गये। दुल्हन को लेकर सभी पूल में उतर गये और नाचने लगे। उस दिन समझ आया कि यदि यही स्थिति रही तो हमारे रिवाज विलुप्त हो जायेंगे और हम पूरे विदेशी बन जाएंगे। विवाह का गन्तव्य जितना विशाल होता है, कपड़ों की परिकल्पनायें भी उतना ही भव्य रूप धारण कर लेती है। मेजबान से लेकर मेहमान, सभी एक दिन में करीब 5 कपड़े तो बदल ही लेते हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि हम इन दिखावों के चक्कर में कितना फिजूल खर्च कर रहे हैं। साथ ही पारिवारिक मेल मिलाप की जगह ज्यादातर समय तो हम अपने आलीशान होटल के कमरों में ही निकाल देते हैं। इन सभी व्यवस्थाओं में सबसे ज्यादा समझौता करने वाला होता है, हमारे समाज का सामान्य वर्ग। ऐसे विवाह में यदि वो अतिथि बनकर भी जायें तो वहाँ के स्तर से अपना वर्ग मिलाते हुए उनकी जेबें खाली हो जाती हैं। गन्तव्य विवाह में हमारे अतिथियों की सूची बड़ी ही संक्षिप्त सी होती है। ऐसे आयोजन का क्या मतलब जब हमारे अपने शुभचिंतक ही पीछे छूट जायें? ऐसे विवाह में सभी कार्य मस्ती में होते हैं जिसके कारण रीति रिवाज पीछे छूटते जा रहे हैं। ये एक ज्वलन्तशील मुद्दा है, जिस पर हमें ध्यान देना होगा, नहीं तो हम अपनी पौराणिक संस्कृति और सामाजिक जुड़ाव को तो त्याग ही रहे हैं, साथ-साथ अपनी जेबें भी ढीली करते जा रहे हैं।

गुंजन अक्षयसिंह मोहता, हिंगणघाट

अपनों की कमी एक समस्या

आधुनिक समाज में पिछले कई दशक से गंतव्य विवाह पद्धति का प्रचलन बढता जा रहा है। आजकल की युवा पीढ़ी विवाह को लेकर काफी उत्सुक रहती है। उन्हें लगता है कि उनका विवाह अपने निवास स्थान में न होकर किसी पर्यटन या रोमांचक स्थान पर हो। इसके कारण कुछ सीमित लोग ही अन्य स्थान पर जा सकते हैं, पूरा समाज नहीं जा सकता। सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह है कि अन्य जगह मोटी रकम वसूल करते हैं जिससे लोग पैसा बहाने को मजबूर हो जाते हैं। एक तरफ जहाँ विवाह कम खर्च और पूरे समाज के लोगों के साथ होते हैं, वही दूसरी तरफ ये आजकल अधिक खर्च और सीमित लोगों के साथ होने लग गये हैं। गंतव्य विवाह आज के समय की मांग और फैशन के हिसाब से लोगों की आवश्यकता बन गया है, इसके लिए हम कुछ फिजूल खर्च जैसे-आवश्यकता से अधिक व्यंजनों की संख्या में कमी, प्री-वैडिंग जैसे खर्चों पर रोक लगा कर इसमें सुधार किया जा सकता है।

आरती बाहेती, जयपुर

समय के साथ समाज का साथ भी जरूरी

वर्तमान में डेस्टिनेशन वेडिंग के बारे में आप हम और सभी लोग जानते हैं। एक ऐसा विवाह समारोह जो कि स्वयं के स्थायी निवास स्थान से परे या किसी अन्य स्थान जैसे पर्यटन स्थल या रोमांचक स्थल पर जाकर संपन्न किया जाता है। इसके दो ही कारण हो सकते हैं, पहला जिसके अंतर्गत वर पक्ष और वधु पक्ष के सम्बंध दूर देश से होने से भी दोनों पक्षों के मध्य का कोई विशेष स्थान प्रबंध करना और सही बजट के हिसाब से एक ही स्थान पर दोनों पक्षों के विचारों से ही विवाह संपन्न कराना होता है। यह एक मजबूरी भी है और जरूरत भी। दूसरे नजरिये से देखा जाये तो वर्तमान में डेस्टिनेशन वेडिंग समय की मांग के साथ-साथ फैशन भी बन गई है। आज की युवा पीढ़ी द्वारा विवाह में कुछ नया करने व खासकर यादों को यादगार बनाने को महत्व दिया जाता है। जैसे कि वर-वधु चाहें उसी अंदाज में विवाह थीम रखी जाती है। परंतु इस प्रकार का विवाह कुछ खास रिश्तेदारों और दोस्तों के मध्य ही समाज से दूर संपन्न कराया जाता है। बहुत से अतिथि तो अन्य स्थान या दूरी और समय कम होने के कारण ऐसे विवाह में शामिल ही नहीं हो पाते हैं। याद रखें समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है परंतु साथ-साथ समाज को भी लेकर चलना आवश्यक है।

दीपिका लड्ढा

रीति-रिवाजों से मुंह मोड़ता युवा

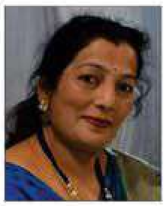

समय की मांग एक अच्छा विकल्प है हमारी परम्पराओं, रीति-रिवाजों और हमारे संस्कारों से मुंह मोडने का। समय की आड़ लेकर समाज क्या था और क्या हो गया? हम क्या थे और क्या हो गए? इसी के अंतर्गत एक प्रचलन शुरू हुआ, लड़की वालों का लड़के वालों के गंतव्य स्थान पर जाकर शादी करना, जो दो परिवार अपनी-अपनी सुविधा को देखते हुए किया करते थे। इस प्रचलन ने एक नया ही प्रारूप ले लिया, ना ही लड़के वालों ना ही लड़की वालों का शहर एक अन्यत्र स्थान को ही चुना जाने लगा, नाम दिया "डेस्टिनेशन वेडिंग"। चुनिंदा रिश्तेदारों को ही विवाह में शामिल किया जा रहा था, जिनकी संख्या सीमित हुआ करती थी। विगत सात से दस सालों में यही वेडिंग जोधपुर, गोवा, जयपुर, पुरी, पुष्कर,

वृंदावन, उदयपुर, माउंट आबू, उज्जैन आदि स्थानों से करने की बातें सामने आ रही हैं। जहां तक स्थानों के नाम हैं, सभी बहुत सुंदर और दर्शनीय है और यहां जाकर महंगे-महंगे होटल, रिसोर्ट और वेडिंग प्लानर में होने वाले खर्च को भी हम नजर अंदाज नहीं कर सकते। आज के समय में एक दो ही बच्चों का होना और उस पर भी उनकी शादियां अन्यत्र स्थान से करना, इस तरह तो हम समाज से कट ही रहे हैं। जहां हम इतने सालों साल से रहते आ रहे हैं क्या हमें उस समाज के साथ अपनी खुशी साझा नहीं करनी चाहिए। यह सब एक तरह का दिखावा ही तो है। ना ही यह समय की मांग है ना ही मजबूरी। इस विषय पर हमें गहराई से सोचना चाहिए और सीमाएं भी तय करनी चाहिए। जिस तरह समाज में सीमित व्यंजन एवं झूठा ना छोड़ने पर अंकुश लगाया जा रहा है उसी तरह से हम इस विषय पर भी अपनी सीमा तय कर सकते हैं।

ज्योति नवल मालानी, इटारसी

000

डेस्टिनेशन शादी यदि अच्छे उद्देश्य को लेकर हो रही है, तो वाजिब है। मान लीजिए दोनों परिवार से 20-25 लोग जाकर ही कम खर्च और कम दिखावे में शादी करते हैं, तो यह उचित है। पर ऐसा हो नहीं रहा है। बाहर से की जाने वाली शादी दिखावे और प्रदर्शन का माध्यम बन गई है। फला जगह से फला रिसोर्ट से शादी वर और वधु पक्ष के अहम तुष्टि का माध्यम बन गई हैं। बाहर से की जाने वाली शादियों में मेहमानों की संख्या जरूर सीमित हो रही है, पर पैसा असीमित खर्च हो रहा है। बड़े-बड़े शहर और महंगी-महंगी होटलों ने शादी का स्वरूप बदल कर रख दिया है। पहले शादी में आए मेहमान व्यक्ति की बड़ी रिश्तेदारी का परिचय देते थे। अब बाहर से हो रही शादियों में किया जाने वाला बेहिसाब खर्च हल्दी मेहंदी, महिला संगीत, रिसेप्शन का तामझाम व्यक्ति के बड़प्पन का परिचय देने लगा है। कहीं-कहीं तो यह भी देखने में आ रहा है कि दोनों पक्षों की रजामंदी से खर्चे आपस में बांट लिए जाते हैं, पर शादी के बाद जब बजट बढ़ जाता है तो दोनों पक्षों के बीच तू तू मैं मैं की नौबत आ जाती है। वधु के वैवाहिक जीवन की शुरुआत ही मनमुटाव से शुरू होती है और यदि इन स्थितियों को शुरू से ही ना संभाला जाएं तो बात बिगड़ने तक की नौबत आ जाती है। बाहर से हो रही शादियां रिश्तेदारी और पहचान को कम कर रही हैं और पैसे का मान बढ़ा रही हैं। आखिर यह कहां तक उचित है कि मानव का मान कम हो और मनी का मान बढ़ जाए।

सुनिता मल्ल, आमगांव (महाराष्ट्र)

खुशियों के रंग अपनों के संग

डेस्टिनेशन वेडिंग व्यस्ततम जीवनशैली की मांग है। आाज मांगलिक अवसर ही एक ऐसा खुशनुमा आयोजन होता है, जहां सभी नजदीकी रिश्तेदारों को एक साथ सम्मिलित होने का अवसर मिलता है। शगुन की इन घड़ियों का अधिक उत्साह करीबी रिश्तेदारों और पारिवारिक सदस्यों के अंर्तमन में ही अधिक होता है। दूर-दराज के रिश्तेदार और समाजवासियों को विशेष दिलचस्पी नहीं होती वह तो मात्र औपचारिकता निभाते हैं। वैसे स्थानीय परिचितों और समाजवासियों के लिए विवाह की किसी एक रस्म का आयोजन स्थानिक जगह होता ही है इसलिए उन्हें अनदेखा नहीं किया जाता। वर्तमान दौर में कार्यभार का दायित्व निर्वहन करने हेतु कोई आगे नहीं आता, ऐसे में रिश्तेदार, समाजसेवी, वर-वधु पक्ष, पूजा-पाठ में लगने वाला समय और अलग-अलग रस्में इन्हें सुचारू रूप से संभालना आसान नहीं होता। डेस्टिनेशन वेडिंग में रिश्मेदारों की संख्या सीमित होती है। दूर-दूर से आये हमारे रिश्तेदारों को समय दें उनकी आवभगत में कहीं कमी न रहे यह आयोजकों की चाहत रहती है। हम अपनी आर्थिक क्षमता देखते हुए जगह का चुनाव कर सकते हैं।

राजश्री सुरेश राठी, अकोला।

अधिकांशतः तो है मात्र दिखावा

डेस्टिनेशन वेडिंग समय की मांग नहीं, अपितु दिखावा व फैशन और फिजूलखर्ची ज्यादा है। जिंदगी भर हम जिस समाज के साथ रहते हैं, जिससे हमारी पहचान है, उन सब से दूर अपनी खुशियों के पल जो जीवन में बार-बार नहीं आते, बस चंद रिश्तेदारों व दोस्तों के साथ बिता देते हैं। शादी की खुशियों को भी हमने अपने आप में समेट सा लिया है। आजकल हमारे बच्चे पढ़ते बाहर, नौकरियों के लिए बाहर, फिर रहा सहा शादियां भी बाहर करके, रवाना हो जाते हैं और अपने समाज की जड़ों से पूरी तरह अलग हो जाते हैं। इन सब बातों के साथ डेस्टिनेशन वेडिंग में हवाई जहाज व ट्रेनों की टिकटों पर और रहने खाने की व्यवस्था पर अनाप-शनाप खर्चा होता है। बाहर जाकर शादी करने में इवेंट वालों को काम सौंपा जाता है, जिसके एवज में वे लाखों तो कमाते ही है, साथ में अपनेपन का अभाव भी रहता है, बस दिखावा ही सर्वोपरि रहता है। वहीं अपने शहर में शादी करने पर समाज और परिवार के लोग आपस में मिलजुल कर उत्साह व अपनेपन के साथ बखूबी काम करते हैं और सालों तक एक दूसरे को याद करते हैं। अगर हम कोई समस्या के तहत शादी बाहर जाकर करते हैं तो ठीक है। अपितु इस तरह की शादियां मात्र दिखावा और फैशन के तहत ही आती हैं।

रेखा राजेश लखोटिया, गोरेपेठ नागपुर

विवाह की रस्मों को यादगार बनाने का विकल्प

डेस्टिनेशन वेडिंग - शादी का नया अंदाज़ और साथ में घूमना-फिरना। विवाह खुबसूरत रस्मों के साथ यादगार बनाने के लिए डेस्टिनेशन वेडिंग बहुत ही सुंदर विकल्प है, जिसे आजकल बहुत पसंद किया जाने लगा है। पहले विवाह का आयोजन और उत्सव कई-कई दिनों तक चलता था, घर के लोगों के पास समय का भी अभाव नहीं था। ऐसे में अपने निवास स्थान या कोई धर्मशाला में विवाह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे, परन्तु अब अपने ही परिवार के सदस्य शिक्षा, नौकरी की वज़ह से अलग- अलग शहरों में रहते हैं और साथ ही अब दो या तीन दिन में ही विवाह के सारे रीति रिवाजों के साथ वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं। ऐसे में प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर लोकेशन पर विवाह के कार्यक्रम रखे जाते हैं, जिससे कि परिवार के लोग एक ही जगह पर इकट्ठे होकर एक साथ मिलकर विवाह उत्सव को उमंग और भरपूर जोश से मना सकें। शहर के बीचों- बीच जगह की कमी, यातायात की समस्या एवं जो रिश्तेदार आते हैं, वो भी अपने व्यक्तिगत कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं। ऐसे में विवाह का पूर्णतः लुत्फ नहीं उठा पाते हैं और आयोजनकर्ता भी निराश होता है। इसलिए शहर की भीड़-भाड़ से दूर डेस्टिनेशन वेडिंग ज्यादा प्रचलित होने लगा है। दूसरा, आर्थिक दृष्टिकोण से भी इस तरह के विवाह समारोह किफायती होते हैं क्योंकि वर और वधु पक्ष एक ही जगह पर एकत्रित होकर शादी के आयोजन में होने वाले खर्च को आधा-आधा कर लेते हैं, इससे दोनों पक्षों को लाभ रहता है। तीसरा, विवाह में मेहमानों को निमंत्रण देने की संख्या भी सीमित रहती है, जिससे अनावश्यक धन की बर्बादी नहीं होती है।

मधु भूतड़ा, जयपुर

आपणी बोली

कोरोना वायरस

- स्वाति जैसलमेरिया
जोधपुर

खम्मा घणी सा हुक्म इण समय लगभग पूरी दुनिया में कोहराम मचियोड़ो है,जी हां, कोरोना वायरस पर बात ही कर रिया हां, हुक्म चीन में वुहान शहर है जठे सूं सबसे पेहलो कोरोना वायरस सूं प्रभावित शख्स मिळीयो पहलो मरीज या यूं केहवो कि जिका भी शुरुआती मरीज मिळीया वे वुहान मीट मार्केट सूं आया। वुहान रॉ मीट मार्केट में ऐड़ो कांई थो? कठे सूं आयो वो वायरस..? आखिर कांई थो वो इफेक्टिव सोर्स जिणसूं यो वायरस इंसानों में दाखिल हुयौ..? डब्लूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संघठन) ने खुद इन्हें वर्ल्ड इंटरनेशल इमरजेंसी घोषित करनो पड़ियो। एक मार्मिक घटना जिने आपा समझा कोरोना वायरस ने प्रकृति रो बदलो कह सकां। जिण बाजार सूं कोरोना वायरस फेलियो वठे एक सौ बारह किस्म रा जानवर बिके। वो केहवे न हुक्म जैसे को तैसा। इंसान ने प्रकृति के साथ बड़ों खिलवाड़ कियो। भगवान मानव जाति ने ही वो मौको दियो कि प्रकृति रो विस्तार करें ...मानव रे अकॉर्डिंग ही सारा कुछ तय कियो। मौसम बणाया .. प्रकृति बनाई और पूरी कोशिश करी ताकि इंसान आपरी बस्तियां बसा सकें। आज इन्सान पृथ्वी पर पाया जावण वाला शक्तिशाली प्रजातियों में सबसूं ऊपर गिणीयो जावे क्योंकि मानव रे कने दिमाग है। पर आखिर किकर हुयो लाखो लोगो रो नाश..... ? हुक्म क्योंकि प्रकृति रे वास्ते ईश्वर ने मानव चुनियो कि पृथ्वी ने आगे ले जा सकें और अठे री बाकी प्रजातियों ने छत्रछाया में पाल सके, सभी जीव जंतु जानवरों रो भी ध्यान राखे। लेकिन आपा मानव कांई कियों ..?

आपा सिर्फ प्रकृति सूं लियो कभी कुछ दियो नहीं। सिर्फ प्रकृति रो दोहन या उनो सिर्फ इस्तेमाल कियो उन्हें स्पॉट(दागदार) कियो। प्रकृति रे संरक्षण करण री नहीं सोची या यूँ कह सकां कि सौ लोगों में दो इंसान ध्यान रखण वाला मिळैगा जो सिर्फ प्रकृति का दोहन करने के बारे में सोचे। जरा सोचो हुक्म किती बड़ी विडंबना है कि जिण जानवरों ने हासिल चीनी लोग दौड़ा दौड़ा ने मारियो उन्हें बाजार में निलाम कियो। ज़िन्दा बेचियों और हद सूं ज्यादा खायो आज उण जानवरों रे अंदर री बीमारी इंसानों में घर करण लागी... और यों फैलाव हुक्म अपने आप हुयो है वो बीमारी वो विषाणु जो कदैई सिर्फ जानवरों ने प्रभावित कर सकता थी अब इंसानों रे शरीरों में अपना घर बणा चुकी है मानों बिल्कुल प्रकृति बदलो निकाल रही है। प्रकृति ने जो मानवों रे वास्ते जगह दी थी कांई वो उन्हें छीननों चाह रही थी कांई कोरोना वायरस जैड़ा कोई वायरस आवण वाला भविष्य में मानव जाति रे अंत री शुरुआत बनेला.... तो हुक्म इनी शुरुवात हुगी... चीन के वुहान सूं अब तक दुनियाभर में करीब लाखों लोग संक्रमित हो चुकिया हैं। हज़ारों सूं ज्यादा री मौत हो चुकी है।

हुक्म वुहान शहर में इंसानों रे खावन रे वास्ते हर प्रकार रा जानवर मिले और शायद इन्हीं जानवरों में सूं किसी एक रे अंदर वो कोरोना वायरस थो जो इंसानों रे अंदर आ गयो। वो शहर जठे जानवरों रो बाजार लागे या सिर्फ मुर्गा मछलियां बकरे रो मांस नहीं मिले या उन सभी जानवरों रो मांस मिले जिन्हें इंसान खा सके उण बाजार में करीबी 112 प्रकार के जीवित जीव जंतुओं का मांस व अंग बिके। इने अलावा मरयोड़ा जानवर अलग सूं बिके ...सोच ने देखो हुक्म मरे जानवरों री भी मंडी लागे दुर्लभ जीवों ने भी खावे। क्या इन जानवरों ने खाणे सूं बीमारी इंसानों में ट्रांसफर नहीं हूँ जावे.? आपने वुहान रे मार्केट चौराहे सूं बहुत सारे चीन में पाया जावण वाला चमगादड़, सुअर, गाय, भैंस, लोमड़ी, कुआला, कुत्ता, मोर, शाही भेड़िया रा बच्चा, बत्तख, खरगोश, शुतुरमुर्ग, कछुआ, हिरण, साँप, संगरूर, मगरमच्छ, बिच्छू, ऊँट, घड़ियाल, गधा, मेंढक, चील, याक रो सिर ...कीड़ा-मकोड़ा समेत हर प्रकार रे जीवों रो जिंदा मांस और मरो हुओ मांस मिले है। आपने उठे मेंढकों सूं भरो बाजार भी मिले। हुक्म ये खावण लायक जीव है..? बाहर सूं आणे वाले लोगों रे वास्ते बाजार में भीड़ भाड़ और गंदगी भरी है कि वठे चलनो फिरनो ही दूभर है। कोरोना वायरस फैलने रे बाद सूं यो बाजार अब बंद है क्योंकि इन्हें ही बीमारी री जड़ मान रिया है। कोरोना वायरस रे फैलण सूं पेहला इण बाजार में दुनिया भर रे जीवों ने खरीदण रे वास्ते लोग आवता था लेकिन अब सन्नाटो फैलियोडों है। वठे रे जानवर बाजार में इन सभी जानवरों ने एक साथ बेचो जावणो, सामने ही काटणो उणमें सूं निकळन वाळो खून जीव जंतुओं पर उड़ती मक्खियां बदबू गंदगी ...मछलियों के साथे सांप राखे किलो रे भाव मेंढक मिले, चीनी लोगा ने जिन अंग की जरूरत हुवे उन्ही अंग ने खरीदे, जिन अंगों री खरीद नहीं हुवे उनो कचरा कई घंटों तक उन्ही बाजार में पड़ियों रेहवे। इण माँसाहारी कचरे री वजह सूं कई बीमारियां फैलन रो खतरो रेहवे और आखिरकार यो हुयो भी .... गंदगी रे बीच बिक रिया एक जानवर सूं पेली साँप में या फिर सांप खावण री वजह सूं चीनी इंसान में गया हुवेला और अब यह पूरी दुनिया रे कई देशों में फैल चुकियो है ।

हुक्म आज प्रकृति उठ खड़ी हुई हैं और शायद वह मानवजाति सूं वो सब चीज वसूलनो चाह रही है जिना फायदा प्रकृति अब तक इंसानों ने दिया था और शायद कोरोना वायरस वाणे विनाश री ही देन है। प्रकृति ने पूरो की पुरो खेल चेंज कर दियो पूरो को पूरो गेम बदल कर रख दियो और विश्व परिदृश्य में अब मानवों ने उन जीवों सूं खतरा जिन्हें नंगी आँखों सूं देखियो भी नहीं जा सके हुक्म...

अभी भी लोग नहीं जाग्या और यों नहीं स्वीकार कियो कि सिर्फ मानवों रे वास्ते पृथ्वी नहीं बनी है दूसरे जीव जंतुओं रो भी उतनो ही हक है जितो मानव रो इण पृथ्वी पर हक है तो बहुत देर हूँ जावेला... अगर मानव इण बात ने नहीं समझ पाया तो वो दिन दूर नहीं जब ऐड़ा ही वायरस धीरे धीरे करने मानव जाति ने ही समाप्त कर देवेला और एक दिन मानवजाति पूरी तरह सूं पृथ्वी सूं एक्सटेंड हूँ जावेला... विलुप्त हो जावेला और यो संदेश हर भारतीय और विदेशी ने मिलणो चहिजै जो देश में रह रिया है या बाहर भी... कहीं न कहीं प्रकृति ने सम्मान देणो ही पड़ेला ...कहीं न कहीं उण दूसरा जीव जंतुओं ने सम्मान देवणो ही पड़ेला जिण सम्मान रा वे भी बराबर रा हकदर है।

खुश रहें... खुश रखें...

हनुमानजी से सीखिए कहाँ बड़ा और कहाँ छोटा होना है

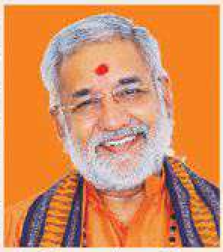

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

वर्तमान समय में आदमी यह भूल गया है कि कहां बड़ा होना और कहां छोटा होना है। समाज में कई लोग प्रतिष्ठित, मान्य और ख्यात होते हैं। काम-धाम के बाद घर आते हैं, तो इसकी अकड़ और ऐंठ लेकर आ जाते हैं। यहीं से परिवार के सदस्यों से झगड़ा हो जाता है। घर में, परिवार में परस्पर सम्मान का व्यवहार होना चाहिए। अपनी-अपनी जगह सभी का महत्व है।

कहां बड़ा होना और कहां छोटा यह एक कला है। हमारे हनुमानजी इसमें बहुत दक्ष हैं। सुंदरकांड के एक प्रसंग से हम सीख सकते हैं। अशोक वाटिका में हनुमानजी और सीताजी की चर्चा चल रही थी। वे सीताजी को धैर्य बंधा रहे थे किंतु सीताजी का आत्मविश्वास लौट नहीं रहा था।

हनुमानजी ने कहा, "माँ भरोसा रखें, प्रभु श्रीराम आएँगे और आपको ले जाएँगे। वैसे तो मैं आपको यहां से ले जा सकता हूँ किंतु श्रीराम की ऐसी आज्ञा नहीं है। वे वानरों के सहित आएँगे और राक्षसों का नाश करके आपको ले जाएँगे।" तब सीताजी ने कहा, "राक्षस बहुत बलवान हैं और वानर तुम्हारी तरह छोटे-छोट होंगे, इसलिए मुझे संदेह है।"

इतना सुनते ही हनुमानजी ने अपने शरीर को पर्वत के समान विशाल कर दिया। देखकर सीताजी के मन में विश्वास हो गया। हनुमानजी तत्काल छोटे हो गए। उन्हें लगा कि कहीं सीताजी यह नहीं समझ लें कि मैं अपनी बड़ाई कर रहा हूं।

अगली ही पंक्ति में हनुमानजी ने स्पष्ट किया-सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल, प्रभु प्रताप तें गुरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल। यानी हे माता सुनो, वानरों में बहुत बल-बुद्धि नहीं होती परंतु प्रभु के प्रताप से बहुत छोटा सर्प भी गरुड़ को खा सकता है। इस तरह जो लोग अपनी बड़ाई, श्रेष्ठता को परमात्मा से जोड़ देते हैं उन्हें अहंकार नहीं आता और उनकी परमात्मा से नजदीकी बढ़ जाती है।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'।
इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.
जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.
Rs. 150/-
डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है.
बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ...
इसी के सूत्र बताती है डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".
Rs. 120/-
डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -
संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
सांप दिखे तो काम टालें।
नल को पानी टपकता न छोड़ें।
... और भी बहुत कुछ तो फिर...
ऐसा क्यों?
aisa kyon
जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब
प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "ऐसा क्यों?" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन?
इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक
Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन
90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

बाजरे की खिचड़ी

बड़ी स्वादिष्ट बनती है और बहुत पौष्टिक भी होती है. इसे सर्दियों में खाया जाता है. तो क्यों ना आप भी ठंड के दिनों में मनमोहक सुगन्ध वाली बाजरे की खिचडी क़े स्वाद का मज़ा लें.

ज़रूरी सामग्रीः

बाजरे की मिगी-200 ग्राम मूंग की दाल-150 ग्राम घी-2 टेबल स्पून हींग-1 पिंच जीरा-1 छोटी चम्मच हरी मिर्च-2 (बारीक कतरी हुई) अदरक-1 इंच का लम्बा टुकड़ा (बारीक कतरा हुआ) हल्दी पाउडर - आधा छोटी चम्मच हरी मटर के दाने-1 छोटी कटोरी (यदि आप चाहें) नमक - स्वादानुसार हरा धनियां - 1 टेबिल स्पून

बनाने की विधिः

बाजरे को अच्छे से साफ़ कर लें. इसमें थोडा सा पानी डाल कर इसे गीला कर लें. अब बाजरे को खरल में डाल कर तब तक कूटें जब तक इसकी सारी भूसी निकल ना जाए. बाजरे को अच्छे से छान-फटक करते हुए इसकी सारी भूसी को अलग कर दें और बाजरे की मिगी को अलग कर लें. अब एक कूकर में घी डाल कर इसे गरम करें. गरम घी में हींग और जीरा डाल कर हल्का सा भूनें. हरी मिर्च, अदरक, हल्दी और मटर के दाने डालें और इन सबको 2 मिनट तक अच्छे से भून लें. तैयार किए मसाले में बाजरे की मिगी को धो कर डाल लें. इसे 2-3 मिनट लगातार चलाते हुए भून लें. दाल और बाजरे की कुल मात्रा का 4 गुना पानी लेकर कूकर में डाल लें और इसे बंद कर दें. जब कूकर में एक सीटी आ जाए तो आंच को धीमा कर दें और 5 मिनट तक खिचडी क़ो इसी तरह पकने दें.

5 मिनट के बाद गैस को बंद कर दीजिए. जब कूकर की भाप खत्म हो जाए तो इसका ढक्कन खोल लें. बाजरे की स्वादिष्ट खिचडी तैयार है. इसे बाउल में निकाल कर हरी धनिया डाल कर सजाएं. गरमा-गरम खिचडी का मज़ा दही,अचार या चटनी के साथ लें।

पुनम राठी, नागपुर
9970057423

ASHOK SOMANY

SOMANY IMPEX
Stone that stuns

ASHOK SOMANY

AAKASH SOMANY

M/s. ASHOK SOMANY & Co.

Mining of Natural Stone & TIles

Khol House, Circular Road, Rewari - 123401 (Hry) Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel. : 01274-225385, Mob. : 981245677, Res. : 01274-260088, 260048
Email : accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

SOMANY NATURAL STONES (I) Pvt. Ltd.

All Kind of Natural Stone & Tiles

Plot No.5, Delhi Rewari Road, Rewari-12340 1 (Hry)
Mobile : 9812345677, 9812028488
Email : mines@sonanyimpex.ind.in | somanyimpex@gmail.com

SOMANY IMPEX

Exporter of All Kind of Natural Stoen &Tiles

Khol House, Circular Road, Rewari-123401 (Hry), Unit-Khol Road, Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel.: 01274-225385, Mob. : 9812028488, 9215689102
Email: accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

DEVVRAT OVERSEASE

All Kind of Natural Stone & Tiles

Vil. Mehtawas, Mehtawas Road (Raj), Mobile : 9812345677, 9812025385
Email: mines@sonanyimpex.ind.in | somanyimpex@gmail.com

SOMANY (P.G) INSTITUTE OF TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Running B.Tech & M.Techinfidderent Discilines of Engineering

Near Delhi-Jaipur Highway No. 8, Beside 3 km, From Rewari City, Rewari (Hry) Tel. 01274-261239, 261781
Fax: 01274-261239, Mob. 9541069998
Email : Info@sitmrewari.com | admin@sitmrewari.com | accounts@sitmrewari.com

Reaching 7500 villages, 9 million people.
Over 100 million Polio vaccinations.
5,000 medical camps / 20 hospitals:

1 million patients treated. 100,000 persons tested on 32 health parameters through Health Cubed. Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant. More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India.

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students. Mid-day meals provided to 74,000 children. Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland. Fostering the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas.

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets. 45,000 women empowered through 4500 SHGs. 200,000 farmers on board our agro-based training projects.

MODEL VILLAGES

We have adopted 300 villages for transformation into model villages. Of these over 90 villages have already reached the model village stature. And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spear-headed by Mrs. Rajashree Birla.

Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date -02 April, 2020

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/Srimaheshwaritimesmagazine
http://srimaheshwaritimes.blogspot.in